



# शरत्-साहित्य

( तीसरी भाग )

विराज वहू, वचपनकी कहानियाँ.

अनुवादक—

पं० रूपनारायण पाण्डेय

प्रकाशक

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड, बम्बई :

मूल्य : एक रुपया पचास तथा पैंता  
बूसरी बार  
नवम्बर, १९५७

प्रकाशक : नाथूराम गोेमी मीनेजिंग आइरेक्टर्स,  
हिन्दी ग्रन्थ-रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड हीराबाग, बम्बई १  
मुद्रक : श्रीमन्मोहन कपूर, ज्ञानमण्डल प्रिंटिंग, बाराणसी (बनारस) ५९१४-१४

## प्रकाशककी ओरसे

‘विराज बहू’ छप्प बाबूका छीसरा उपन्यास माना जाता है बा सन् १९१४ में प्रकाशित हुआ। इसके लगभग बीसह वर्ष पहले य ‘बड़ दीदी’ (बड़ी बहन) और ‘चन्द्रनाथ’ छिन्न चुके ये जो बहुत समस्तक पढ़ रहे और १९१३ और १९१६ में प्रकाशित हुए। इन्हीं रचनाओंसे साहित्य-बगलका ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ और मर्मज्ञ पाठकोंने अनुमान किया कि साहित्य-गमनमें एक प्रतिभाशाली नवजका उदय हो रहा है। इसके बाद जो छप्प बाबूने लगातार बीस वर्षतक उपन्यास कहानियों नाटक और निबन्धादि लिखकर संग्रहा साहित्यको एकसे एक बढ़कर उन्नत रखने समर्थ कर दिया, किन्तु हमारे पाठक अबतक काफ़ी परिचित हो चुके हैं।

विराज बहूके भी हिन्दीमें एकाधिक अनुवाद हो चुके हैं, फिर भी हम छात्रसाहित्यके प्रेमी पाठकोंके लिये यह छद्म और प्रामाणिक अनुवाद प्रकाशित कर रहे हैं। चरित्रहीनके समान वह भी य सम्मोहायणकी श्रेष्ठता किया हुआ है।

वक्तव्यकी कहानियों (छोटे केबल गल्प) सन् १९१८ में छप्प बाबूके स्वभावसके बाद प्रकाशित हुई थी। वे भी इस मागमें प्रकाशित हो रही हैं। परन्तु मूल पुस्तककी ७ कहानियोंमेंसे एक कहानी ‘कलकत्तेके बड़े दादा’को हमने छोड़ दिया है। क्योंकि वह भीकान्त प्रथम पर्तमें (पृ ७१ से ८१ तक) नाममात्रके हेर-फेरके साथ प्रकाशित हो चुकी है। एक ही पुस्तकग्रन्थमें उसकी पुनरावृत्ति उचित नहीं मानस हुई।



# विराज बहू

१

हुससी जिसेके सप्तमासमें नीकांवर और पीतांबर पहनकरती हो मार था। उस तरह मुझे बठाने कीर्तन करने, डोह बजाने और गाँवा पीनेमें नीकांवर बैठा का नहीं था। उसके ऊँचे पूरे गोरे शरीरमें असाधारण बल था। माँकमें जैसे उसकी पटीपत्तनमें प्रसिद्धि भी गंगावरके रूपमें वैसी ही बान्नामी भी थी। लेकिन छोटे माई पीतांबरकी प्रकृति बिलकुल भिन्न थी। वह ठिंगना और बुकड़ा-पसल था। किसीके पर गयी होनेकी लहर झुनकर ही घामके बाद ठठका शरीर न बाने बैसा होने लगता था। अपने माइकी तरह ऐसा मूल्य भी नहीं था और गंगावरके पस भी नहीं पटकता था। सनेरे ही ला-पीकर, बगलमें बहल दबाकर परते निकल जाता था और हुगावीकी कचहरीके पश्चिम ओरके एक पेड़के नीचे आठन बसा देता था। दिनभर बर्बिसी पिलकर जो कुछ कमाता था, वह घामके पड़े ही भर आकर अपने बसमें बन्द कर देता था। रातको परके छार, भिड़की बगीरह अपने हाथसे बन्द करता और पत्तीसे छिर-छिर बँब कर देता ठव सोता था।

आज सनेरे नीकांवर खंजीमंडपके एक ओर बैठ ठमका पी रहा था। इसी समय उसकी ऊँभारी बहन हरिमती चुपकेसे आकर पीठके पीछे छुन डककर बैठ गई और माइकी पीठमें मुँह छिपकर रोने लगी। नीकांवरने कुछ दीवाछके सवारे रत बिना और अंदाजसे एक हाथ बहनके सिरपर रखकर प्यारसे कहा—  
आज सनेरे-सनेरे तू रोसी क्यों है बहन ?

हरिमती मुँह रगड़कर माँकी पीठममें ओस लगाकर बोली—मार्मान मेर गलत मीड़ बिये हैं और जानी कहकर गाजी थी है।

नीलम्बर ईसकर बोला—अरे, तुझे कानी कहाँ है ? देखी तो ओंखें खलेपर ओ कानी कहाँ है, वह कानी है । किन्तु गाऊ क्यों मीढ़ दिये ?

हरिमतीने रोते-रोते कहा—यों ही !

“यों ही ! अच्छा अब, देखू तो—” कहकर हरिमतीका हाथ पकड़े हुए नीलम्बरने उसके भीतर जाकर पुकारा—विराज बहू !

बड़ी बड़का नाम बजरुजी है । जो कपड़ी अच्छागमें ठठका ब्याह हुआ था, उसके लथ कोय ठठ विराज बहू कहकर पुकारते हैं । अब उसकी अवस्था १९२ वर्षकी होगी । उसके मरनेके साबत बरी इस घरकी ग़रबी है । मर्यानी असाधारण सुन्दरी है । चार-पाँच साल पहले उसके एक पुत्र हुआ था, जो सीरमें ही मर गया । सबसे बड़ा नितान्तान है । वह खोरेपरमें काम कर रही थी । उसके पुकारनेपर चौकसे बाहर भाकर भाई-बहनको एक साथ दौलकर लक उठी । बोली—कलमुँही, ठस्टे नाकिस करने गई थी ?

नीलम्बरने कहा—क्यों न जाय ? तुमने उसे कानी कह दिया, जो सरासर झूठ है । लेकिन तुमने गाऊ क्यों मीढ़ दिये ?

विराजने कहा—इतनी कमी ही ग़र, सोकर उठी, न मुँह बोया, न बोटी बहली, मोछात्वमें फुलकर बछड़ा खोल दिया और मुँह बाये खड़ी बैलखी रही । आज एक बूँद दूध नहीं मिला । इसे पीटना चाहिए ।

नीलम्बरने कहा—यहाँ भी, नीलम्बरनीको आगेके यहाँ दूध खनेके लिए भेज देना चाहिए ।—अच्छा बहन तुने एकाएक बछड़ा क्यों खोल दिया ? यह काम तो वेरा नहीं है ।

हरिमती भाइके पीठे लड़ी थी । पीरते बोली—मिने समझा कि दूध हुआ था सुका है ।

“अब भीर किसी दिन ऐसा समझा तो ठीक कर हूँगी ।” कहकर विराज चौकमें जानेको हुई कि नीलम्बरने ईसकर कहा—इस उमरमें तुमने मी एक दिन मोचा वालू लवा उड़ा दिया था । पिछेकी पिछेकी पर समझकर खोल दी थी कि पिछेके भीतरसे तोड़ा बड़ नहीं लकटा । पाद है !

यह झूठकर रानी हो गई । हँसकर बोली—पाद है । अगर तब मैं इतनी रानी नहीं थी, हमसे छोटी थी । जो बहकर काम करने पड़ी ग़र ।

हरिमर्तने कहा—जब न मेरा बागम पटककर देते, आम पकने द्यो है या नहीं ।

नीलावरने कहा—अच्छ थक रहन ।

इसी बीचमें लोकरने आकर कहा—नयन बाबा बैठे हैं ।

नीलावरने कुछ अप्रतिम होकर धीमे स्वरमें कहा—इस बीच ही आकर बैठ गये ?

विराजने चौंकेके मीतरसे मुन किया । उसने तेजीसे निकटकर, विस्काकर कहा—बाबासे जानेके लिए कह दे । फिर स्वामीकी ओर दृष्ट करके कहा—अगर तुम खरैसे ही यह सब पीना शुरू कर होतो तब मैं फिर पटककर द्यन दे दूंगी । आजकल यह सब क्या हो रहा है ?

नीलावर कुछ नहीं बोला सुनबाप रहनका हाथ पकड़कर सिद्धकीके ठारसे बगियामें चला गया ।

इस बागमें एक छत्रसे तरस्वती नदीकी एक पतली चारा मुमूर्षु गया-बाबीकी धीप चौंछकी तरह बाहर आ रही थी । उसमें सेवार मरा हुआ था । बीच बीचमें गोबके ओगोंने पानीके लिए कुइमों खोद रली थीं । उसीके आसपास सेवारसे कुछ उसके ठकमें खुदी हुई छीपें स्वच्छ पानीके मीतरठे अस्स्य माजिस्योंकी तरह भूपमें बमक रही थीं । किनारेपर एक काका फर पतकीही समाधिलूपकी दीवारसे किसी अतीत दिनको बपाके ठेक बहाबके कारण सिसककर माहीं आ पड़ा था । इस मरकी बहुतों रोज धामकी उसी परवरके एक सिरेपर उस मृत आत्माके लिए पीपक अद्याकर रल जाती थीं । उसी परपरके एक किनारे रहनका हाथ पकड़े हुए नीलावर आकर बैठ गया । नदीके दोनों किनारोंपर बड़े-बड़े आमके बाग और बौतके शाड़ थे । दो-एक बहुत पुराने पीपक और काबके पेड़ नदीके पानीकी सतहतक छककर अपनी छात्ररें फैलाये हुए थे । इन बाबोंके उपर न जाने कितने समयसे कितने ही पक्षियोंने अपने पीतछे बनाये हैं कितने बम्बोंको पक-पोस कर बढ़ा किया है, कितने ही पक लाये और कितने ही गीत गाये हैं । उन्हींकी छमामें दोनों मार-बहन कुछ देर मुफके बैठ रहे ।

एकएक हरिमर्ती अपने मार्गकी गोयके पास और मी सिसक आकर



बोली—अच्छा मैसा मामी तुमको बोझ ठाकुर<sup>१</sup> कहकर क्यों पुकारती है ?

अपने गलेकी तुलसीकी माख्य दिखाकर, ईसकर, नीकावरने कहा—मैं  
बोझ का हूँ, इसीसे कहती है ।

हरिमतीको विचारात नहीं हुआ । उसने कहा—बाद, तुम क्यों बोझ  
तो ? वे तो भील मँगते हैं । अच्छा याद ये भील क्यों मँगते हैं ?

नीकावरने कहा—उनके पास नहीं है, इससे मँगते हैं ।

हरिमतीने माईके मुँहकी ओर देखते हुए पूछा—उनके कुछ नहीं है ?  
काम नहीं पेलार नहीं, धानकी कोठार नहीं—कुछ भी नहीं ?

नीकावरने प्यारसे बहनके बाक भर दिखाकर कहा—कुछ भी नहीं  
है । बोकम होनेपर अपने पास कुछ भी न रखना चाहिए ।

हरिमतीने कहा—तो फिर सभी लोग उनको बोझा-बोझा क्यों नहीं देते ?  
नीकावरने कहा—उरे बाबा ने ही उन्हें क्या दिया है ?

हरिमतीने कहा—तो क्यों नहीं देते बाबा ? हमारे तो इतना सब है ।

नीकावरने ईसकर कहा—तब भी तेरा बाबा नहीं दे सकता । लेकिन तू  
अपना सब कुछ बहुत ही बचत कर देना ।

वाकिया होने पर भी वह मुनकर हरिमती का हाथ गिरा । अपने माईकी  
झलक में मुँह छिपकर बोली—आमो ।

नीकावरने दोनों हाथोंसे बचाकर उठका माया भूम किया । ब-मो-बापकी  
[व छोटी बहनको वह बेहद प्यार करता था । तात तात प्यारे, जब हरिमती  
नि पाककी थी सभी उठकी विचारा माता उठ बड़ी बहू और बरेको सौंर  
हकोक सिंकार गई थी । तबत निकावरने ही उसे पाक-पोसकर इतना बड़ा किया  
। नीकावरने काम पड़नेपर नीकावरके रोयिकोंकी लच थी है मुँह पकड़े है,  
दीर्घ किया है, नीकावर किया है, लेकिन धनमरके किए भी अपनी माताकी हम  
सबे समपकी आराकी कबरेकना नहीं थी । इसी तरह उठने हरिमती को  
लेनेसे बगाकर पाक-पोसा है । इसीसे हरिमती माताकी तरह बिना संकोच के

१ बंगालके वैष्णवमठवापके साग पकटारा बजाकर भजन गा-गा कर  
त-तार भिजा मँगने फिरते हैं । ये बीहम कहलाते हैं और चित्त बोझी ।  
प्यारदा ही बगाकी उधारण बाहम है ।

रादाकी छातीमें मुँह छिपकर चुप हो रही ।

इतनेमें पुरानी दासीकी आवाज सुन पड़ी—वूँटी मामी दूध पीने के लिए बुझा रही है, आओ ।

वूँटी अर्थात् हरिमतीने फिर ठठाकर बिनतीके स्वरमें कहा—रादा तुम कह न दो कि अमी दूध नहीं पियूँगी ।

क्यों नहीं पियेगी वहन ?

हरिमतीने कहा—अमी मुझे किचकुच भूल नहीं है ।

नीलम्बरने हँसकर कहा—मैं तो यह मान बैंग, लेकिन वो गाऊ मीढ़ देती है वह तो न मानेगी ।

नीलम्बरनीने बहसि फिर पुकारा—वूँटी ।

नीलम्बरने घटपट वहनको खड़ा करके कहा—आ, कपड़ बदलकर दूध पी आ वहन मैं नहीं बैठा हूँ ।

हरिमती मुँह कटकाकर बीरे-बीरे पकी गई ।

उसी दिन दोपहरको विराजने बाड़ी फ्लोरकर पलिके सामने रक्त की और बोड़ी दूर बैठकर कहा—अच्छा तुम्हीं बताओ मैं भ्रष्टके साथ क्या चीज रख-रख तुम्हारी बाड़ीमें फ्लोर ? यह न लाऊँगा यह न लाऊँगा यह भी न लाऊँगा अस्तमें सख्ती भी छोड़ दी ।

नीलम्बरने कहा—वह इतनी सरकारी तो है ।

विराजने कहा—इतनी, कितनी है ! डेरफेरकर कमी यह, कमी यह ! लाकी इस साग पलिके साथ क्या मय ला सकने हैं । यह कोई शहर तो है नहीं कि सब चीजें मिल आये । यह तो रोहात है । यहाँ तो कस बही पोकरकी मजबूती मिलती है । उध भी लाना तुम छोड़ बैठे हो ।—अरे वूँटी कहाँ गई ? आकर पड़ेसे हवा कर ।—ना छो नहीं होगा ।—देखो आज अगर बाड़ीमें कुछ मो पड़ा रहेगा तो मैं तुम्हारे पैरोंपर फिर पटककर जान दे दूँगी ।

नीलम्बर कुछ बोका नहीं, हँसता हुआ लाता रहा ।

विराजने हट्टकर कहा—हँसते क्या हो ? मेरी देखमें आज क्या जाती है । दिन-दिन तुम्हारी कुराक पट्टी जाती है, वह भी लपर है ? हिचकीकी हट्टी रिलाइ देने लगी है, इपर जग देखो ।

## विराज बाहू

नीलेश्वरने कहा—जैसे सब देखा है। यह तुम्हारे मनका भ्रम है।  
विराजने कहा—मनका भ्रम है। कभी नहीं। जानते हो, अगर तुम एक  
दाना भी कम खाते हो तो मैं क्या दे सकती हूँ। रसीभर भी रोम हो तो शरीर  
पर हाथ रतकर ही समाप्त जाती हूँ, सो जानते हो?—या तो भूखी, पंखा  
रतकर चौकड़े में बैठते अपने दायाँ पीनेका दूध से बा।  
हरिमती एक ओर खड़ी ग्राहको हवा कर रही थी। वह पंखा रतकर दूध  
लेने पत्नी गई।

विराज फिर बोली—देखो नेम-धरम करनेके लिए बहुत दिन पड़े हैं। आज  
उस परकी मैसी आई थी। उन्होंने चुनकर कहा कि इसकी थोड़ी उमरमें  
मछली छोड़ देनेसे ओंखोंकी जेल गायी जाती है, शरीरकी शक्ति पर बारी  
है।—ना ना वह न होगा। अन्तमें न जाने क्याका क्या हो जाय। मैं  
तुमको मछली नहीं छोड़ने दूंगी।

नीलेश्वर इस पड़ा बोला—अच्छा जब मेरे बच्चे वही सब मछली लाया  
, वो सब ठीक हो जायगा।  
विराजने चिढ़कर कहा—मेरी-बम्पोंकी ठण्ड फिर बारी व लकार !  
नीलेश्वरने अग्रिम ओर झुंझा होकर कहा—बाप नहीं रखा विराज !  
बचनका अम्पास ठहरा पड़ता नहीं। याद है, कितनी दूधे तुम्हारे कान  
मेरे हैं जिन !

विराज होठोंमें दबी हुई ईंसीके साथ बोली—बाप नहीं है ! मुझे छोटी  
एकर तुमने क्या कुछ कम अत्याचार किया है। बाबूजीसे छिपकर, मैंकी  
आँग बधाकर तुम मुझसे कितनी थिलमें मरवाते थे। तुम क्या कुछ कम दुष्ट हो !  
नीलेश्वर ठहाका मारकर इस पड़ा। उसने कहा—आज भी वे सब बातें  
याद हैं ! अगर मैं लम्बीसे तुमको प्यार करने लगा था।

विराज ऐसी दबाकर बोली—जानती हूँ। आप चुप करो—भूखी आ रही है।  
हरिमतीने आकर दूधका कदीरा भारभी माँके पास रान दिया और फिर  
पंगा लेकर हवा करने लगी। विराजने उठकर हाथ धोने और फिर पतिके  
पास आकर बैठ गई बोली—आभूँटी पंखा मुझे दे दे व आकर गम।  
। भूँटी बनी गई। विराज पंगा शान्ते-जलते बोली—सब करती हूँ, इतनी

छोटी बचपनमें ब्याह होना ठीक नहीं।

नीलावरने बूझ—क्यों ठीक क्यों नहीं ! मैं तो कहता हूँ कि बड़कीयोंका बहुत छोटी उमरमें ही ब्याह हो जाना अच्छा है।

विराज फिर हियारकर बोली—नहीं। मेरी बात और है, क्योंकि मैं तुम्हारे शाय पढ़ी थी। इसके बिना मेरे कोई शराबखी दुध मनब या डेठानी भी नहीं थी। मैं इस सालकी उमरमें ही पढ़ी थी बन गई थी। लेकिन मैं और लोगोंके घर भी तो देखती हूँ। छोटी उमरमें ही जो बड़-सूक और मारपीट शुरू हो जाती है, वह बड़ी होने पर भी बंद नहीं होती। इसीसे तो मैं अपनी पूँटीके ब्याहका अपनी नाम ही नहीं लेती। नहीं तो अपनी पल्लों ही पूँटीके ब्याहके लिए राजेश्वरीदासके पायाक बाबू के करते 'बटकी' ब्याह थी। बड़की बेबरसे काद दी कावगी और नमद एक इवार रुपये। तो भी मैं कहती हूँ कि नहीं, अपनी दो साल और रहने दो।

नीलावरने आश्चर्यसे फिर ठठकर कहा—तुम क्या अपने छेकर बड़की बेबोगी !

विराजने कहा—रुपये क्यों न देंगी ! अगर मर एक बड़का होना तो हमें रुपये देकर घरमें बहुत अपनी पत्नी मा नहीं ! तुम क्यों क्या मुझे छीन लौ रुपये देकर मोल नहीं अपने ये ! देवरके ब्याहमें क्या पोंच लौ रुपये नहीं देने पड़े ! ना ना तुम न लच बालोंमें दलक न दो। हम बागोंकी जो रीति है मैं बही करूँगी।

नीलावरने और भी विस्मित होकर कहा—यह तुम्हें किसने बताया कि हम लोगोंकी रीति बड़की बेबना है ! यह ठीक है कि हम लोग बड़कीनालेको रुपये देते हैं। लेकिन, अपनी बड़कीके ब्याहमें एक पैसा भी नहीं लेते। मैं पूँटीको दान करूँगा।

स्वामीके चेहरे और जोत्सीका भाव देखकर विराज हँस पड़ी। बोली—

१. बंगालमें बड़क या बड़की ने कहकहते हैं जो कपड़ी-कपड़ोंके संभव छीक कराते हैं। वे सिरकों कागजाकोंका बंध-परिचय और कम्म-परिचयकी बकलें लगने संग्रह में रखते हैं। इनका पैसा ही यह है। —अनुवादक

क्या करें विराज, जवान दे चुका है—एक बार मुल जाना ही पंगा ।

जवान क्यों ही !

नीलंजर चुप बैठ रहा ।

विराजने हलफते कहा—तुम क्या समझते हो कि तुम्हारा जीवन केवल तुम्हारा ही है, उसमें और किसीको कुछ बोधनेका हक नहीं है। तुम्हारा जो बंधावे बही कर सकते हो ।

नीलंजरने बाँठोंको हड्डी बनानेकी गरजत हँसनेकी जगह थी, लेकिन फीका रस और मुग़ देलकर वह हँस न सका । किसी तरह कह डाला—मगर उसका रोना देलकर

विराज नीलंजर ही बोले उठी—ठीक तो है । उसका रोना तुमने देला लेकिन मेरा रोना देलनेवाला मी कोई इस दुनियाँ में है ! यों कहकर उसने उस पार छेकी चिट्ठीको टुकड़-टुकड़ करके फेंकत हुए कहा—भोले, वे मर्द भी कैसे होते हैं ! बार दिन और बार रातें लाना-खाना-सोना छोड़कर बिठा ही—उसका ही यह बरबाद हाथोंहाथ है रहे हैं ! पर पर तुम्हारे और हीतका है फिर मैं इस रातों निर्बल देहको लेकर लोगीको देलने-खूने काते हैं ।—अच्छा ज़माना मेरे भी मगवान हैं । यों कहकर फिर एक बार छतरीके नीचे छकिया दबाकर वह पद पंग रही ।

नीलंजरके होनोपर बहुत हड्डी हड्डी-सी मुक्कड़हट भा गइ । उसने धीरेसे कहा—तुम औरतोंको क्या देसा मरोसा है जो बाघ-बाघमें मगवानकी रोटाई देती हो !

विराज सबीस ठठ पैठी और मोचके लहजेमें बाली—नहीं, मगवान्तर केवल तुम्हें ही मरोसा है हम लोगोंको नहीं । हम कर्तन नहीं करती, तुम्हारी मरणा नहीं पानती मुझे पूँछनेको नहीं जाती इसीसे हम लोगीको नहीं, जकेना तुम लोगोको है ।

विराजका मोच देनकर नीलंजरको हँसी भा गइ । उसने कहा—मोच न करो विराज, मगमुष ही ऐसा है । देख एक तुम ही नहीं सभी देखी हैं । मगवान्तर मरोसा रन्नेके छिप जितना और पारिए, उतना और औरतोंकी देरमें गती होता—इसमें तुम्हारा क्या दोष है !

झोरी अबस्यमें ब्याह होना ठीक नहीं ।

नीलावरने पूछा—क्यों ठीक क्यों नहीं ? मैं तो कहता हूँ कि लड़कियोंका बहुत छोटी उमरमें ही ब्याह हो जाना अच्छा है ।

विराज फिर हिलाकर बोली—नहीं । मेरी बात और है, क्योंकि मैं तुम्हारे हाथ पड़ी थी । इसके विषय मेरे कोहशराखी हुए ननद या देठानी भी नहीं थी । मैं इस लाकड़ी उमरमें ही पहिली बन गई थी । लेकिन मैं और लोगोके पर भी तो देखती हूँ । छोटी उमरमें ही जो बक-सक थीर मारपीट शुरू हो जाती है, यह बड़ी होने पर भी बंद नहीं होती । इसीसे तो मैं अपनी पूँटीके ब्याहका अपनी नाम ही नहीं छेटी । नहीं तो सभी परसों ही पूँटीके ब्याहके लिए राजेश्वरीलकाके घोपाल बाबू के करते 'बटकी' लाइ थी । लड़की जेवरसे लव दी अबमी और नगद एक हजार रुपये ! तो भी मैं कहती हूँ कि नहीं, बम्ब हो साक और खने हो ।

नीलावरने आश्चर्यसे फिर ठठाकर कहा—तुम क्या रुपये लेकर लड़की बेचोगी ?

विराजने कहा—रुपये क्यों न लेंगी ? अगर मर एक लड़का होता तो हमें रुपये लेकर परमें बहु खानी पड़ती या नहीं ? तुम क्या क्या मुझे तीन सौ रुपये लेकर मोह नहीं करते थे ? लेकरके ब्याहमें क्या पौंच सी रुपये नहीं देने पड़े ? ना ना तुम इन सब बातोंमें दखल न हो । हम लोगोकी जो रीति है मैं बड़ी करूँगी ।

नीलावरने और भी विस्मित होकर कहा—बह तुम्हें किन्तु क्या कि हम लोगोकी रीति लड़की बेचना है ? यह ठीक है कि हम लोग लड़कीपासेको रुपये देते हैं लेकिन अपनी लड़कीके ब्याहमें एक पैसा भी नहीं लेते । मैं पूँटीको राज करूँगा ।

स्वामीके पहरे और ओलोंका भाव देखकर विराज हँस पड़ी । बोली—

१. ब्रह्मकर्म करक या बरखी से कहलाते हैं जो लड़की-लड़कोंके संबंध ठीक कराते हैं । वे सबकुं कामकाजोंका बंध-परिचय और बन्ध-वधियोंकी लड़के अपने संप्रदा में रखते हैं । इनका पैसा ही यह है । —अनुवादक

विराज बहू

अच्छा-अच्छा बरी करना । अब लाओ, कोई बहाना करके उठ न जाना ।  
नीलम्बर भी हँस दिया । बोझ—क्या मैं बहाना करके उठ जाता हूँ ?  
विराजने कहा—नहीं एक दिन भी नहीं । यह सोच तो तुम्हारे शत्रु भी नहीं  
दे सकते । इसके लिए मुझे कितने दिन उपवास करके काटने पड़े हैं, तो छोटी  
बहु जानती है—मरे बर क्या ! बस ला लो !  
विराजने ऐसा ढँक दिया और बूझा कसेर जोरसे पकड़कर बोली—तुम्हें  
मरे सिरकी कलम, उठो नहीं ।—पूँरी, जल्दी वा छोटी बहूसे दो संदेश तो ले  
जा ।—नहीं नहीं बहन शिवासे कुछ न होगा । तुम्हारा पेट अभी नहीं भरा ।  
मैया रो करती हूँ कि उठ जाओ तो मैं भी भोजन न करूँगी । एक रातको नि  
एक कलक बागकर संदेश कनाये हैं ।  
हरिमती रोझती हुई गार और छतरीमें बहुत संदेश जाकर नीलम्बरके  
खामन रख दिये ।  
नीलम्बर हँस पड़ा । बोझ—अच्छा तुम्हीं बताओ, इतने संदेश क्या मैं  
लम्प ला सकता हूँ ?  
विराजने मिठाईकी माथा बलकर, सिर छकाकर कहा—बातचीत करते-करते  
भोजन होकर खाओ, ला लो !  
नीलम्बरने कहा—पिर भी खाना ही पड़या ?  
विराजने कहा—हाँ । या तो मछली खाना न छोड़ने समझे, नहीं तो यह  
देख कुछ अधिक मात्रामें खानी पण्यी ।  
छतरी पास लीचकर नीलम्बरने कहा—तुम्हारे इस निश्चयनेके सुस्मने मार  
तो जो चाहता है कि किसी वनमें जाकर पल जाऊँ ?  
पूँरी बाक उठी—तुमको भी भैया  
विराजने धमकाकर कहा—तुम यह कहसुंही । खाँसे नहीं तो जिये कस ?  
मुसराजमें जाकर पता पढ़ा इस शिक्षावतका ।

२

बगमग टेढ़ महीने बादकी बात है । पाँच दिन भोग चुका के बाद आज  
मे नीलम्बरको बुगार न था । विराजने बानी कपड़ बदलाकर, अपने हाथमें

पुने कपड़ पहिनाकर, पत्रापर बिछोना साकबर उसे दिया था। पर लिङ्गकोई बाहर एक मारियलके पेड़को धुपपाप बड़ा देख रहा था। हरिम्पी उसके पास बैठी धीरे धीरे वंछा सक रही थी। सोही देरमें ही विराज नहा-बोकर मीले बाक पीटपर बिलराये, रोझी धोती पहने उस कोठरीमें दायिब बुर। तारी काठरी जैसे प्रकाशित हो उठी। नीकलरने उसकी ओर देखकर कहा—यह क्या ?

विराजने कहा—वैधानन्द बाबाकी पूजा मानी थी बाऊँ, पूजाका सामान मेज है। यों कहकर सिद्धाने मुन्नोंके बक बैठकर हाथसे खामीके माये की यमी मनुमन करके कहा—ना, तुम्हार नहीं है। नहीं धानती, इस साक धीतक्य मेमाके मनमें क्या है। घर घर क्या हाक हो रहा है। भाव सवेरे ही मुना कि यहाँके मोती मोड़लके बड़कीकी छारी देखें माताकी कृपा हुए है। बेहमरमें लिङ्ग रखनेकी बगह नहीं है।

नीकलरने ध्वस्त होकर पूछा—मोतीके किस बड़कीको धीतका निकली है ?

विराज ने कहा—बड़े बड़कीको।—मैं धीतका योंबको धीतक करो माता ! आहा, उसका बही बड़का वो कमठा-बमठा है। लिङ्गे धनीबरकी रातको लिङ्गे पहर अधानक नीह लचक आनसे तुम्हारे शरीरपर हाथ पड़ बानेसे देखा शरीर जैसे जटा बा रहा है। ममते छातीका लून खलकर बाह हो गया। ठठ कर बही देखक रोती रही। उसके बाद मानता मानी कि मैं धीतका बाइ हूँ बप्टन कर दोगी तमी तुम्हारी पूजा बड़ाकर फिर कुछ बाऊँ-पियूमी नहीं वो भाव दे दूंगी। कहते-कहते विराजकी बोनीं ओँखें आँसुबोंसे भीग गई और वो बूँद बावू गिर पड़े।

नीकलरने विस्मित होकर कहा—तुम क्या उपबाध किये हुए हो ?

पूँटने कहा—हो बाबा मामी कुछ नहीं लाती। लिङ्ग शायको एक मुट्ठी कच्चे घाफल लंदर बोटामन पानी पिया था। किसीकी बात नहीं सुनती।

नीकलरने बाहुत ही अलमुष्ट होकर कहा—क्या यह तुम्हारा पायलफन नहीं है ?

विराज बोलीके छोलेते अपने ओँखें पोंछते हुए कहा—पायलफन नहीं है ! भरक पायलफन है ! अगर तुम नापी होकर कममत वो जानते कि एति



क्या थी है ! तब समझ पावे कि ऐसे दिनों में उस बुन्दार आनेपर कालीदे मीठर क्या होने लगता है !—बहू कहकर आ रही थी कि फिर लड़ी होकर बाड़ी—दूटी गहरी पूजा चढ़ाने आ रही है । वाय अना पावे वो बसती आकर क्या वे, या ।

दूटी खुशीसे उठ बैठी, बोली—आऊँगी भाभी ।

तो फिर बेर न कर । आ अपने दादाके लिए देवतासे बच्ची तरह बरवान मँगना ।

दूटी लेकी से बच सी । नीलावरन हँसकर कहा—बहू भी मँग लक्ष्मी पसि तुमसे भी क्या बच्ची तरह ।

बिराजने हँसकर गर्दन दिखाकर कहा—बहू न समझो । बावे माइ हा, बावे मों-बाप, औरछाँके लिए पसिसे बहकर और कोई नहीं । माइ या मों-बापके न खनेपर बकर ही बहुत बुझ और बड़ होता है, लेकिन पसिके न खनेसे ही लीखा सर्वस्व लुप्त जाता है । बहू जो, आज पौन दिनसे बिना खाने-पिने है, लेकिन पिता और बुमाबलाके मारे एक बार भी खपाक नहीं हुआ कि उपासी है—लेकिन बुझबो तो अपनी किसी कहन को, बेलूँ बैठे—

नीलावरन बसतीसे काबा देकर बोला—फिर ।

बिराज बोली—तो फिर कहते क्यों हो ? पाककमम बिबा है या क्या किया है, सो मैं जानती हूँ या बेवता जानते हैं, किम्हाने मेरी बात रखी है । अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो मैं एक दिन भी न जीती । मँगवा सिकुर पुछनेके पसि ही यह बाधा फेड़ डालती । तुम-बाबाके समय जोगा सुँह न बलैगी, तुम-कार्वमें बुझकर पुछे नहीं इन दोनों लाली हाथोंका जोमोंके सामने निराक नहीं लूँगी, कच्चासे तिरते औरनक हथ न लूँगी छि छि बहू जीना भी कोइ जीना है । उस कमानमें आ जाताकर मार डालते थे, सो ही ठीक था ! तब मर कोय त्रिनोंके तुम-कच्चाको जानते-समझते थे, आजकल महीं समझते ।

नीलावरने कहा—नहीं, नहीं समझते, तुम जाकर समझा दो ।

बिराजने कहा—हो मैं समझा लक्ष्मी हूँ । बँसक मैं ही क्यों, तुमको पाकर जो कोई रखे देगी, बड़ी समझा है लक्ष्मी मैं अपनेकी नहीं । जाने दो—मैं भी अब तब क्या बडे या रही हूँ—बहूकर बिराज हँस उठी । इसके बाद पुनः

फिर एक बार पति की छत्ती का और माये का उखाप हाथ से अनुमन करके बोली—देह में कहीं दर्द तो नहीं है ?

नीकाबरने गर्दन हिलाकर कहा—नहीं ।

विराजने कहा—फिर कोई डर की बात नहीं । आज मुझे मूल मग रही है आर्टें, अब कुछ रोकने की सैयारी करें । तुमसे सच कहती हूँ आज अगर कोई मेरा एक हाथ भी काट काटे तो छायाद मुझे क्षेप नहीं आवेगा ।

इसी समय बहू नौकरने पाहर से पुकारकर कहा—मैंजी क्या बैरजी को बुलाकर खाना होगा ?

नीकाबरने कहा—ना, ना अब कोई अजरत नहीं है ।

तो मी नौकर पहिपीकी अनुमति के लिए खड़ा रहा । विराजने यह देखकर कहा—नहीं अब बुझ जा । एक बार और अपनी तरह देख जाय ।

तीन-चार दिनों बाद आरोग्य लाभ करके नीकाबर बाहर के बगिचे में बैठ गया था । इतने में मोती मोड़क आकर रोने लगी—बाबा ठाकुर, तुम एक बार पकड़कर न देखो तो मेरा छिम्न अब नहीं बचेगा । एक बार पैरों की रज से देखता तो छायाद अपनी वह उठ खड़ा हो ।—और कुछ बर कर नहीं सका, म्याकुल होकर रोने लगा ।

नीकाबरने पूछा—देह में क्या बहुत दर्द निकले हैं ?

मोती बौद्ध पीछता हुआ कहने लगी—सो क्या बताऊँ । मेरा जैसे एकदम मरी पड़ी हूँ । नीची छाति में जम्म सिम्पा है बाबा क्या करना पड़ता है, कुछ भी तो नहीं बनता । अब थोड़े बसिमे, कहकर ठसने दोनों पैर पकड़ लिये ।

नीकाबरने आहिस्ते से पैर छुड़ाकर कोमल स्वरों में कहा—कुछ डर नहीं है मोती तुम में पीछ जाऊँगा ।

उसके रोने बोलने के आगे नीकाबर अपनी अल्पमता की बात न कह सका । सभी तरह के रोगियों की सेवा करके इस विषय में वह इतना अधिक रस हो गया था कि आसपास के गाँवों में किसी को भी कोई कठिन रोग होने पर उसे एक बार दिसने के बिना उसके मुँह से सात्त्वना और आराधना की बाणी सुने बिना रोगी के आत्मीय स्वभावों को किसी तरह धीरज न आता था । नीकाबर खुद भी वह जानता था । वह वह समझता था कि बाबा के अत्यन्त अतिथि को

बैरागी दबाकी अयेछा उसके पैरोंकी धूँ उलटके हाथके पड़े पानीपर अधिक बमदा रहते हैं इसीलिए वह कमी मिथीको विमुक्त न छोटा सकता था। माँठी मोड़न और एक बार रोकर, और एक बार पैरोंकी धूँ देनेकी प्रार्थना करके, आँसू पोछता हुआ चला गया। नीलावर उद्विग्न होकर सोचने लगा। बचपि वह जब भी कुछ कमबोरे था, लेकिन सो कुछ नहीं। सोचने लगा कि परसे बाहर कैसे निकले ? विद्यासे वह बहुत डरता था। उसके सामने वह बात कैसे ज्ञानपर आवे ?

ठीक इसी समय भीतरके आँगनसे हरिमतीने बाहरसे पुकारकर कहा—बाबा, मामी भीतर आकर सोनेके बिस्तर पर लेटी हैं।

नीलावरने कहा—नहीं दिया।

अबसर बाद ही हरिमती कुछ आकर हाथिर हो गई। बोली—कुनार्द नहीं पड़ा दादा !

नीलावरने गर्दन हिलकर कहा—नहीं।

हरिमतीने कहा—बही घोड़ा-वा अब लावा बा, तबसे यहीं बैठे हो ! मामी कहती हैं—बैठनेकी जरूरत नहीं है, बसकर जग सो रहो।

नीलावरने बीरेसे पूछा—मेरी मामी क्या कर रही है पूछी ?

हरिमतीने कहा—जामी-जामी लाने बैठी है।

नीलावर ने पुचकारते हुए कहा—मेरी बचपि बहन एक काम करेगी ?

हरिमतीने तिर हिलाकर कहा—कईगी।

नीलावरने और भी कोमल आवाजसे कहा—वा चुपकेसे मेरी बाहर आर छठा हो मे आ।

बाहर और छठा !

नीलावरने कहा—हाँ।

हरिमती ऊपर आँसू चढ़ाकर बोली—ना बाबा ! मामी ठीक इसी तरह मुँह किये लाने बैठी हैं।

नीलावरने आँखोंको बंद करके कहा—तो नहीं का लवैमी !

हरिमतीने दोन दोन बार तिर हिलाकर कहा—वा बाबा ! दाद लेगी। तुम बसकर लेहो।

उस समय दिनके सो बजे थे। बाहर तेज धूपकी ओर देखकर छातके बिना बाहर निकलनेकी बात वह सोच भी नहीं सका। इसलिए इलाज होकर, बदनका हाव पकड़े कोठरीमें आकर बैठ रहा। हरिमती कुछ देरतक अनगल बकती बकती ब्याहिर चो गए। नीकबर पुष्पाप रहकर अपने मनमें तरह-तरहसे आशुति करके देखने लगा कि बातको ठीक किस तरह कह सकनेसे विराजका मन पसीज सकता है।

जब दिन प्रायः डल चुका था। विराज अपने परके टैंड और बिछने लीमेटके चर्चपर पट पनी हुए, छातीके नीचे एक लकिया हवासे, उन्मय होकर अपने मम-ममकी ओर पसीका एक लम्बा पत्र लिख रही थी कि अकस्मात कैते धीतकामादकी कृपासे गाबमें बैबल उखलकर पर मुसुल बसा है और किस तरह उसकी माँगका सेंदुर और हाथकी बूझिया बच गई है। लिखते लिखते, कपड़ों लिखते हुए भी यह कहानी समझ न होती थी। इसी समय नीकबरने पल्लापरस ही एकएक उसे पुकारकर कहा—मेरी एक बात मानोगी विराज।

विराजने बाबतमें कलम रखकर तिर उठकर, पूछा—कहो, क्या बात है ? मानो तो कहूँ।

विराजने कहा—माननेकी होगी तो बन्ध खर्दूमी। क्या बात है ?

नीकबरने दममर सोचकर कहा—करनेसे कोई धायका यही विराज, तुम मेरी बात न मान सकोगी।

विराजने फिर प्रसन्न नहीं किया। कलम उठाकर पत्रको समाप्त करनेके लिए एक बार फिर लुफ गई। पर लिखनेमें मन नहीं लगा सकी। बाननेका कोटरक मीठर ही भीतर प्रदल हो उठ्य। वह उठकर बैठ गई।—अच्छा कहो, मैं बात मानूंगी।

नीकबर मुस्कय दिया। फिर कुछ शिथिलते हुए बोला—आज दोपहरको मोखी आपा धार रोते-रोते मेरे पैर पकड़कर बैठ गया। उसे विश्वास है कि उतके परमें मेरे पैरोंकी धूल पड़े बिना उसका जीवन नहीं बचेगा। मुझे एक बार बाना होगा।

विराज मुँह ताकती हुए मुन-नी बैठी रही। बोली देखें बोली—इत रोमी... शरीरको टेकर जाओगे ?

क्या करे विराज, खान दे चुका है—एक बार मुझे जाना ही पन्ना ।

खान क्यों दी ?

नीलम्बर चुप बैठा रहा ।

विराजने हलसेलसे कहा—तुम क्या समझते हो कि तुम्हारा जीवन केवल तुम्हारा ही है, उसमें और किसीको कुछ बोलनेका हक नहीं है तुम्हारा जो भी पादें गही कर सकते हो ।

नीलम्बरने बातीको हल्की बनानेकी गरजसे हलनेकी चट्टा की, लेकिन पत्नीका दस्त और मुख देखकर वह हँस न सका । किसी तरह यह दाला—मगर उसका रोना देखकर

विराज बीचमें ही बोक उठी—ठीक तो है ! उसका रोना तुमने देखा लेकिन मेरा रोना देखनाबाख मी कोई इस दुनियामें है ! यों कहकर उसने उस बार खड़ेकी चिट्ठीको डुङ्गा-डुङ्गा करके बेंकड़े हुए कहा—बोध ये मर्द भी कैसे होत हैं । बार दिन और बार रातें खाना-पीना-खोना छोड़कर बिठा रहीं—उसका ही यह बदमा हाथोहाथ दे रहे हैं ! घर-घर बुलार और धौंसका है फिर मी इस एगी निर्बल देहको लेकर रोगीको देखने-सूने जाते हैं ।—अच्छा बाबो मेरे भी ममबान् हैं । यों कहकर फिर एक बार बातीके नीचे खड़िया दबाकर वह पठ पन् पड़ी ।

नीलम्बरके होठोंपर बहुत हल्की दबी-सी मुस्कुराहट आ गई । उसने धीरेसे कहा—तुम औरतोंको क्या देणा मरोला है जो बात-यातमें मगवानकी दोहाई देती हो ।

विराज तेजीत उठ बैठी और मोबक लहजेम बोली—नहीं, ममबान्स् केवल तुम्हें ही मरोला है हम बोगोंको नहीं । हम कीर्तन नहीं करती तुलसीकी भाषा नहीं पकनती मुझे पूँजनेको नहीं जाती इलीसे हम बोगोंको नहीं, बनेला तुम लोगोको है ।

विराजका बोध देखकर नीलम्बरको हँसी आ गई । उसने कहा—बोध न रो विराज लयमुच ही रीता है । देखक एक तुम ही नहीं, गम्भी ऐसी हैं । मगबान्स् मरणा रान्नेके सिध किटना जोर पादिप, उतना और बोलीकी देरमें तुम्हारा क्या बोध है !

विराज और भी सहाकर बोली—नहीं। वह रोग क्या भारतीका गुण है। लेकिन अगर शरीरकी बकली ही इतनी बरकरार है तो शेरकी, शिकरी शरीरमें तो और भी अधिक है। तैर, वह बक हो ना न हो, तुम पाट जितनी बरत करो मैं तुमको वह रोगी शरीर लेकर निकलने नहीं दूंगी।

नीलावर चुप होकर बैठ गया, फिर कुछ नहीं बोला। विराज भी कुछ देर तक चुप पड़ी रही फिर 'धाम हो याइ खै' कहकर उठ गए। बगामा पट्टमर बाहर संझा-बाठी करने कोठरीमें बाहर तो देखा पति पट्टमर नहीं है। बकरीसे निकलकर दूधको पुकाया। पूछा—दूध लेने दादा कहाँ गए? बाहर बाहर तो बात का।

दूध रोखती दुर गए। बाहर-बाँध भिन्नम होखती दुर खेटी। बोली—कहाँ नहीं है। नदिबाके किनारे भी नहीं।

विराज गर्दन दिखाकर बोली—हूँ! इतकी बाब रसोईपरकी दरवाजेपर आकर गुमसुम होकर बैठ रही।

३

दीन साब बाबकी बात है। इतिहासीको सुनपाक गये दो महीने हो गये। छोटा म्याई फीतावर रहता एक ही घरमें है पर उसका सूखा-खोका जलगा हो गया है। धामका सटपुटा है। बाहर चण्डोमण्डलके बरामदमें एक हट्टी चढाईके ऊपर नीलावर चुपका बैठा था। विराज चुपचाप आकर पास लक्ष्मी हो गए।

विराजने उभर बैलकर कहा—ए, तुम एकएक क्यों? विराजने एक किनारे बैठकर कहा—एक बात पूछने आए हूँ। क्या पूछो?

विराजने कहा—क्या खानेसे मरण हो जाता है, क्या सकते हो? नीलावर कुछ न बोला।

विराजने कहा—ना तो क्या हो नहीं तो स्पष्ट कहा कि दिन-दिन तुम इस तरह खलते क्यों आ रहे हो? विराजने कहा कि खलता आ रहा हूँ।

विराजने झगमर पति के सुम्पर धौंली टिकाकर कहा—व्या अब कोर बतायेगा सब ही मैं जानूँगी ! अच्छा, यह क्या सचमुच अपने मन की बात कह रहे हो ?

नीलांबर अग हैरा ! बात सेंगलका हुआ बोझ—ना रे, यह बात नहीं है । लेकिन तुमसे कभी भूक होती है न, इसी से पूछता हूँ कि यह किसी औरने तुमसे कहा है या तुम व्यप ही ऐसा समझ बैठी हो ?

विराजने हर सवालका जवाब देने की काई जरूरत नहीं समझी । कहा—तुमसे किटना कहा कि मेरी पूँजी का ब्याज ऐसी जगह न करो लेकिन तुम्हें एक न मुनी । जो कुछ नगरी पास थी वह बिकी गई, मरे लन के सब गहन मी खड़े गये । अब नशक के लिए जमीन पिरों रख ली, बा बाग केच डाले । उसपर यह दो साल के अकाल पड़ रहा है । अब तुम्ही बताओ, दामाद की पढ़ाई का सब महीने महीने कैसे वे सकनो ? बरा डीक हो गई, तो पूँजी को लाना-कटी बातें सुननी पड़ेंगी । वह अभिमानिनी कलसी है तुम्हारी निम्न किसी तरह न मुन सकेंगी । भगवान् अपने अन्तर्म स्वाका क्या ही कय ! तुम्हें ऐसा काम क्यों किया ?

नीलांबर मोन बना रहा ।

विराज कहती गई—इसके सिवा अब दिन-रात पूँजी का मका करने के विचारसे उसकी चिन्ता में फुल्लुलकर, तुम मेरा भी सर्वनाश कर रहे हो यह मैं न होने दूँगी । इसके लो तुम एक काम करो, दो-चार बीघे जमीन बैचकर पार-दोब लो रुपये इकट्ठा करो और गले में कपड़ा डालकर दामाद के पापसे कहो कि ये रुपये लेकर मुझे सुरक्षा दे लीजिये । हम बोल गये हैं इसके अपिच नहीं है सकते । इसके पूँजी के माग्यमें अच्छा वा मुग ओ कुछ बरा हो पा दो ।

फिर भी नीलांबर मोन ही रहा । उसके मुँह की ओर देखते रहकर विराजने कहा—नहीं कह सकागे ?

नीलांबरने एक कम्पी लस छोड़कर कहा—कह सकता हूँ । लेकिन अगर अभी कुछ पैस लालगे विराज, तो फिर हमारा क्या हागा ?

विराज ने कहा—हागा और क्या ? जामदार गिरी लाले और मनामना

सुर और फिर हिलना छैन करनेसे वो बह नहीं थाप्ता है। मेरे कोर कड़का बाबा वो है ही नहीं, जिसके लिए चिन्ता करें। के देकर हम ही दो प्राणी हैं। किसी तरह गुजर हो जायगा। और अगर निकलूँ ही नहीं हुआ तो तुम बीरम ठाकुर तो हो ही।

इसके पंच-छ दिन बाद, रातके दस बजेक समय नीलवार बिघिनेर लेटा खोलें मूँदे गुड़गुड़ीकी नब्बी मूँदसे क्यारो समाकू पी रहा था। भरका काम-काज निम्नकर पिराज शयन करनेके पहले, पछपर बैठी अपने लिए कुछ खा-सा एक पान किया रही थी कि एकएक कर उठी—अच्छा बी रात्रिकी क्या समी बातें लय हैं ?

हुस्केकी नब्बी एक ओर रखकर नीलवारने पत्नीकी ओर ब्रूमकर कहा—  
भरे घासकी बातें लय नहीं तो क्या हूँ ?

बिराजने कहा—नहीं मैं उन्हें झूठ नहीं कहती। किन्तु क्या जूठकी तरह आजकल मी बे कहती हैं ?

नीलवारने खामर सोचकर कहा—मैं पठित तो हूँ नहीं बिराज। सब बातें मी जानता नहीं। लेकिन मेरी समझी बही जाता है कि सत्य क्या लय होता है। सत्य जूठे मी सत्य था, और अब मी सत्य है सदा सत्य रहेगा।

बिराजने कहा—अच्छा, खासिबी और सत्यवादी ही कथाको छे छे। खासिबी भर हुए स्वामीके प्राण पमराजके हाथसे बीया ब्यर्थ। वह क्या सत्य हो सकता है ?

नीलवारने कहा—क्यों नहीं हो सकता ? वो खासिबीके समान सती हैं, वह बरुन मेरे हुए पतिको बीया का सकती हैं।

बिराजने बिना किसी हिचकके कह दिया—तब भी मैं मी बीया का सकती हूँ।

नीलवार उसकी हथ बाकपर हँस पड़ा। बोध्य—तुम मी क्या ठनक समान सती हो ? वे तो ठहरे हैला !

पानका बच्चा सरकाकर एक ओर रखते हुए बिराजने कहा—हाँ हैला ! कदीलमें मैं ही भला उनसे जाहेंमें कम हूँ ? मेरी बैली सती संसारमें बात मी हो सकती है—किन्तु मनसे, और जानसे, हम बीरगेंते ककर



घोड़ है, यह बात मैं नहीं मानती। चाहे साबित्री हो, चाहे छोड़ और, मैं किसील सिद्धमर भी कम नहीं।

नीलावरने उत्तर नहीं दिया, केवल पत्नीके मुँहकी ओर चुपचाप देखता रहा। विराज धामने दिया रखकर पान छगाने बैठी थी, दीपकका पूरा प्रकाश उसके मुनपर पड़ रहा था। उसी प्रकाशमें नीलावरको स्पष्ट देख पड़ा कि विराजकी आँखोंमें एक अद्भुत पवित्र ज्योति फूटी पड़ रही है।

नीलावरने टरके-बरते कह डाला—तो आज पड़ता है, तुम भी कर सकोगी।

विराज ठंडी और पतलके पैरोंपर साधा रखकर बोली—तुम यही बर्तानाद हो कि अगर होश सँभालनेके बाद इन दोनों बरणोंके सिवा मैंने और कुछ न जाना हो और मैं अगर यथार्थमें सही हूँ तो तुम समझ आनेपर मैं भी उन्हीं (साबित्री) की तरह तुमको खड़ा करूँ और उसके बाद इन्हीं बरणोंपर फिर रखकर भर सँ—यह मायेका सिन्धूर और हाथोंकी चूर्चिर्चो पाने हुए ही चितापर हो जाऊँ।

नीलावरन व्यस्त होकर उठ बैठा और बोला—आज तुमको यह क्या हो गया है विराज ?

विराजकी दोनों आँखें छलछल रही थीं। फिर भी उसके होंठोंपर बहुत ही मीठी और कोमल हँसी आ गई। उसने कहा—यह फिर कभी सुनना, आज नहीं। आज तो केवल आशीष हो कि मरते समय मुझे इन दोनों बरणोंकी पूर मित्रे और मैं तुम्हारी गोदमें फिर रखकर, तुम्हारा मुँह देखती हुए भर सँ। आगे वह कुछ बोल न सकी उसका गला दब गया।

नीलावरन डरकर, उसे लीचकर अपनी छातीसे लगा दिया और कहा—आज क्या हुआ है तुम्हें ? क्या किसीने कुछ कहा है ?

वह अपने पतलकी छातीपर मुग रखकर विराज चुपचाप रोने लगी, कुछ उत्तर नहीं दिया।

नीलावरन फिर कहा—आर कभी तो तुमन ऐसा नहीं किया, विराज क्या हुआ है कुछ कहो तो।

विराजने चुपचाप अपने आँखों को छिपे फिर नहीं उठाया। मृदु स्वरमें हठा हो कहा—फिर किसी दिन सुनना।

नीलम्बरने फिर ओर नहीं दिया। उसी तरह बैठे-बैठे उसके बाजोंमें धीरे धीरे डँगली बजते हुए चुपचाप उसे सानसना देने लगा। कहींके विवाहमें जिस-बाहर सब कर हाटनेके कारण वह कुछ उत्सवमें पड़ गया था और जब पैसेकी तरह पारस्योका काम नहीं चल पाता था। उसपर वो साबसे ब्याठार अफास पड़ रहा था। कोठीमें पान नहीं पोखरमें पानी नहीं, मछली नहीं। केलेका बाग सूखता जा रहा था। बायमें कच्चे मीनू चुककर सड़े जा रहे थे। ठपरेले डेनदारोंने तयारेके लिए आना-आना शुरू कर दिया था। उधर मूँटीके समुद्र यो बड़बुकी प्यारके लक्षके लिए कुछ मीठी, कुछ कड़वी चिड़ियों देज रहे थे। विराज वह सब जानती न थी। कितने ही न बचनेवाले अग्रिम लम्हापर बड़ी काशिशसे नीलम्बरने लिखा रहा है। इस समय वह उद्दिष्ट होकर खेबने लगा—जब पहला है, किसीने वे सब बातें विराजसे कह दी हैं।

विराज एकाएक मुँह ऊपर उठाकर मुस्कपई धीरे बोली—अच्छा, एक बात पूछूँ, सब-सब बताओगे ?

नीलम्बरने मन ही मन बार अधिक संकित होकर कहा—कौन-सी बात ?

विराजकी सबसे बड़ी चुनरता उसके मुसकी मनोहर होती थी। एक बार फिर बड़ी हैली हैलकर नीलम्बरके मुसकी धीरे देखती हुई वह बोली—अच्छा, मैं काकी-कुमिल्ल हो नहीं हूँ।

नीलम्बरने फिर हिलकर कहा—नहीं।

विराजने पूछा—अगर मैं काकी-कुमिल्ल होती, तो क्या तुम मुझे इतना चाहते—इतना प्यार करते ?

वह अद्भुत प्रश्न सुनकर यद्यपि वह कुछ विचिन्त हुआ तथापि उसकी जलीपरसे जैसे एक मारी बोल तहला उठर गया।

उसने प्रत्यक्ष हाँकर हैसते हुए कहा—मैं-तो बचपनसे एक परम कुन्दरीको ही प्यार करता आया हूँ। जब इस समय जैसे कठारों कि वह अगर काकी कुमिल्ल होती तो क्या करता ?

विराजने दोनों हाथ पछिके गलेमें बाँध दिखे और और भी एक मुँह से आकर कहा—मैं बता हूँ कि तुम क्या करते ? तब मैं तुम मुझे ऐसे ही प्यारकरते।

फिर भी मीठीवर उसके मुसकी चुपचाप देखता रहा।

मिटके का—तुम का सोच रहे हो कि यह मैंने कैसे जान लिया  
मैंने न।

बराबरी चेहरे पर बरिबरी देख—वही सोच रहा हूँ कि तुमने कैसे  
जान लिया।

रिचमण्टिका तथा छोड़कर, उसकी छाती पर एक तरफ सिर रखकर छेद  
तुम और उसकी ओर तबली हुई चीन्हे से सेटी—मेरा मन मुझे बता देता  
है। मैं तुमको पिटवा भी जाती हूँ। उसका तुम घुस भी जानेको नहीं भीड़ते।  
इससे जानती हूँ कि तुम तब भी मुझे देखे हो प्यार करते। ओ अन्धकार है,  
ऐसे रूप होता है, वह तुम क्यों नहीं कर सकते। अपनी स्त्रीको प्यार न करना  
अन्धकार है—रात है। इसीसे मैं जानती हूँ कि अगर मैं कानी-कुक्की भी होती,  
तो मैं तुम्हें इतना ही प्यार-मुहार पाती।

अंधकारने कोई अन्धकार नहीं दिया।

रिचमण्टिक सिर रखकर मिचमणे एकएक हाथ बढ़ाकर अनुमानसे स्त्रीकी  
अन्धकार के दोनों ओर देखा और फिर कहा—यह आँखोंमें आँख क्यों ?

अंधकारने प्रेमसे उसका हाथ हटकर मारी गलेसे कहा—कैसे जाना ?

रिचमण्टिके कहा—तुम क्यों मूक आते हो कि नौ वर्षकी अवस्थामें मेरा स्नाह  
तुम प्यार क्यों मूक आते हो कि तुमको अपनेके बाव में तुमको पाया  
मैंने देरदे हाथ देकर भी क्या नहीं जान पाया कि मैं भी उसमें मित्र  
हूँ।

अंधकारने उस यहाँ की। उसकी कन्ध आँगोंके कोनोंसे बूँद-बूँद करके  
करीब आते हैं।

रिचमण्टिके ३३४२२ प्रेमके साथ अपने आँखोंसे लावणीकी साथ प्रतिदिन  
मैंने ही दे दे दे स्त्रियों कहा—तुम चिन्ता न करो। तातबी करते समय  
तुमको देखा है—मेरे रूप सदा हैं। पृथ्वीके मलकी आवाज करके तुमने भी ठीक  
मैंने अपना हाथ जोड़ दिया है। मैं स्वर्गसे हमको आशीर्वाद दूँगी। तुम अष्ट  
मैंने देखा है—मेरे कर्णोंके जोड़ते भुवनेश्वर पा प्यारा हममें हमारा तरबन  
मैंने देखा है—मेरे कर्णोंके जोड़ते भुवनेश्वर पा प्यारा हममें हमारा तरबन

अंधकारने देखा है—मेरे कर्णोंके जोड़ते भुवनेश्वर पा प्यारा हममें हमारा तरबन

कि मिन क्या किया है—मिन तुम्हारा  
विराजने आगे कहने नहीं दिया। पछिका मुह हाथसे बन्द करके बोळ उठी  
—मैं सब जानती हूँ। और कुछ जानूँ या न जानूँ, यह निश्चय जानती हूँ कि  
तुमको बीमार न पड़ने दूँगी। ना यह न होगा। जिसका वो पावना हो वह  
दे दो देकर निश्चिन्त हो जाओ। फिर इसके बाद सिरके ऊपर झगधान् हैं और  
बरबोके नीचे मैं हूँ।  
नीकनर कभी खोंस लेकर चुप हो गया।

४

उ महीने और भी गुजर गये। पूँटीका व्याह होनेके पहले ही छान्म मार  
स्मीन-बावरादका बरबाद करके बहका हो गया था। नीकनरके हिल्लेमें  
ने आवा का उसका कुछ हिस्सा उठी समय मिरों रलकर कर्ब लेना पड़ा था।  
कहनेकी जरूरत नहीं कि पीतलरने एक ठेकेकी भी सहायता नहीं की। बाकी  
वो कुछ कमीन और पूँजी बची, उसे नीकनर एकडे बाद एक मिरों रलकर  
बहनाईकी फर्माईका लर्ब तुयने लगा और एहली खलाने लगा। इस प्रकार  
वह दिन-दिन अपनेको कपडे नाग-खलामें बरबाद गया। लेकिन ममसाके  
मारे वह अपनी बाप-यादोंकी आयादादको किसी तरह एकदम नहीं बच सका।  
आज ठीकतेपहर उस मोहल्लेके मोहनाय मुलखी बाकी आकडे लिए कुछ  
कड़ी बातें कह गये। आजमें लड़ी विराजने बह सब सुना। नीकनर सेते ही  
भीतर आया वह थोकेसे निकलकर पुष्पाप उसके सामने आकर लड़ी हो  
गया। उसके चेहरेको देखते ही नीकनर खराब उठा। अपमान और शोमसे  
विराजके हृदयमें आग-सी बल रही थी। लेकिन इस भावको दबाकर फर्माही  
और टोंगवीसे इशारा करके, प्रधानत गम्भीर स्वरमें उसने कहा—बर्हो बैठो।  
नीकनर फर्माफर बैठ गया। विराज भी उसके पैरोंके पास नीचे बैठ गया।  
बोली—हेलो, आज का तो कम चुकाकर मुझे उरिन करो नहीं तो मैं आज  
तुम्हारे पैर चूकर कसम खा लूँगी—  
नीकनर समझ गया कि विराजने सब बातें सुन ली हैं। इसीसे बहुत डरते

हुए, घोरन् झुककर उसका मुँह अपना हाथ रतकर बंद कर दिया और खींचकर उसे अपने पास बिठाते हुए स्निग्ध कण्ठसे कहा—'छ' विराज, साधारण बाँतोंमें ही इस तरह आपसे बाहर न हो जाया करो।

अपने मुँहपरसे पतिका हाथ हटाकर विराजने कहा—अगर इससे भी आदमी आपसे बाहर नहीं होता है तो फिर कारसे होता है क्याभो ?

नीलावरको एकाएक इसका कुछ बचाव नहीं छूटता। वह चुप बैठ रहा।

विराजने कहा—चुप क्यों रह गये ? बचाव हो।

नीलावरन धीरेसे कहा—बचाव देनेको कुछ भी नहीं है विराज। लेकिन

विराज बीचमें ही रोकर कह उठी—ना लेकिन-लेकिनसे काम नहीं चलेगा। वह मरोटा कमी न रखना कि मेरे ही परमें लड़े होकर जोग तुम्हारा अपमान कर जायेंगे और मैं अपने कानोंसे सुनकर यह देखूँगी। ना तो आज इसका काह उपाय करो नहीं तो मैं अपनी जान दे दूँगी।

नीलावरन टरत-टरते कहा—एक ही दिनमें इसका क्या उपाय करेंगा विराज ?

विराजने कहा—मर्या हो दिनके बाद ही क्या उपाय करोगे, क्या मुक्त समझाओ ?

नीलावर चुप हो रहा।

विराजने कहा—एक पूरी न हो सकनेवाली आशा करके अपनेको बहानेकी कोशिश न करो इस तरह मेरा सचनास न करो। कितने दिन बीतेंगे, उसना ही तुम इस दर्जके पन्नेमें अपनेको जकड़ते आओगे। मैं तुम्हारी शरार देखी हूँ तुमने मीठा मींगती हूँ तुम्हारे पैरों पन्ती हूँ अमी, इसी पदो इसका कोई उपाय करो। घुटकारेकी कोई राह निकालो।

यह कहत-कहते आँसुओंत उसका गला मर जाया। मोन्य मुन्नखीको बाँतें उसकी छातीमें छल-खी चुमने लगीं।

अपने हाथसे उसके आखू पीछत हुए नीलावरन धीरेसे कहा—इस तरह भीरज छादनस क्या हागा विराज ? अगर एक सास पूरा पकल हो गई तो मैं अपनी औनी-दीनी जायसद चुन से मरूँगा। लेकिन येस दास्तनेस तो ऐसा न हो सकेगा—यह तो सोचा।

विराजने गीत गलत कहा—सोच लिखा है। एक तो अगले साठ पसक ठीक-ठीक हानका ही क्या मरोखा है? उसपर व्यावका धर है और सैनदारोंका कहा लगाया है। मैं सब सह सकती हूँ, लेकिन तुम्हारा अपमान नहीं सह सकती।

नीलावर आप भी इसे अच्छी तरह जानता था "सीसे कुछ जवाब नहीं दे सका।

विराजने फिर कहा—तुम्हको क्या एक घड़ी मुल है? दिन-रात सोच करते करते तुम मरी औरके सामने ही चलते जा रहे हो। यह सोनेकी देह वाली पड़ती जा रही है।—अच्छा मेरी देखफ हाथ रखकर तुम्हीं कहो, क्या इतना सहनेकी शक्ति तुममें है? जोगीनकी पढ़ाईका खज और कबतक देना पड़गा।

नीलावरने कहा—कत एक साक और। "सके बाद वह डाक्टर हो जायगा।

दमनर चुप रहकर विराजने कहा—हमने पूँरीको पाक-पोषकर आदमी बनाया है वह राजधानी बने। लेकिन अगर पहले माफूस होता कि उसके कारण इतना दुःख सहना पड़ेगा तो उसे बचस्ममें ही नहीं बहा देती, यों अपने चिरफ गाल न गिरती। हे भगवान्। वे लोग ब" आदमी हैं, उन्हें को" क्या नहीं है, कोर कमी नहीं है। तब भी बीककी तरह हमारे कलेजेका लून मूछते उन्हें तनिक भी दया नहीं आती—करत नहीं आता।

इतना बरकद, एक गहरी लम्बी लँस छाड़कर वह मुच-भी हो रही। बोली—पारा और अमन है चारो ओर अकालकी काखी छाया है। अभीसे कितने ही दुस्ती खीन मरीचोंका फाँके होने लगे हैं कितन ही लोग एक जून खाने लगा हैं। ऐसे भूरे समयमें हम लोग पराये लड़कैको क्यों पढ़ा-लिखाकर आदमी बनावेंगे? पूँरीके समुरके कोर कमी नहीं है, वह ब" आदमी हैं। वह ब्यार अपने लड़कैको नहीं पढ़ा सकते तो हम क्यों पढ़ाएँ? जो दुःख हो दुःखा, अब तुम इसके लिए कब न से सकोगे।

बड़े कइसे होठोंपर खूनी हँसी बाकर नीलावरने कहा—सब समझता हूँ विराज। अगर मीे शास्त्रियामजीके सामने कसम खाकर जो प्रतिज्ञा की है, उसका क्या होगा।

विराज गुरजत कह उठी—कुछ भी न होगा। शास्त्रियाम अगर सच्चे देखता है

तो वह हमारा क्या अगर समझेंगे। फिर मैं भी तो तुम्हारा भाषा भंग हूँ। ऐसा करनेसे अगर कुछ पाप-बोध होगा तो उसे अपने तिर-औंनोंपर डेकर बन्म-बन्मास्तरतक नरक योग खूँगी तुम्हें कोई डर नहीं है। अब तुम कर्ब न को।

ब्रमास्मा स्वामीके हृदयम को घोर हु-ल था वह विराजसे तनिक भी छिन्न नहीं था। लेकिन अब वह अधिक न छद् सकती थी। बास्त्रमें पति ही ठठका धर्मत्व था। उसी पतिके दिन-रातकी बिस्ताते सुने हुए उद्यत मुन्दी और देखकर उसका हृदय विषीर्ण होता था। वह अभीतक किसी तरह स्मार्ह रोकर बाध कर रही थी, लेकिन अब न कर सकी। तेजीसे पतिकी छातीमें मुँह डिक्कर फूटफूटकर रोने लगी।

दाहिना हाथ विराजके सिरपर रखकर नीकनर पुष्पाप फफरकी मूर्ति-का निष्कम होकर बैठा रहा। देरतक रोनेके बाद विराजके हुस्नद दुष्प्रकी दीन्या घटने लगी। तब वह जैसे ही पतिकी छातीमें मुँह डिक्काये रोते रोते बक्री—बकपनसे लेकर अस्तककी सुरो याद है, कभी तुम्हारा मुँह उठरा था सुन्न नहीं दिखाइ पडा, कभी तुमको मुँह पुन्धये नहीं देला। पर अब तुम्हारे मुँहकी तरह देखते ही भरे कसेत्रेमें पक्ककी निशा बढने लगती है। तुम अपना एपाक न करा तो बरा मेरी ही तरह एक बार निहार देखो। अन्तमें क्या तुम सचमुच मुझको राहकी भित्तिारिन बना दोगे? और वह क्या तुम चदन कर सकोगे ?

फिर भी नीकनर कुछ अचर म दे सका। अनमनेकी तरह धीरे-धीरे पकीके सिरपर हाथ पेटने लगा—उसके केरीमें ठंगलियाँ चढाने लगा। इसी समन झारके बाहरध ही ठठकी पुछनी दासी मुन्दरीने पुधरकर कहा—बहुरानी गूहा क्या हूँ क्या ?

विराज हड़बड़ाकर उठ बैठी। ओंन्से मुँह और ओंन्में दौंछकर दोलटीके बाहर निकल बाह।

मुन्दरीने फिर पूछा—घूसा क्या हूँ ?

विराजने अल्प हरती कहा—ज्या है तुम बीमोंके निध गाना बनाना पनेगा, मैं तो अब कुछ न खाऊँगी।

दासीने और बीरकी आवाजमें, नीकनरकी मुनाकर कहा—बार बह तो

क्या मुन्ने रातका भोजन दिठनुक बन्द कर दिया ? न लाकर ब्यापी तो रख गई हो !

विराज हाथ पकड़कर उठे लीथली हुई थोड़ीकी तरफ से गए ।

सून्हेकी रोशनी विराजके मुखपर पड़ रही थी । थोड़ी दूरपर बैठी बासी जॉर्सें धड़ उसकी ओर निहार रही थी । एकाएक कह उठी—सब कहती हैं बहुरानी, तुम्हारा सेवा रूप मेने किसी मनुष्यमें कहीं नहीं देला । ऐसा रूप तो बड़े-बड़े राजों महाराजोंके पास भी नहीं है ।

उसकी ओर मुँह करके कुछ बिगन्नकर विराजने कहा—तू क्या राजों महाराजोंकी भी खबर रखती है !

मुन्दरीकी भावस्था लगभग १५-१६ बरकी थी । किसी जमानमें वह भी मुन्दरी कही जाती थी और उसकी वह छोहरण भाव भी एकदम मिट नहीं गए हैं ।

वह कहती—उस कुछ भी बाद नहीं कि जब उसका ब्याह हुआ और जब विवाह हो गए । लेकिन सोहागिनके सौम्याम्मेसे वह कितकुल ही बंथित नहीं हुई, उसके गांव हृष्णपुरमें उसकी वह मुकीर्ति देखी हुई है । उसने हँसकर कहा—राजों राजाओंकी कुछ न कुछ खबर तो रखती हो हैं बहुरानी । नहीं तो उस दिन साहसे दूबा न कर देती ।

अबकी विराज सचमुच ही क्रोशित हो उठी । बोली—तू जब तब यही बातें यों किया करती है मुन्दरी ! उसने जो भी जाहा कहा । इसके किए तू क्यों छाड़ मारती ! और मुझको ही तू क्यों बेकार सुनाती है ! वह बोधी आदमी है, मुन पावेंगे तो क्या कहेंगे, बोक !

मुन्दरी कुछ हँसकर बोली—बाबूजी मुन ही क्यों पावेंगे बहुरानी ! वह भी जोर बातमें बात है !

विराजने कहा—बातमें बात नहीं है वह क्या मुझे तू समझावगी ! इसके किछ बो हाँ-हवाकर समझ हो गया उसकी बात ठटानकी जरूरत ही क्या है ! मुन्दरी सटते कह उठी—कहाँ हो-हवा गया बहुरानी । बक भी तो मुझे मुसा से ब्याकर

विराजने क्रोशित होकर कहा—तू गन् ही क्यों ! नौकरी मेरे यहाँ करेगी और



जो कोर बुझबंगा उसके पास बोझी जायगी ! तुने ही ता कहा था कि उस दिन य लोग कलकत्ते चले गये ?

सुन्दरीने कहा—सब ही तो कहा था बहुरानी । दो महीने हुए थे चले गये थे, लेकिन अब देखती हूँ सब आ गये हैं । और मेरे जानेकी बात भी कटती हो बहुरानी, सो सिपाही बुझाने आता है सब 'नहीं' कैसे कर हूँ ? इत गैरकी बहू जमींदार हैं और हम लोग हैं तुलसी परदा । किस बख्तर उनका हुकुम न मानूँ ?

विराज क्षणभर सुन्दरीकी ओर साकती रही, फिर बोली—ये क्या इत गैरकी जमींदार हैं ?

सुन्दरीने हँसकर कहा—हाँ बहुरानी । यह म्हाल उन्होंने ही लीया है और वही तम्बू बनाकर ठहरे हैं । सब कहती हूँ बहुरानी, सचमुच राजकुमार हैं । आह कैसा सुन्दर नाक-नकशा है ! आँखें चहरा

विराज एकएक रोककर बोली—ठहर-ठहर, चुप रह । यह सब ता मने तुझसे नहीं पूछ । यह बता कि तुझसे क्या कहा ?

अबकी सुन्दरी मनमें लौल उठी लेकिन उस भावको छिपाकर धीमेके स्वरमें बोली—बात और क्या होगी बहू वही तुम्हारी ही बात ।

'हूँ' कहकर विराज चुप हो रही ।

यहाँपर बात अग्रे उमस्य देनी होगी । दो साह परस यह म्हाल कलकत्तेके एक जमींदारके हाथ आया । जमींदारका छोटा बेटा राजेन्द्रकुमार बड़ा बदचलन और उदरु है । उसके साथ उसे जमींदारीके काम-काजमें शिथिल और संयत करनेके लिये, लासकर कलकत्तेके बाहर रखनेकी मंशास, उसके ही किसी इलाकेमें भेजना चाहते थे । परसाल वह महा आया लेकिन कलकत्तेका मकान न होनेसे उसप्रामके उस पार, प्रॉक्टिक रोडके किनारे एक आमके बागमें तम्बू गान्धर रक्ता था । लेकिन जिस दिन वह यहाँ आया उस दिनसे किसी काम-काजके पास भी नहीं पड़ता । उसे पधिसीका शिकार करना बचता था । ठिठकीकी पोतल पीठपर बाँधे कन्दूक कम्पैस रंग पार पौन शिकारी कुत्ते साथ लिये वह चारे दिन नदीके किनारे किनारे पंखमें चिड़ियोंका शिकार करता फिरता था । छः महीने हुए, एक दिन राण्याके समय, गोशूक्ति-बंदाकी सुन्दरली आगस भनु रजित, मीमी पीठी पहने विराजके ऊपर उमचो नजर पग गह । विराजके परके

पलक यह घाट पारों ओरसे बड़े-बड़े भीर बने दृष्टिसे डका हलके क्षरण किसी तरहसे हिलाई नहीं देता था। बैलरुके नहर-भाकर, पानीसे मग धड़ा उठाकर विराजने जैसे ही आलें ऊपरको उठाई कि इस बचनकी आदमीसे उतकी पार आलें हो गई। राजेन्द्र पलककी ओर करते-करते इस तरह आया था। पलकके ही लम्बा-छोटा लगे होकर उतने विराजको देखा। उसे जैसे एकदम यह विचार नहीं हुआ कि मनुष्यके भी इतना रूप होता है। वह इस ओरसे आलें न पेर सका। विर-विस्तार-सा उकड़की लगाकर, इस अनुभव, अतीत समयको मान्न होकर निहारने लगा। विराज किसी तरह भीगी चोटीसे डका निवारण करके तेजीके साथ पल हो। राजेन्द्र लकड़में आकर कुछ देर और भी लड़ा रहा फिर धीरेसे झेड गया। वह यही सोचते-सोचते गया कि यह कैसे सम्भव हुआ। इस संगठके बीच, इस लीटते गीतमें, कहीं कोई मन्त्र आदमी नहीं खड़ा रहना अवश्य रूप जैसे भीर कहींसे आ गया। इस मध्यम लीटने-मन्त्रीका धीरे-धीरे भी उली रातको उसने पता लगाकर प्राप्त कर लिया और उली यहीसे उलके दिव्यमें एक बड़ी विन्ता बच गई, बूतल को लपका ही नहीं रहा। इसके बाद और भी दो दफे विराजने उलका सामना हुआ।

उस दिव विराजने पर पहुँचकर मुन्दरीको लुकाकर कहा—घाटपर तो आ मुन्दरी, कहीं पेर साइबके मन्त्रपर को आदमी लड़ा है, उसे मना कर दे कि फिर कभी हमारी बगियाँमें पेर न रखे।

मुन्दरी मना करने यह, लेकिन पल पहुँचते ही हतबुद्धि हो गई। बोली—बाबूजी आप !

राजेन्द्रने मुन्दरीके मुँहकी ओर देखकर पूछा—तुम मुक्त परधानती नहीं !

मुन्दरीने कहा—बाबूजी आनकी मन्त्र कौन नहीं परधानता !

आनती हो, मैं कहीं खड़ा हूँ !

मुन्दरीने कहा—आनती हूँ।

राजेन्द्र बोला—क्या आज एक बार कहीं आ सकती हो ?

मुन्दरीने लज्ज देसीसे फिर लुकाकर धीरेसे पूछा—किसलिए बाबूजी !

कुछ काम है, क्या जाना। यों कहकर क्यूँक क्यूँक रनकर, वह पला गया।

इसके बाद कितनी ही दूधे सुन्दरी छिपकर, सम्राटमें उस पारकी चर्मीदार कचहरीमें गई है कितनी ही बातें की हैं, मगर वहाँसे झूट ब्याकर एक आष हथारेके सिवा यह कोई भी बात विराजके सामने उठानेकी हिम्मत नहीं कर सकी। सुन्दरी कुछ बेवकूफ न थी। यह विराजको पहचानती थी और अच्छी तरह जानती थी कि यह बहू बाहरसे चाहे कितनी मधुर और कोमल दिखार् देती हो, लेकिन इसकी मीसरकी प्रकृति बड़ी उग्र और फलरकी समान है। विराजकी देखमें एक चीज और थी—यह था उसका कठिन अपरिमेय साहस। चाहे आदमी हो, चाहे साँप-बिच्छू और चाहे भूत-मेढ, सब किससे कहते हैं वह जानती ही न थी। एक कारण यह भी था, जिससे सुन्दरी उसके सामने मुँह न खोल सकी थी।

चूस्के मीसर लकड़ी सरकाकर, सुन्दरीकी ओर मुँह करके विराजने कहा—अच्छ सुन्दरी तू तो कितनी हो बार वहाँ गई-बारी है, कितनी ही बातें भी की हैं लेकिन मुझे तो तुने एक भी बात नहीं बतायी।

सुन्दरी पहले तो हठमुद्रि हो गई लेकिन फिर ही सँमझकर बोली—हुम्ल किस्ने कहा बहूपनी कि मैं बहुत-सी बातें कर आई हूँ !

विराजने कहा—किसीने नहीं—मैं आप ही जानती हूँ। मेरे किरमें पीछेकी ओर और भी दो आँखें, दो कान हैं न। बता कुछ इनाममें तू किस्ने रुपये खर है ? दस रुपये ?

सुन्दरीके मुँहसे बोल नहीं निकला। उसके चेहरपर एक पीछी छाया-सी छा गई। चूस्केकी धुँधली रोशनीमें भी विराजने उस देर छिया और यह भी समझ गई कि सुन्दरीका कोई ब्याज नहीं सज रहा है।

विराजने कुछ मुस्कराकर कहा—सुन्दरी तेरा इतना बड़ा कलेज नहीं हो सकता कि तू मेरे सामने मुँह लीलाकर कुछ कह सके। तू क्यों बेकार आ-आकर, रुपये लेकर, अन्तमें बने आदमीके प्रोपका शिकार बनना चाहती है ? क्या करते इस घरमें पैर न रखना। तेरे हाथका पानी पैरोंपर डालनेमें भी मुझ पिन माहूम होती है। इतन दिन तरी सब बातें नहीं जानती थी, पर दो दिन पहले वह भी मुन की हैं। अब तेरे आँखलमें जो दस रुपयेका नोट पैसा है यह ब्याकर पर आ।

गरीब है कहीं काम पँपा करके पेट पाले। अपनी जपानीमें जा कर मुझी

है यह तो फिर नहीं सकता लेकिन अब बार बार आरमियोंका सम्बन्ध न कर।

सुन्दरी कुछ कहना चाहती थी, परन्तु उसकी बीम मुँहमें ही रुकलड़ाकर रह गई।

यह भी विराजने देल लिया। देखकर कहा—कूट बोझनेसे अब क्या होगा! ये सब बातें मैं किसीसे नहीं कहूँगी। पहले मैं नहीं समझती थी कि ठेके काँचकमें बैठा यह नोट कहाँसे आया; पर अब सब समझ गई हूँ। वा, आकसे तुझे बचाव दे दिया, कञ्छे में परमै न घुसना।

यह कहा! सुन्दरी घोर विस्मयसे आबाहू होकर बैठी रही। इस करते उसका बानाश्वनी ठठ गया। यह उसकी समझमें एक अलम्बव बात थी और उसके मनमें किसी तरह नहीं बैठती थी। यह बहुत दिनोंकी राखी है। उसने विराजका ब्याह देख है, दूँबीका पाक-पोचकर बड़ा किया है, पर माझकिनके साथ तीर्थयात्रा कर आई है। यह भी इस परिवारकी एक व्यक्ति है। आज उसीको विराजने घरमें न घुसनेको कह दिया। घोर और अभिमानसे उसका मुख भर आया। धक्-भरमें फिटनी ही ठगई ब्याव, फिटनी ही बात उसकी ज्ञानपर चोड़ आई, लेकिन मुँहसे एक शब्द भी न निकाल सकी, बिहस-सी होकर लकड़ी रह गई।

विराजने मन-ही-मन सब समझ लिया। लेकिन वह चुप ही रही। मुँह फिटाकर देखा, फटीसीका पानी बकाकर कम हो गया है। पस ही एक पीतलकी कञ्छीमें पानी था। जोड़ देकर उसके पास गई। लेकिन न जाने क्या सोचकर अचानकमें फिर होकर अँध राख दिया और कहा—जा तेरे हाथका पानी घूँसे भी उनका अविष्ट-मर्ममज होग। तुने इसी हाथसे रुपये किये हैं।

सुन्दरी इस विरसकारका भी बचाव न दे सकी।

विराजने एक बूछी काकटेन बकाई फिर कञ्छी उठाकर रातके पनघोर अन्धकारमें, वह आपकी बागनाके भीतर होकर अँकड़े ही नहींसे पानी बानेके लिए पक रही।

विराजके जले जानेपर एक बार सुन्धारीके मनमें आया कि वह भी उसके पीछे-पीछे आवा लेकिन वह अन्धकारपूर्ण रँकरी बँतलकी राह, धारों ओरकी घाथीर, सप्तग्रामके जाने-अजाने सम्पाधि-स्थल, वह पुराना बरगदका वृक्ष, वे सब इस उसकी आँसोंके आगे फिर गये। मरते उसके रोंगटे खड़े हो गये, तिरके

केपठक कोर उठे—अच्छ आवाजमें 'अरी मैवारी' कहकर वह लम्प होकर बैठी रही ।

५

हो दिन बाद नीलम्बरने पूछा—तुम्हारी नहीं मिलाह पड़ती विराट !

विराटने कहा—मैंने उसे क्याव दे दिया है ।

नीलम्बरने परिहास समझकर कहा—अच्छ किया । लेकिन बताओ तो उसे हुआ क्या है !

विराटने कहा—होगा क्या मैंने सबकुछ ही उसे छुड़ा दिया है ।

फिर भी नीलम्बर इस बातपर विश्वास नहीं कर सका । बहुत ही अचानक जाकर, उसके मुँहकी ओर धाकके हुए बोला—इसको कैसे छुड़ा रोमी ! क्या कितना ही कष्ट करे, वह भी तो खराब करे कितने दिनोंकी पुरानी दासी है उसने क्या किया था !

विराटने कहा—मैंने अच्छा समझकर ही छुड़ा दिया है ।

नीलम्बरने कुछ विचकर कहा—यही तो पूछा है कि कैसे अच्छा समझा !

विराट स्वामीके मनोभावकी समझ गई । पुनःपुनः इसपर उनका मुँह टाकते रही, फिर बोली—मैंने अच्छा समझा, छुड़ा लिया । अब तुम अच्छा समझो तो कुछ बताना । कहकर, उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही वह थोकेमें चली गई ।

नीलम्बरने समझा कि विराट किद गद्ग है, इसलिए फिर कुछ नहीं कहा । कोई कष्ट भर बाद बीरम्बर, दरवाजेके बाहर वह होकर धीरेसे गया—तुम्हारे छुड़ा तो दिया लेकिन काम कौन करेगा !

अबकी विराट हँस पेरकर बैठ गयी । उसके बाद बोली—तुम !

नीलम्बरने भी हँसकर कहा—तो बताना जहाँ रहने मान-बी काई ।

हाथकी कलछी झनके पेंक, हाथ चौकर, पास बंधकर पलिके चरणोंकी छाया में झुकाकर विराटने कहा—तुम वहींसे जाओ । अगर-सी होती करना भी है । मुनवे ही ऐसी बात वह उठती हो, जिसे जानन मुनना भी पेर है ।

नीलाम्बरने कुछ सोंपकर कहा—चाह यह भी जानते सुननेत था होता है !  
समसमें नहीं आया विराज, कि तुम्हें काहेसे पाप नहीं होता है ।

विराजने कहा—तुम सब समझते हो । न समझते तो इतने काम करते बड़  
बर्तनोंकी ही बात न उठाते ।—आओ, देर न करो स्नान कर आओ रसोइ  
देवार हो गई है ।

नीलाम्बर दरवाजेकी थोखटपर बैठ गया और बोला—सबमुच कहा विराज  
परका काम-बसा कौन करेगा ?

विराज थोख उठाकर बोली—काम है क्यों ? पूछी नहीं है, छोट बस्य भी  
नहीं हैं । काम न करनेसे मैं भी तारे दिन बैठी रहती हूँ । अच्छी बात है व  
काम न करनेमा तब तुमसे कह दूँगी ।

नीलाम्बरने कहा—ना विराज, यह न होगा । नौकर-चाखीका काम मैं  
तुमको नहीं करने दे सक्या । मुन्दरीने कोइ कसूर नहीं किया केकड़ तब  
बचानेके लिए तुमने उसे बख्सा कर दिया है । सोओ सब है कि नहीं ?  
विराजने कहा—ना, सब नहीं है । उसने सबमुच अपराध किया है ।  
नीलाम्बरने पूछा—क्या अपराध ?

विराजने कहा—वह मैं नहीं बताऊँगी ।—आओ, बैठे न खो, स्नान  
कर आओ ।

इतना कहकर विराज भी दरवाजेसे बाहर हो गई । बोली देर बाद झोट  
आकर, नीलाम्बरको उसी तरह बैठे देखकर बोली—क्यों गये नहीं ? अम्बरक  
बैठे हो ?

नीलाम्बरने कोस्य स्वरमें कहा—आता हूँ, लेकिन विराज, यह तो मुझसे  
बरपाय न हो सक्या । मैं तुमको तंजहति कैसे करने दूँगा ।  
यह मुनकर विराज कुछ प्रसन्न नहीं हुई । स्वप्नर पणिकी ओर देखकर  
बोली—क्या करोगे, क्या मुनूँ ?

नीलाम्बरने कहा—देखो, मुन्दरी को नहीं रखना चाहती तो और किसीको  
रखो । तुम घरमें अकेली कैसे रहोगी ?

विराजने कहा—चाहे जैसे रहूँ, मगर अब किसीको नहीं रखूँगी ।  
नीलाम्बरने फिर भी कहा—नहीं, यह न होगा । अबतक बिन्या हूँ, मगर

मान-अपमान भी है। मोहल्लेके लोग मुनकर क्या करेंगे ?

विराज कुछ प्यारसे प्यार बैठ गई। बोली—मोहल्लेके लोग मुनकर क्या करेंगे, अल्लमों तुम्हें यही टर है। मैं कैसे रहूँगी, मुझे कह होगा, वह सब सिर्फ एक छल है।

लोग और आश्चर्यसे बौंभें उठाकर नीलावरने कहा—छल है ?

विराजने कहा—हाँ छल है। आजकल मैं सब जान गई हूँ। अगर मैं मुँहकी ओर देखते, मेरे बुद्धपर प्यान देते, मेरी एक भी बात सुनते, तो आज मेरी वह बच्चा नहीं होती।

नीलावर ने कहा—मैंने तुम्हारी एक भी बात नहीं सुनी ?

विराजने और देकर कहा—ना, एक भी नहीं। जब ही कुछ कहती हूँ, तभी कोई न कोई छल करके टक देते हो। तुम केवल यही सोचते हो कि तुम्हें प्यार होगा तुम्हारी बात न खोए, बुनियातें तुम्हारी बदनामी होगी। अगर कभी एक बार मैं सोचा है कि मेरा क्या होगा ?

नीलावरने कहा—अरे कपड़ी मागिनी तुम न होगी ? मेरी बदनामीसे तुम्हारी बदनामी न होगी ?

कहकी विराज एकदम झोपित हो उठी। तीली होकर बोली—देखो, वे सब बच्चोंको फुलवानेकी बातें हैं। जब मेरी उम्र ऐसी बालीसे बढ़कनेकी मरी है।

दमरूप पुन रहकर फिर कह उठी—तुम केवल अपनी ही बात सोचने दो, और कुछ नहीं सोचते—वो बुद्धसे आज यह बात मुझ मुँहसे निकलनी पड़ रही है। आज तो तुमको अपने परम मुक्तको मीथ्यानीका काम करने देनेमें आज आती है लेकिन अगर वह तुमको कुछ ही आय तो फसों ही मुक्तको बुद्धोंके पर आकर या मुझे अपने लिए यही बालीका काम करना पड़ेगा। हाँ यह जरूर है कि वह तुमको अपनी आँखोंसे देखना न देगा। जानोंसे मुनक भी मरें पड़ेगा इसलिए तुमको आज्ञा भी न होगी। मानना बिना करनेकी मौ अवसर नहीं। यही न ?

नीलावर गरमा हल अभिषेकका कोई अभाव न दे सका। कुछ देरक गुपचाप परतीकी ओर देखता रहा। फिर बौंग उठाकर पीरसे बाल्य—वह तुम्हारे मनकी बात कभी नहीं है। तुमको बुद्ध पड़ना है, वह बुद्धा है, इलीसे

शेषमें कह रही हो। तुम अपनी तरफ जानती हो कि मैं स्वामी बैठकर भी तुम्हारा कष्ट सहन नहीं कर सकूँगी।

विराजने कहा—पहले मैं भी ऐसा ही समझती थी। लेकिन जैसे-कैसे कष्टों से बिना कष्ट क्या है, यह ठीक-ठीक समझमें नहीं आता, वैसे ही मरौकी भाषा समझा भी। समझ आये बिना उठकर भी ठीक-ठीक जान नहीं होता। लेकिन इस दोषहरमें मैं तुमसे हाथड़ा नहीं करना चाहती। मैं जो कहती हूँ, करो। जाओ, ज्ञान कर आओ।

‘आता हूँ’ कहकर नीलम्बर वहीं चुपका बैठ गया।

विराजने फिर कहा—पूँजीके व्याहको तो साफ होनेको आते हैं। उसके पहलेसे आकतककी सब बातोंपर मैंने उस दिन मनमें विचार कर देखा है—तुमने मेरी एक भी बात नहीं सुनी। जब जो कुछ मैंने कहा उसे तुमने काट दिया और अपने मनका काम करते गये। आहमी अपने बरके नीकर-बाकरकी भी एक बात रख गया है, अगर तुमने वह भी नहीं रखी।

नीलम्बर कुछ कहने ही चाहा था कि विराजने बीचमें ही रोककर कहा—ना—ना मैं तुमसे बहस नहीं करूँगी। कितने बड़े गुप्त और पुरातन इतिहास नाम केन्द्र मैंने कसम खाई है कि तुमसे कोई बात नहीं करूँगी। आज अगर एका एक बात न उठ पड़ती तो तुम वह सब मेरे मुँहसे न सुन पाते। जब बाद तुमको बाद न आये बचपनमें मैं सिर-दर्दसे एक दिन तो गई थी, दार दोखनेम हो हो गई थी, इससे तुम मुझे मारने लगे थे। तुमको यह विश्वास नहीं हुआ था कि मेरी तबीयत लज्ज है। उसी दिनसे मैंने कसम खाई थी कि अपनी बीमारीकी बात कभी तुमसे नहीं करूँगी। आजकल मेरी वह कसम कभी नहीं टूटी।

नीलम्बरके सिर उठाते ही दोनोंकी आँखें मिल गईं। नीलम्बर सहसा उठ आकर, विराजके दोनों हाथ बकड़कर, मकपाये हुए स्वरमें कह उठा—यह न होम विराज। तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है। बताओ, क्या बीमारी है? तुम्हें क्याना ही होगा।

जीसे अपने हाथ बुझानेकी चेष्टा करते हुए विराजने कहा—छोको, बगला है।



नीलावरने कहा—क्याने सो, कताओ क्या हुआ है !

विराजने लुपी पैसी हँसकर कहा—कहाँ, कुछ भी तो नहीं हुआ । मर्दी-प्यगी हूँ ।

नीलावरने विस्वास नहीं हुआ । बोला—नहीं, खंसी नहीं हो । होखी तो कई रात सुपनी रातकी चर्चा करके मेरा भी न हुआती—लातकर भित्तके सिरे में अनेक बार धमा मीम बुझा हूँ ।

“अच्छा अब कभी न कहूँगी” कहकर विराज अपनेको सुझाकर, कुछ हटकर बैठ गई ।

नीलावर उठकर मटकन सम्झ गया, किन्तु फिर कुछ बोला नहीं । दो-तीन मिनट चुपचा बैठा रहा फिर उठकर चक पिया ।

रातको दिया जलाकर विराज थिड़ी सिमस रही थी । नीलावर फलामर केरा चुपचाप देख रहा था । एकएक बोझ उठ्य—इत कममें तो तुमको तुम्हारा रातु भी कोई होय वा अस्वस्थ नहीं क्या लकटा लेकिन तुम्हारे पूर्व-कर्मका पाप था नहीं तो दया कमी न होता ।

विराजने फिर उठाकर पूछा—क्या न होता ?

नीलावरने कहा—तुम्हारा सम्पूर्ण मन और मन भाषामें राखरानीके बोझ ही क्यावा था परन्तु

विराजने पूछा—परन्तु क्या ?

मगर नीलावर चुप रहा ।

अबसर उठरानी प्रतीक्षा करनके बाद विराजने रुत स्वयं कहा—वह राखर भाषा तुमको क्या है मये ?

नीलावरने कहा—बोल्न-कान ही तो लयीको भाषापर रखर है बाटे हैं ।

“हूँ” कहकर विराज फिर थिड़ी किन्ने लगी ।

दसमर चुप राखर नीलावरने कहा—उत भिन कहा था कि मैंने तुम्हारी कोर रात नहीं सुनी बरी राखर लक है । लेकिन क्या वह अदृश्य मेरा ही होय है ?

विराजन फिर फिर उठाकर देखा और कहा—अच्छा हा मेरा होय ही क्या हो ।

नीलावरने कहा—तुम्हारा दोष ही नहीं दिखता सूर्योदय । लेकिन आज एक रात बात कहूँगा तुम अपने साथ अन्य शिष्टोंकी तुम्हारा करके ही देखती हो लेकिन यह एक बार भी नहीं सोचती हो कि तुम किसी कितनी शिष्टों ऐसे तुम्हारे मूल्यके फलें पड़ी हैं । वही तुम्हारे पुण्यके जन्मका पाप है । नहीं तो तुम्हें तुम्हारे-कदम रखनेकी बात ही नहीं थी ।

विराज चुपचाप भिन्नी किलती रही । जान पड़ता है, उसने मनमें विचार कि इसका क्या न है । लेकिन उससे रहा न गया । मुँह मुझकर पूछा—तुम क्या यह जानते हो कि ये रात रातें तुम्हारे में कुछ होती हैं ?

नीलावरने पूछा—कौन बातें ?

विराजने कहा—वही, जैसे मैं राजधानी हो सकती थी, कि तुम्हारे हाथमें पड़कर ऐसी हो गई हैं । तुम आज समझते हो कि यह रात तुम्हारे मुँह प्रकट होती है, या जो ये बातें कहता है, उसका मुँह देखनेको भी बाधता है ।

नीलावरने देखा विराजका शेष बहुत बड़ गंवा है । वह नहीं समझता था कि बात इतनी बड़ आयगी । इससे वह भीतर ही भीतर कुण्ठित और संकुचित हो उठा । लेकिन एकाएक वह वह भी न सोच सका कि क्या कहकर उसे प्रसन्न करे ।

विराजने कहा—रूप, कर्म, कर्म । तुम्हारे-तुम्हारे जान एक गये । लेकिन और जो लोग कहते हैं, उनकी नजरमें विशेषकर आज रात वही बड़ गंवा है । पर तुम तो मैं पति हो, बहुत ही छोटी अचरवाले तुम्हारे आध्वनमें इतनी बड़ी हुई हैं । तुम्हो भी क्या इससे अधिक तुम्हें और कुछ नहीं देना पड़ता ? तुम्हें क्या वह रूप ही सके बड़ी थी है ? तुम क्या समझकर वह बात जानवर लयते हो ? मैं क्या अपना रोजगार करती हूँ, या इसी रूपमें तुम्हो देना रखना चाहती हूँ ?

नीलावर बहुत डर गया । सवरकर वह उठा—मा न्या, वह नहीं

विराज भीतर ही शोक उठी—ठीक वही । इसीसे मैंने एक दिन तुम्हें पूछा था कि अगर मैं काबू-कुम्हिल होती तो तुम मुझे प्यार करते या नहीं, बार है ।

नीलावरने फिर विचारकर कहा—बाद है । लेकिन उस समय तुम्होंने तो कहा था

## विराज पाहु

विराजने कहा—हाँ, कहा था कि तुम काकी-कुत्तिल होनेपर भी मुझपर प्यार करते, क्योंकि मुझसे विवाह किया है। मैं गिरिराजकी बेटी और गिरिराजकी बहू हूँ। मुझे ये बातें सुनाते तुमको लग्न नहीं लगती! पहले भी तुमने यह बात करी थी—बोझते-बोझते श्रेय और अभिमानसे उसकी आँखोंमें आए भर आये और ये हीपड़े प्रकाशमें समझने लगे।

यह कहते ही नीलम्बरने खट पट्टासे उठकर उसका हाथ पकड़ लिया। विराजने स्वयं ही एक दिन कह दिया था कि हाथ पकड़ लेते-हैं फिर श्रेय नहीं रहता।

नीलम्बरको एकाएक बड़ी बात बाद था गन्। उसने एकाएक उठकर विराजस्य बाहिना हाथ अपने दोनों हाथोंमें छे लिया और पुनःपुनः उसकी घाम बैठ गया।

विराजने काँपे हाथसे अपनी आँखें धीक झाँकी।

उस रातको बड़ी देखकर बानों प्राणी पुनःपुनः आगते रहे। नीलम्बरने एकाएक पड़ीकी ओर मुँह मुझकर मीठी बाणीसे पूछा—आज तुम्हें इतना श्रेय क्यों था वर विराज?

विराजने कहा—तुमने पैली बात क्यों करी?

नीलम्बरने कहा—मैंने तो कोई बुरी बात नहीं करी।

विराज फिर बिगड़ उठी। अचिर भावसे बोली—फिर भी कहत हो कि बुरी बात नहीं करी! बहुत बुरी बात है! आपस्य राराज! इसीके लिए तो मुन्दरीको

कहत-कहते विराज रुक गई। पुन हा रही।

दमस्त पुन खरकर नीलम्बरने कहा—ईश्वर इली आपराधपर तुमन मुन्दरीको ज्वाब दे दिया!

ईश्वर हूँ कहकर विराज पुन रही।

नीलम्बरने भी फिर कुछ नहीं पूछा।

विराज तब आप ही आप कहने लगी—देगी, फिर न कर। मैं और मुन्दरीकी कभी मर्ती हूँ मन्ना-मुन लव समझती हूँ। उम्मे पुझा बने जावक काम किया था इलीसे उमे पुझा दिया। क्यों पुन दिया क्या बात हुए यह सब बातें

अगर तुम मर्दाने न मुन पाई तो न लड़ी !

मीरबख्श ने कहा—जा अब मैं मुनना भी नहीं चाहता । यों कहकर एक टंठी लौंछ डेकर, बीरेसे करपठ बरछकर, मीरबख्श लौ रहा ।

\* \* \*

बीरबारेके सोनवार दिन बाद ही छोटे भाइ बीरबख्शने बीरबसे बगल आर बौचड़ी लड़ी लड़ी करके अपना हिस्सा बख्श कर लिया था । दक्खिनकी ओर वृक्ष दरवाजा खोड़ लिया था और उसके सामने एक छोटी-सी बैठक बना ली थी । अपने परको बख्शी तरह लगाकर—मुँह की तरफ लाफ-मुफ्त बनाकर वह बड़े आरामसे रह रहा था । यों तो पहले भी वह बड़े माइसे अधिक बेचकता चाहता नहीं था पर अब सारे ही सम्मान विस्फुट हो गये थे । इस तरह विराजने प्रायः दिनभर बकैले ही रहना पड़ता था । मुँह की ओर जानेके बावसे वह काम बन्ना लौ उस करना ही पड़ता था उसके बख्श परसे जो काम दली करती थी उन कामोंके बीरबख्शके भारे फल-पहोसके बीरबकी नजर बचाकर वह एकान्तमें कर लेती थी और इसीलिए उसे अधिक पत गयेक बख्श पड़ता था ।

एक दिन इसी तरह वह काम कर रही थी, इसनेमें एकएक उस तरहसे, लड़ीकी लफिसे, फिलीने बीबी और मीठी आवाजसे पुकारा—बीबी, पत लौ बहुत हो गई है ।

विराजने बीरबख्श विर उठमा । पुकारनेवालेने देखी ही आवाजमें धीरे धीरे कहा—बीबी मैं हूँ मोहिनी ।

विराजने विस्मित होकर कहा—कौन छोटी बहू ? इसनी रह गय ?

मोहिनीने कहा—हैं बीबी मैं हूँ । जरा पास आओ ।

विराज उठकर लड़ीके पास गए । छोटी बहूने धीरेसे पूछा—बेठकी क्या हो गये ?

विराजने कहा—हैं ।

मोहिनीने कहा—बीबी, एक बात है, लेकिन कह नहीं सकती । इसना कहकर वह मुन हो गई ।

उसके कण्ठका मर मुनकर विराजको माक्स हुआ कि छोटी बहू ये रही है ।

विनम्र होकर पूछा—क्या हुआ छोटी बहू ?

मोहिनी दूरतः क्वाक न दे सकी । ध्यान पड़ा वह बीच-बीच में बाँट दीछती हुई अपनेको संभाल रही है ।

अब पचराकर विराजने पूछा—क्या हुआ छोटी बहू, बोझिल क्यों नहीं ?

अबकी मर्त्ये हुए गले में मोहिनीने कहा—बेठकी के ऊपर नाखिय हुई है ।

कल ठले क्या करते हैं सम्मन निकसेगा । क्या होगा बीबी ?

विराज डर गई लेकिन उसने अपने मनका माथ छिपाते हुए कहा—सम्मन निकसेगा तो इसमें डरनेकी क्या बात है छोटी बहू !

मोहिनीने पूछा—वो कुछ डर नहीं है बीबी ?

विराजने कहा—डर क्या है । लेकिन नाखिय किसने की है ?

छोटी बहूने कहा—धोका मुन्नीने ।

विराज तबभर सपाटे में आकर पड़ी रही । फिर बोली—हाँ मैं सब समझ गई अब और कहनेकी जरूरत नहीं । मुन्नीका पकन्य उनपर है न इसीसे जान पड़ा है उसने नाखिय कर दी है । अगर इसमें डरनेकी बात नहीं है छोटी बहू । इसके बाद दोनों ही चुप हो गई । कुछ देर बाद छोटी बहूने कहा—बीबी

मैंने तुमने कमी अधिक बातचीत नहीं की । मैं बात करने योग्य भी नहीं हूँ । क्या आज अपनी इस छोटी बहनकी एक बात मानीगी ?

उसकी आवाजसे ही विराजका हृदय जाई हो गया था । अब और अधिक जाई होकर बोली—क्यों न मानीगी बहन !

मोहिनीने कहा—वो फिर क्या इसर हाथ बढ़ाया ।

विराजने हाथ बढ़ाते ही एक छोटे कोमल हाथने उसी ठड़ीकी छँकने बाहर निकलकर उसके हाथमें एक लोनेका दार रग दिया ।

विराजने विनम्र होकर कहा—यह क्या है रही हो छोटी बहू ?

छोटी बहूने आवाजको और भी धीमी करके कहा—इसे पैपकर का गिरा रगकर, जिन तरह हा उसका कबा चुका हो जीजी ।

जैसे परने लोका भी म का ऐसी इस अकरमात् बिना भोगें मिटनेवाली गानुभूतिने कुछ देरके लिए विराजको अभिमुख कर दिया । उसके मुगसे फोरे बात न निकल सकी । लेकिन “माती हूँ बीबी” कहकर अब छोटी बहू बहाते

इतने बगी सब बह बर्दीस पुकार उठी—आमो नहीं छोटी बहू, मुना ।

छोटी बहूने स्नेह आकर पूछा—क्यों बीबी ?

विराजने टहोकी उठी छविसे गुरल बह हार उस तरफ फेंककर कहा—छी पेता न करना चाहिए ।

छोटी बहूने हार उठाकर शोमके स्वरमें पूछा—क्यों बीबी ? क्यों न करना चाहिए ।

विराजने कहा—छोटे बच्चा सुनें तो क्या करेंगे ?

बहूने कहा—लेकिन वह तो सुन न पावेंगे ?

आज न सही, दो दिन बाद तो उनको मासूम ही हो आवगा । तब क्या होगा ?

छोटी बहूने कहा—उनको कमी न मासूम होगा बीबी । परसाक मेरी मौं मरते समय छियाकर मुझको यह हार दे गई थी । सबसे मैंने इसे न कमी पहना और न कमी बाहर निकाला । तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ बीबी इसे ले लो ।

उसकी इस कातर प्रार्थनाको सुनकर विराजकी आँखोंसे आसू गिर पड़े । उसने स्तम्भ होकर आश्चर्यके साथ अपने मनमें इस नारीके व्यवहारके साथ, जिससे एक-माँसका कोई सम्बन्ध नहीं, धरके वो छोटे-से भाइयोंके बरतावकी तुलना करके देखा । फिर हफ्तेमेंसे आँखें पोंककर, ईंचे हुए गलेसे कहा—आजकी यह बात मरते दम तक बाद रहेगी बहन । लेकिन वह हार तो मैं ले नहीं लूँगी । इसके सिवा छोटी बहू, किसीको अपने पतिसे छियाकर कोई भी काम नहीं करना चाहिए । इसके तुम्हें और मुझे, दोनोंको पापका भागी होना पड़ेगा ।

छोटी बहूने कहा—तुम सब बातें नहीं जानती हो, इसीसे कहती हो । धर्म-अधर्मका लयाक मुझको भी तो है बीबी । मैं ही मरते समय क्या बचाव दूँगी ?

फिर एक बार आँखें पोंककर, अपनेको सँभालकर विराजने कहा—मैंने और सबको पहचाना छोटी बहू, केवल तुमको ही इतने दिन तक नहीं पहचान ली । लेकिन तुम्हें मरते समय कोई बचाव न देना पड़ेगा । वह बचाव इसी बीच तुम्हारे अन्तर्बामीने आप ही छिल दिया है । अब आपने, बहन, बहुत रात हो गई, आकर लो लो । यों कहकर, कुछ कहनेका मौका न देकर, विराज बस्तीसे बहोते हट गई ।

सेफिन वह भीतर भी नहीं जा सकी। जैसे-जैसे बरामहमें एक किनारे धोतीका ऑनक बिछाकर सेव रही। इस समय शास्त्रि और मुकवमेकी बात उसे याद नहीं रही। उस बोझा बोझनेवाली कमरिन छोटी बहूकी करुणा और सहानुभूतिसे भरी बातें हीं उसे बाध जाने लगीं। उसकी भीलोंसे धरनकी तरह निरन्तर छळ पड़ने लगा। आज उसके हृदयमें लम्बे-लम्बे व्यथित पुल्ल इस बातका कचोड़ने लगा कि इतने दिनतक, इतने पाठ पढ़कर भी वह छोटी बहूको न पहचान सकी पहचाननेकी चेष्टातक नहीं की। यह लज है कि उसने पीठ पीछे कभी छोटी बहूकी निंदा नहीं की। सेफिन कभी अपनापैके साथ उससे कोई अच्छी बात भी नहीं की। बहुत दिनों विजयीकी जमाद जैसे दममरमें तीन अन्धकारको धीरे देती है वैसे ही छोटी बहू आज उसके हृदयको भीतरी तरहतक धीरे-धीरे प्रकाशित कर गई। सोचते-सोचते, रोते-रोते न ज्ञान कप वह छो गई। अज्ञानफ किसीका हाथ जमानेसे वह हड़बड़ाकर उठ पड़ी। उसने देखा नीलावर उसके सिंहाने बैठा हुआ है।

नीलावरने लोपमें कहा—भीतर बड़ो, रात जगमग जमात होनेकी है।

विराज कुछ नहीं कहा। वह स्वामीकी दीहका सदाय लेकर बुरबाप भीतर जाकर निबीचकी तरह पड़ रही।

## ६

एक साल बीत गया। अबकी साल कपमें ही ज्ञान भी फलक हाथ नहीं लगी। जिस घरतीरे जगमग सालमरतक भरण पोषण होता था उसमें बहुत-सी तो उभी मोहम्मके मोहानाथ मुल्लजीने लगीह ली है। रामेका फलतक पिरा हो गया है। यह भी सपरो आत्म हो गया कि छोटे म्याई पीलावरने ही गुप्त रूपने उसे सिगा दिया है। हकका एक पैल मर गया है। पोतर पूंसे बिदक गया है। विराजको अब किसी तरह देलकर कुछ-किनारा नजर नहीं आता। धीरे-धीरे श्रानको बहुत देरतक बीच रखनेगे जिस तरह एक अलस भय न अम्यन मन्द पाठनासे सारा धीरे-धीरे अबगन्न होने लगता है सारे संसारते टगडा मम्यन भी ऐसा ही हो गया। पन्ने विराज अब-तब हँसती थी, बोल-बात

निकाहपर हिन्दी मिस्से हूँ-मिस्सगी कर बैठती थी, लेकिन अब उस परमें ऐस्य कोई भी आदमी न था, जिससे वह बात करे। यहँतक कि अगर कोई मिस्से-मैस्से आता था उसका हास-वास अनन्य आहवा, तो भी वह मनमें बिड़ जाती है। वह स्वयम्भसे अमिमनिनी है, जब पाठ-गङ्गाके डोगेकी छाया रज बाकसे भी बिगड़ उठती है। गिरिस्त्रीके किसी काममें अब उसे धनिक भी उम्माह नहीं है, यह उसके कामकी देखनेसे ही मायूस हो जाता है। उसके कमरेका फर्श और बिछेना मैदा पड़ा है। कपड़े डोंगनकी अछगनीन अलमस्त कपड़े पड़े पड़े हैं। नील-बालू केतलीन छिछी पड़ी पड़ी है। छाह देकर कूड़ा कमरेके ही एक कोनेमें डगा देती है। उसे उठाकर बाहर फेंकनेकी भी धाक जैसे अब उसे अपने घरमें देने नहीं मिच्छी।

इसी तरह दिन कर रहे थे। इस बीचमें भीलानरने अपनी ब्रादी बहन हरिमतीको ले आनेकी दो बार कोशिश की, लेकिन उन कोशिशें नहीं मेस। पंद्रह दिनके लगभग हुए उसने एक पत्र लिखा था। हरिमतीके समुने उसका जवाबतब नहीं दिया। किन्तु गिरावके आगे उसका नामतक नहीं लिखा जा सकता। वह एकदम आग-बबूका हा जाती है। उसने पूँटीको पाठ-मसकर इतना बड़ा किया, माताके सान प्यार किया अगर आबकब उसका संसकतक उसके लिए बहर हा गया है।

आज सपे नीलानर गौबके हाकसानेसे सुन्य हुआ उवाव नूर बिले लीड और बरमें आकर बोध्य—पूँटीके समुने जवाबतब नहीं दिया। जान पड़ता है, इस बारकी गुगाबुआपर भी बहनको न देल पठम्य।

गिरावने काम करते-करते एक बार लिर उठाया, पापर कुछ कहना आता। लेकिन किन्तु कुछ बोले ही उठ गए।

उसी दिन दोपहरकी जब नीलानर मोहन करने बैठा था उसने बरिसे कहा—उसका नाम डेते ही गुम जा उठती हो। लेकिन उसने क्या कोर अपराध किया है ?

गिराव पाठ ही बैठी थी। नील उठाकर बोली—मैं जा उठती हूँ, यह चिन्ने करा ?

नीलानर बोध्य—कहेगा कौन ? मैं आप ही से देखता हूँ।



विराज क्षणभर पसिका मुँह ठाकती रही। फिर बोली—बेलत हा तो अच्छा है और ठठकर जाने लगी। नीलावरने डोककर कहा—मम बठाभी छान कर तुम ऐसी क्यों होती था रही हो। जैसे किछकुछ ही करत गर हो।

विराजने झूमकर नीलावरकी बात ध्यान देकर सुनी। बोली—वृथारुंके बदलनेसे ही बदल जाना पड़ता है और फिर बाहर हो गई।

इसके दो-तीन दिन बाद, तीसरे पहर, बाहरके बगड़ीमण्डपमें धरैका बैठ नीलावर गुनगुनाकर कुछ गा रहा था। विराज उसके पीछे आकर कुछ देर चुपचाप रही। फिर सामने आकर लड़ी हो यह।

नीलावरने सिर ठठाकर कहा—क्या है।

विराज सीसी नजरसे ठाकती रही कुछ जवाब न दिया।

नीलावरके सिर नीचा करते ही विराजने स्त्री आवाजमें कहा—अरु फिर सिर ठठाओ, देनू।

नीलावरने न सिर ठठाया न कुछ उत्तर ही दिया चुप रहा।

विराज पल्लेकी ही तरह कठोर भावसे बोली—जौन तो नूर काज है। क्या दम जमाना फिर झुक कर दिया।

नीलावर कुछ नहीं बोली—अरसे जौन नीची किये काठका पुतल-छा बैठ रहा। एक तो वह सदासे विराजसे डरता है दूसरे हफर कुछ दिनोंसे वह बाकदका ढेर बन गई है। यह अन्धावनेका भी कोई उपाय न था कि वह कब किस पड़ी कैसे ममक ठठेगी।

कुछ देरतक विराज भी स्थिर भावसे लड़ी रही। फिर बोली—यही ठीक है। गौजेका दम जमाना 'दम मोका बाबा' बन बैठनेका यही तो समय है। वह कहकर वह भीतर लगी गई।

यह दिन बीत गया। दूसरे दिन नीलावरसे नहीं रहा गया। छाब-संकोच सब त्यागकर सबेरे ही पीठावरको बाहरके कमरेमें बुला जाया और बोला—वृथारुंके ससुरने मुझे ही जवाबतक नहीं दिया। तुम भी एक बार कोशिश करके देखो शामर बहनको दो दिनोंके लिए घर का सको।

पीठावर मार्गके मुहकी ओर बेलकर बोला—तुम्हारे रहते मम में क्या कोशिश करैगा।

नीलांबर उसकी भूतला समझकर खींचते हुए हुआ। लेकिन मरुतक मन-  
का मग्न स्तिव्यकर बोला—पूरी जैसे मेरी बहिन है, जैसे ही तुम्हारी भी छो है।  
न हो, समझ को मैं मर गया—जब तुम ही बहैसे हो।

पीठांबरने कहा—जो सब नहीं है उसे मैं तुम्हारी तरह नहीं समझ  
सकता। इसके बजाय जब तुम्हारी पिढीका उत्तर नहीं दिया, तब वे मेरी ही  
पिढीका क्यों देने को।

नीलांबरने छोटे माहकी इस बातको भी सह किया। कहा—जो सब नहीं  
है, वही मैं समझ लेता हूँ। सैर, पैसा ही ली। इस बातपर मैं तुमसे झगड़ा  
करना नहीं चाहता। लेकिन मेरी पिढीका ब्याप तो वह इस्तिव्य नहीं देते  
कि ब्याहकी सब बातोंको मैं पूरा नहीं कर सका।—लेकिन इन सब बातोंके  
स्थि तो मैंने तुमको बुझाया नहीं है। वह बताओ कि जो करता हूँ, वह कर  
सकोते या नहीं।

पीठांबरने फिर विद्याकर कहा—नहीं। ब्याहके पहले मुझे पूछना था।

नीलांबरने कहा—पूछनेसे क्या होता।

पीठांबरने कहा—अच्छी सलाह ही देता।

नीलांबरके मध्यमें बाप-की बक लड़ी। उसके होंट खिंच गये। फिर भी  
उसने अपनेको संभालकर कहा—तो तुम यह नहीं कर सकोये।

पीठांबरने कहा—जी नहीं। जैसे पूँजीके सतुर, पैसा ही मेरे सतुर। वह  
गुबका है—बड़े हैं। वह जब मेकना नहीं चाहते, तब उनके स्थिबुध मैं कोई  
बात नहीं कह सकता। वह मेरा स्वभाव यहाँ है।

उसकी बात सुनकर एक बार नीलांबरका भी आवा कि काटीसे उसका यह  
मुँह तोंड है। लेकिन नहीं उसने अपनेका रोका संभाला। खड़े होकर कहा—  
अच्छा बाबो, निकलो—मेरे बापसे हट जाओ।

पीठांबर भी क्रोधित हो उठा बोला, जामखी क्यों गुस्सा होते हो! न  
बाऊँ तो क्या बबदली मग्न है सकते हो।

नीलांबरने हाकते बरपाव्य दिखाते हुए कहा—जुवापेमें मार खाकर बहि  
धान नहीं देना चाहते, तो हट जाओ मेरे बापसे।

फिर भी पीठांबर कुछ कहनेवाक्य था कि नीलांबरने रोककर कहा—

अब एक रात्र भी नहीं—जाओ।

गैंगार नीलम्बरका शारीरिक बल सुप्रसिद्ध था।

पैठावरको फिर कुछ कहनेका चाहत नहीं हुआ। वह सीरेसे बाहर हो गया।

यह कहा-मुनी गुनकर विराज बाहर निकल आई थीर पतिव्रत हाथ पकड़कर मीठार लौट ले गई। बोली—कि! लज कुछ जान-मुनकर भी क्या भाँते लगाना बिना काठा है, जिसमें सब अंग हैं।

नीलम्बरने उदात्त भावसे कहा—जानता हूँ तो क्या डरते हब क्यों? मैं सब सह सकता हूँ विराज, लेकिन धूर्तता नहीं।

विराजने कहा—लेकिन तुम तो धैर्य नहीं हो। वह अथवा हाथ पकड़कर बाहर निकल दें, तो बाहर कहा लगे हींगे—वह भी कभी सोचा है।

नीलम्बरने कहा—नहीं। जो सोचनेवाले हैं, वे सोचेंगे। मैं सोचकर बेकार चुकी नहीं होता।

विराजने कहा—ठीक है। ठीक बचाना और महाभारत पढ़ना जिसका काम है, उसके लिए सोचना-विचारना विष्णु है।

यह बात विराजने इसीमें नहीं कही थीर नीलम्बरके कानोंमें भी उससे अमृतवर्षा नहीं हुई, तो भी नीलम्बरने सहजभावसे ही कहा—उसे मैं लक्ष्मण कहा काय ही मानता हूँ। इसके सिवा, किसी करते-धरनेसे माफेका बिना मित्र कायमा। फिर यादमें एक बार हाथ जगाकर बोला—देखो विराज, यहाँ स्थिर होनेके कारण ही कितने ही शर्म-महापुरुषोंको पेड़ोंके नीचे खना पड़ा है—मैं तो एक बहुत ही दुष्ट मनुष्य हूँ।

विराज मीठार-ही-मीठार कभी जा रही थी। बोली—वह सब मुँहसे कह देना कितना सहज है, काममें परिपक्व करना उतना सहज नहीं है। इसके सिवा पेड़के नीचे तुम मछे ही रह सको मैं तो नहीं रह सकती। किसीको हवा-सरम होती है। चाहे भ्रष्टाचार करके, चाहे शारीरिक करके, मुझे तो एक आश्रयमें खना ही होगा। अगर तुम छोटे मार्गका मन रसकर न कर सको तो कमसे कम उससे हाथपाई करके लज कुछ मित्र तो न कर दो। अपनी जौलोंके अंगुष्ठोंको रोककर देखीके साथ वह बाहर निकल गई।

इसके पक्षे पति आर पत्नीमें कह-बार कहा-सुनी और कह-हो हुआ है नीलम्बर उससे परिचित है। लेकिन आज जो कुछ हो गया वह कह-हो नहीं था। वह मूर्ति उसके निकट उभरा अस्तिमित थी। वह स्तम्भित होकर खड़ा रह गया।

कुछ देर बाद ही विराज उस कमरेमें जाकर बायीं—इस तरह इन्क-बन्क-क्यों लगे हो! दिन बढ़ आया है, जालो नहा-धोकर पूजा-पाठ करके सो कर पाओ। कितने दिन मिथ्या है उसने दिन। जो कहकर, फिर एक बार पति के कक्षेमें एक मोंककर, वह पत्नी गई।

इस कमरेकी दीवारमें राधा-कृष्णका एक पट लटका था। उसकी ओर देख-देखकर नीलम्बर सहसा रो पड़ा। लेकिन कोई देख न ले, इस दरसे घोरन ही अँखों पोंछकर बाहर आया गया।

आर विराज! उस दिन दिनभर उसका वह हाव रहा कि बार-बार उसकी आँखोंमें आँसू सर-सर आते थे। जिसका बोझ भी वह उससे रहा न आता था उसीको ऐसी कठोर बात बोलते उसने वह हाथी, तभीसे उसके दुःखकी और आत्म-आविर्भी सीमा नहीं थी। दिनभर उसने एक बूँद पानी भी मुँहमें नहीं डाला। रोती हुई बेकार ही इधरसे उधर—इस कोठरीसे उस कोठरीमें जाती रही। इसके बाद सम्झाके समय दुकलीके दुकली जागे पीपल बजाकर, मजेमें आँखें डालकर, उसने प्रणाम किया तो फटककर जोरसे रो डली।

छारे परमें काह न था, ललाटा आया था। नीलम्बर परमें नहीं था। दोपहर को बाकीपर एक बार बैठकर ही सट गया था, लगे अमीतक बोला न था।

विराज क्या करे, कहाँ जाय किछसे करे, क्या करे! आज सब तरफ हैलन-पर भी काह उदाव न दिखता दिख। वह डली अगल धीमे अँगनमें बीबी पकर पूर-सूटकर रोने लगी। कैयक यही उसके मुँहसे निकलन लया—मेरे अम्तर्पामी पैसा, एक बार मेरी आर आँख उठाकर देखो। जो आदमी कोई दोष कोई पाप करना नहीं जानता, उसको अब कह न दिया देखा। मैं अब और नहीं रह सकूंगी।

उस समय उसके ना बज गये थे। नीलम्बर जलन-जलन सेट रहा।

विराज कोठरीमें जाकर, उसकी पैरोंके पास बैठ गई । मगर नीलम्बरने उसकी ओर न तो देखा और न कोई बात ही की ।

कुछ देरके बाद विराजने फर्शके पैरपर अपना एक हाथ रखा, लेकिन नीलम्बरने धुरन्ध हो पैर हटा दिया । पाँच-पार मिनट और भी चुपचाप ही बीत गये । विराजका सोचा हुआ अभिमान फिर बीरे बीरे जगने लगा । तो भी वह घींठे स्वरमें बोली—बच्चे मोहन कर खे ।

नीलम्बर कुछ नहीं बोला । विराजने कहा—आज दिनभर कुछ नहीं खाया । किन्तु लज्ज हो, चर सुनूँ ?

नीलम्बरने इसका भी कुछ जवाब नहीं दिया ।

विराजने कहा—बताओ म ।

नीलम्बरने जवाब मागते कहा—मुनकर क्या होगा ?

विराजने कहा—तो भी सुनूँ तो सही ।

अबकी नीलम्बर सहसा उठ बैठा और विराजके चेहरेपर घृण-सी सीखी नजर गड़ाकर बोला—मैं तुमसे क्या गुस्सन हूँ विराज, कोई लिखौना नहीं हूँ ।

उसकी उठ हड़ि और गलेकी आवाजसे विराज मग्न-वकिष्ट और लज्ज हो गइ—ऐसा आर्त और गम्भीर कण्ठ-स्वर तो उसने और कभी किसी दिन नहीं सुना था ।

### ७

मगधके राजमें पीतलके कच्चे हाथनेके कई कारखाने थे । इस मुहम्मदी आदेशक आतिशी लड़कियों मिट्टीके लोथे बनाकर वहाँ बेच जाती थीं । अल्प दुकानकी व्यवस्थासे जल्दी हुई विराजने उनमेंसे एक लड़कीको चुनकर उससे लोथे बनाना सीखा था । वह बहुत ही बुद्धिगती और काम करनेमें असाधारण प्युर थी । वो ही दिनोंमें वह काम सीलकर वह सबसे अच्छे लोथे बनाने लगी । अब व्यापारी खुद आकर नगद पैसे देकर उससे लोथे लरीए ले जाने लगे । इस तरह वह रोज आठ-दस आने पैसे कमा लेने लगी । मगर लड़की मारे अपने फर्शके आगे इस बातका प्रकट नहीं कर सकी ।

नीलम्बर जब तो आया उस बहुत रात गये वह चुपचाप फर्शसे उठ आती

आर वह काम करती थी। आज रातको भी वह सोन बनाने आई और पक्काबंद के कारण किसी समय उठी बगल को गई। नीकावरकी ओल एकाएक खुल गई। पहलपर किसीको न देखकर वह बाहर निकल आया। विराजके हाथ उस समय गी कीबड़-मिड़ीसे मरे हुए ये और आस पास बने हुए सोने इतर उतर पड़े थे। वही एक तरफ ठण्डम गीली जमीनपर, वह तो रही थी।

आज सोन दिनसे पति और पत्नीमें खोजपाक नहीं थी। उस आमुर्धसे नीकावरकी दोनों ओरों मर जाई। वह पैरन वही बैठ गया और उसने विराजके जमीनपर कुड़के हुए ठिरेको सावधानीसे अपनी गोदमें रख लिया। पर विराजका कुछ लवर नहीं हुई, बस एक बार क्या दिखा-बुझाकर, दोनों पैरोंको और समेटकर वह अपनी तरफ को रही। नीकावरने बाई हाथसे अपनी ओरों पैरों को और दूसरे हाथसे पास ही रखे हुए ठिमेरिमाते लीफको जग उठाने करके एकटक पत्नीके मुखको और निहारने लगा। वह क्या हो गया। कई, इतने दिन तो ठकने देखा नहीं। विराजकी ओरोंके दोनोंमें इतनी स्याही दी गई है। मीलोंके ऊपर सुन्दर सुबोख मयकेर दुम्भियाकी इतनी सुम्पट रोजा रोज पड़ रही है। एक समझमें न आनवादी अम्भक पत्नीम बेदनावे उसका सम्पूर्ण हवन मीतर-ही-मीतर जैसे मसोत उठा। असावधानीसे एक बड़ी ली ओलकी बुर विराजकी बंद ओलोंकी एकतरफ टपक पड़ी। उसके गिरते ही विराजने ओल लोकाकर देखा। सनभर पुनचाप लाकठी रही। फिर दोनों हाथ फैलाकर पतिकी जमतीवे निपट यह और गोदमें मुँह छिपाकर करबट केकर पुनचाप पड़ी रही। नीकावर उठी तरफ बैठा-बैठा रोज गया। वही देखकर कोई कुछ नहीं बोला। फिर जब रात बीतनेको हुई, पूरा आकाशमें वे पजन कगी, सब नीकावरने समझकर, प्रकृतिरथ होकर, पत्नीके मस्तकपर हाथ रखकर स्नेहपूर्ण कहा—अब और ठण्डमें मत पड़ी रही जममें जमो विराज।

“जमो” कहकर विराज उठी और पतिका हाथ पकड़कर कोठरीके मीतर जाकर सो रही।

उड़के ही नीकावरने कहा—जामो विराज, कुछ दिन जमने मामाके घर भूम-भूम जामो। मैं भी क्या करकरो हो जाऊँ।

विराजने दूहा—कलकरो जाकर क्या होगा ?

नीलावरने कहा—वहाँ पैसा कमानेके कितने ही रास्ते हैं। वहाँ कोर्र-न-कोर्र सूरत निकक ही आकगी। कहा माना विराज दो-चार महीने वहा जाकर रहो।

विराजने पूछा—कितने दिनमें मुझे बुटा सोगे ?

नीलावरने कहा—छः महीनेके भीतर ही बुटा सैगा, बचन देता हूँ।

‘अच्छा’ कहकर विराज सहमत हो गई।

चार-पाँच दिनके बाद बैकगाड़ी आई। विराजके मामाके घरको आठ-दस कास्तक बैकगाड़ीपर ही जाना होता है। लेकिन विराजके व्यवहारमें बाधाका कोई लक्षण न देना पड़ा।

नीलावरने व्यस्त होकर ताकीर करने लगा।

विराज काम करते-करते कह बैठी—आज तो मैं न आऊँगी। मेरी तबीयत ठीक नहीं है।

नीलावरने विस्मयसे आवाज़ होकर बोला—तबीयत सारा है ?

विराजने कहा—हाँ तबीयत सारा है बहुत सारा है। यों कहकर मुँह छटकाने, पीठककी ककसी कमरपर उठाकर नहीचे पानी बानके लिए बक दी। उस दिन गाड़ी बौट गई। रातको बहुत कुछ समझाने-बुझाने-मनानेपर उसने दो दिन बाद जाना मंजूर किया। दो दिनोंके बाद फिर गाड़ी आयी।

नीलावरने आकर लकर ली तो विराज एकदम फट गई। बोली—नहीं मैं कभी न आऊँगी।

नीलावरने और विस्मय होकर कहा—आजोगी क्यों नहीं ?

विराज रोने लगी—नहीं, मैं न आऊँगी। मेरे पास यहने कहाँ हैं ? अच्छे कपड़े कहाँ हैं ? मैं हीन दुलियोंके समान किसी तरह नहीं आऊँगी।

नीलावरने गुस्सेसे कहा—आज सलमुब तुम्हारे पास गहन नहीं हैं, मगर अब ये सब भी तो तुमने एक दिन उनकी और बीस उठाकर नहीं देला।

विराज चुपचाप पानीके छोरसे बीसों पोछने लगी।

नीलावरने फिर कहा—यह सब मैं समझता हूँ। मेरे मनमें समझ तो पड़े-हीते था। लेकिन सोचा था तुम्हें-कहते तुम्हें होता था गया होमा। मगर अब देखता हूँ कुछ नहीं आया। अच्छी बात है, तुम भी तुल-तुलकर सगे और मैं भी मैं। करकर नीलावरने गाड़ी छोड़ दी।

पीतांबर को नीलांबर सरके भीतर हो रहा था। पीतांबर भी भाग्न पंथसे गया था। छोटी बहूने टट्टीकी सपिसे कोमल स्वरमें पीरसे कहा—बीबी, बुरा न मानना—बसूर माफ करना, मैं तुमको क्या समाझाऊँ, दो दिनको जल्दी क्यों न गई ?

विराज कुछ न बोली।

छोटी बहूने कहा—जेठबीबी रोऊ न रला बीबी ! बिफाके समय एक बार दिख कहा कर दो—दो दिन बाद भगवान् जरूर हुआ करेंगे।

विराजने पीरसे कहा—मैं तो दिख कहा ही किये हूँ छोटी बहू।

छोटी बहूने कुछ जोर देते हुए कहा—तो जाओ बीबी, जेठबीबी मर्यादा तब पैदा कमाने दो। मैं कहती हूँ दो निम तुम्हारे ऊपर भगवान् जरूर प्रकट होंगे।

विराजने एक बार फिर ठठाकर कुछ करना चाहा, लेकिन फिर फिर रुकाकर चुप रह गई।

छोटी बहूने कहा—वा न सकोमी बीबी !

अब भी विराजने फिर हिचककर कहा—नहीं। सारे नीपसे ठठाकर उनका मुँह देखे बिना मैं एक दिन भी नहीं रिता सकूँगी। जो मुझसे नहीं हो सकता वह काम करनेके लिए मुझसे मत कहो छोटी बहू। इतना कहकर वह जान लगी। इतनमें छोटी बहूने छल्ला बर्माली जाबाबसे पुकारकर कहा—जाओ नहीं बीबी कुछ दिनके लिए तुमको वहाँसे जाना ही पड़ेगा। गये बिना मैं कभी न भाँगी।

विराज घूमकर लड़ी हो गई। हमसर सिर माकसे लगी होकर बोली—भोई, समझ गई ! जायद सुन्दरी भायो थी !

छोटी बहूने फिर हिचककर कहा—भायी थी।

विराजने कहा—इसीसे पहले जानेको कहती हो ?

बहूने कहा—हाँ, इसीलिए कहती हूँ बीबी तुम यहाँसे जल्दी जाओ।

विराज फिर कुछ देरतक चुप रही। दूसरे रात बोली—एक कुत्तेने डरते पर छोड़कर भाग जाऊँ !

बहू बोली—कुत्ता जब पागल हो जाता है तो उससे डरना ही होता



बोली। इसके सिवा अफ़ीसे तुम्हारे ही किए नहीं। सोचकर देखो, इसे लेकर और भी क्या-क्या अनिष्ट हो सकते हैं।

विराज कुछ देर तक फिर चुप रही। उसके बाद उद्विग्नभाव से फिर उठकर बोली—नहीं किसी तरह न जाऊँगी। और यह कहकर छोटी बहू को प्रभुत्तरका अवकाश न देकर तेजीसे हट गई।

समर अब उसे जैसे डर लगने लगा। उसके पाठके ठीक सामने उस पार दो दिनसे बड़ी घूमघामसे एक नहानेका पाठ बनाया जा रहा था और नदीमें पानी न ख़दनेपर भी मछली पकड़नेका मजान बँच रहा था। विराज मन-ही-मन समझ गई कि वह सब क्यों हो रहा है। नीलावर एक दिन स्नान करके अपना ली पूजा—उस पार वह पाठ कौन कौन क्यों पढ़े हैं? विराज एकाएक विमग्न उठी, बोली—मैं क्या जाऊँ? और तेजीसे हट गई।

उसका माथ देकर नीलावर अवाक़ हो गया। किन्तु उसी दिनसे विराजने बरत-पेवत पानी भरनेके लिए नदीपर जाना एकदम बन्द कर दिया। वह या तो बहुत ठण्डके और या कुछ रात होते नदीपर जाती। इसके सिवा हथार काम बढ़कनेपर भी कभी उधर मुँह न करती। लेकिन भीतर-ही-भीतर ज़ुजा, कब्य और ओषधके मारे मानो उसका ह्रम घुटने लगा। जब य इस अत्याचार और अकर्म्य अशिष्टताके शिकार वह अपने पतिके बारे में मुँह न खोल सकती।

चार दिन बाद एक दिन नीलावर ही पाठसे खीटकर हँसते हुए बोली—मने जमींदारका राज-बाज देखती हो विराज।

विराज समझकर अनमने माक़से बोली—देखती क्यों नहीं!

नीलावर हँसते-हँसते बोली—मैं सोचता हूँ कि वह जादमी पागल तो नहीं है। नदीमें दो बार छोटी मछलियाँ ख़दने अवक़ तो बल नहीं है, लेकिन वह जादमी मदीमें एक बड़ी गिरौदार बंती डाके दिनभर बैठा रहता है।

विराज चुप रही। वह किसी तरह अपने पतिकी ईर्ष्या छाप नहीं दे सकती।

नीलावर कहने लगा—मार यह तो ठीक नहीं है। मझे ज़ारमियोंके सिङ्की-पाटके सामने छारा दिन उसके बैठे ख़दनेसे किरिया-कड़कियाँ कैसे ख़पेंगी? अच्छा हम जोगीको तो निरबन ही बड़ी अमुबिधा होती होगी।

विराजने कहा—होती है तो क्या किया जाय।

नीलम्बरने कुछ उचोखित होकर कहा—येकिन ऐसा क्यों हो ! बंसी लेकर सागरपन करनेको क्या और कोई जगह नहीं है ! ना, ना कस सधरे ही कपहरि ब्यकर कह आऊँगा कि झोक है तो और वहीं बंसी बालकर बैठा करो । ऐरेकिन हमारे घरके सामने यह सब नहीं हो सकेगा ।

पतिव्री बात सुनकर विराज टर गई । उसने ब्यस्त होकर कहा—ना ना, तुमको यह सब करने जानेही जरूरत नहीं । नहीं सिर्फ हमारी ही नहीं है, जो तुम मना कर आओगे ।

नीलम्बर विस्मित हो उठा । बोला—तुम कहती क्या हो विराज ! न सही हमारे अकेलेकी किन्तु क्या उसे अष्ट-दुरिका विचार न करना चाहिए ! मैं कस ही ब्यकर कह आऊँगा । न जानेगा तो मैं खूब यह सब बाट-बाट टोंक-टोंककर देक दूँगा । इसके बाद जो कर सके, कर ले ।

सुनकर विराज सम्राटेमें आ गई । फिर चीरते बोली—तुम बर्मीरारसे सगढ़ा करने आओगे ?

नीलम्बरने कहा—क्यों न आऊँगा ! क्या आदमी है जो क्या भी-बाहा अत्याचार करेगा और उसे सहते रहना होगा !

विराजने कहा—साबित कर सकोगे कि वह अत्याचार करेगा है !

नीलम्बरने लम्बाकर कहा—मैं इसनी बहसके बसेइमें नहीं पड़ता । साफ देख रहा हूँ कि अन्याय कर रहा है और तुम कहती हो साबित कर सकोगे ! कर सहीया या नहीं, वह मैं देख दूँगा ।

विराज लज्जर पंथके मुँहकी ओर स्थिर दृष्टि ठाकती रही । फिर बोली—दखो निमाम अनिक टप्पा रहो । किनको दोनों मूल जानेको नहीं सुझा, उनके मुँहसे यह बात सुनकर लोग बू-बू करेंगे ।

नीलम्बरने कहा—कैसे !

विराजने कहा—और कैसे ? तुम बर्मीरारके बड़कैसे लड़ना चाहत हो ।

ऐसे रूढ़ भावसे वह बात विराजके मुँहसे बाहर निकली कि नीलम्बरसे सही नहीं गन । वह एकदम आयाबूझा हो उठा । ओरसे पीलकर बोला—तु मुक्त कुचा-मिली समझती है क्या जो हर पड़ी जानेका ठाना दिया करती है ! तुमसे सब दोनों मूल मानको नहीं मुक्त !

गुल-गुल उठाते-उठाते विराजमें पहलेका-सा धीरज और सहनशीलता नहीं रह गई थी। वह भी कुछ उठी और बोली—वैकार चिल्लाओ नहीं। सिस तरह दोनों गुल खाना चुरता है तो गुम अवश्य महीं जानते—लेकिन मैं जानती हूँ और मेरे अन्तर्यामी जानते हैं। इस बारमें अगर तुम कुछ कहने व्यभोग तो मैं बहर ला दूंगी।—कहते-कहते विराजने सिर उठाकर देखा, नीलावरका चेहरा एकदम विचर हो गया है। उसकी दोनों आँखोंमें बहुत हतबुद्धि छिपी है। उस नजरके सामने विराज एकदम सकुचाकर, सिमटकर, बरा सी हो गई। वह एक भी बात न कहकर धीरेसे स्तितक गई। उसके बसे जानेपर भी नीलावर उसी तरह लड़ा रहा। उसके बाद एक कच्ची चाँस छोड़कर, बाहर बहकर, बाथी-बाथीमें एक दिनारे लम्प होकर बैठ गया।

उसके प्रकट होने से सोचे-समझे बिना एक ऐसी क्याह जो लीची न थी धीरेसे सिर उठाया तो था कि जैसे ही जोरकी टक्कर खाकर वह बिजकुल निष्पद ब्रह्म हो रहा। नीलावरके कानोंमें विराजकी यही आखिरी बात गूबने लगी कि 'एहली कैसे कटती है।' उसे उस धँचेरी गहरी रातमें बरके बाहर परतीपर घेटी हुई विराजका बका हुआ ली सुप्त मुँह यह-यहकर पाद खाने लगा। सब ही तो है। यह तो अब उसे जाननेको बाकी नहीं रह गया कि दिन कैसे कटते हैं और वह अश्रुहाय नारी कैसे बरके एहली पला रही है। कुछ ही पलसे विराजकी कठोर बात तीरकी तरह ही उसके हृदयमें लगी थी; किन्तु अब वह बैठे-बैठे छिन्ना ही सोचने लगा उठना ही उसके हृदयका वह भाव वह लोम, केवल मरने और मिटने ही नहीं लगा बल्कि धीरे धीरे वह अन्धा और विरमपके सममें बदलता भी दिगई देने लगा। उसकी विराज तो केवल आजकी विराज नहीं है, वह कितने ही समय की—कितने ही युग-युगान्तरकी है। उसका विचार तो केवल दो दिनोंके व्यवहार, दो-एक असहिष्णु बातोंसे ही नहीं किया था लफटा। उसका हृदय किस भीमसे भरा है, यह बात तो उससे बढ़कर और कोई नहीं जानता।

अबकी बार नीलावरकी आँखोंसे सर सर करके आँसू गिरने लगे। वह अचरमात् दोनों हाथ जोड़कर, मुँह ऊपर उठाकर, ईश्वर गलेसे कह उठा—ममबाम् मेरा जो कुछ है, सब से दो—लेकिन येही विराजको न सेना।

बह कहते ही इच्छाका एक प्रयत्न होकर उस विपतमयको हृदयसे जोरसे धिक्का देनेके लिए उसकी ओर बढ़ने लगा ।

बह सौझकर विराजके बंद दरवाजेके सामने आकर खड़ा हो गया । दरवाजा मीठरसे बंद था । उसने पक्ष देखकर आवेगपूर्वक बोले हुए स्वरमें पुकारा—विराज !

विराज परतीपर भीपी पड़ी रो रही थी । सौझकर उठ बैठी ।

नीकांवरने कहा—क्या करती हो विराज—दरवाजा खोलो ।

विराज डरती हुई चुपचाप दरवाजेके पास आकर खड़ी हो गई ।

नीकांवरने ध्वांस होकर कहा—खोक न हो विराज ।

अनकी विराज न बमाली-सी होकर धीरेसे कहा—तुम माफोगे तो नहीं बाकी ? नीकांवरने कहा—मूर्खता !

बह बात तेज आरकी धुरीकी तरह नीकांवरके कंधेमें आकर लगी । बदना, हजा और अभिमन्युने उसका कन्ध रूँध गया । बह संझहीनकी तरह चौखटका एक बाजू पकड़कर खड़ा था । विराजने तो यह कुछ देखा नहीं इसलिये अनखनमें ही कुटीपर धुरी मारती हुए रोकर बोली—अब फिर कभी मैं ऐसी बात नहीं करूँगी—बोली, माफोगे तो नहीं !

नीकांवर ध्वस्त स्वरमें किसी तरह केवक 'ना' मर कह सका । डरते-डरते धीरे-धीरे बैठे विराजने कुँची लोखी बैठे ही नीकांवर ध्वस्तकाता हुआ मीठर चुपकर भाँसें मूँहकर पंखपर आकर पड़ रहा ।

उसकी मुँदी हुई दोनों ओरोंके कोनासे लगातार धँसुधँसीकी धारा बह चली । पठिका रोता रोता उठने और कभी नहीं देखा था । अब सब उसकी समझमें आ गया । विराजनेके पास बैठकर बड़े प्रेम और स्नेहसे स्वामीका धिर अपनी गोदमें रखकर वह ओंथकसे उसके ओंख पैरने लगी ।

धीरे धीरे सारंगकाष्ठका बांधकार धर्म कीरने और बना होने लगा । तो भी किसीने मुँह नहीं खोला, कोई बात नहीं की । बीबेमें दोनों चुपचाप स्थिर पड़े रहे । किन्तु पठ और पानीमें मन-ही-मन जो बातें हो गई, उन्हें खान पकाना है, केवल उनके अन्तर्यामीने ही सुना ।

फिर भी नीचावर सोच रहा था—विराज यह बात अपनी बरानपर कैसे धरें ? विराजके मनमें इतनी बड़ी हीन धारणा कैसे उत्पन्न हुई कि वह उसे मार सकता है ? एक तो गुरुस्त्रीके दुःख-कष्टोंकी कोई हद नहीं उसपर रोज़रोज यह क्या होने लगा ? वो बिल नहीं बीतते कि सगड़ा हा जाता है । रात-रातमें मनोमग्निक्रम सायना होते ही कबहू फा-सापर मस्तभेद । सबसे बड़ी यह बात है कि उसकी ऐसी विराज दिनपर दिन कैसे हाती जा रही है और सब ओर देखने पर भी इस दुःखके सागरका किनारा कहीं दिखाई नहीं देता । ममबान्के भीषरनोंमें नीचावरकी अटक मृत्ति थी माम्बके लेखार बेहद विश्वास था । वह यही विचारने लगा । उसने मनमें किसीको शेष नहीं दिया, किसीका दुःख नहीं कहा—किसीकी निन्दा नहीं की । पन्थीमन्थनमें सीमारपर ईमे हुए राघवद्वन्द्व की कुण्डलोद्गीर्णके निजके सामने लड़ होकर वह रोकर कहने लगा—मेरे ममबान्, अगर इतने दुःखमें आटना ही चाहत थे तो मुझको इतना निरुपग्रह क्यों बनाना तुम्हने ?

यह कितना निरुपग्रह है । इस बातको उससे कड़कर कोई नहीं जानता । किसना-प्यना सीला नहीं, कोई काम-काज करना जानता नहीं । जानता था केवल दीन-दुस्त्रियोंकी सेवा करना सीला था केवल ममबान्का नाम सेना और भजन करना । इससे दुष्टोंका दुःख-कष्ट अवश्य दूर होता था; लेकिन आज दुःखमयमें उसका अपना दुःख कैसे दूर हो ? अब तो उसके पास कुछ भी नहीं है, सब खत्म गया । इसीसे दुःखकी व्याख्यामें अन्तरी-अन्तरे उसने कितनी बार अपने मनमें सोचा है कि अब यहाँ नहीं रुँगीगा बिबर सदा प्येगा ठहर विराजको लेकर बड़ा जाऊँगा । पर क्या इस रात पीढ़ियोंके घरको छोड़कर, किसी देव-प्रेमिकके द्वारपर बैठकर, अपना किसी इच्छाके नीचे पड़कर वह सुखी हो सकेगा ? यह छन्यी-छी नहीं, यह पेड़-पौधोंसे भिरा हुआ घर, अन्तर्में परिचित घर और बाहरके लोगोंके मुख, सबको छोड़कर किसी देशमें अपना स्वर्गमें भी आकर क्या वह एक दिन भी अविश्रुत रह सकेगा ? इसी वरमें उसकी मौ मरी है, इसी पन्थीमन्थनकी दान्यनमें उसने अन्त समय अपने पिताकी सेवा की है और, उन्हें यंगा पहुँचाना

है, यही उसने पूँटीका सेवा-पाया है—उसका ग्याह किया है। इस घरकी इत म्यानकी ममता वह किस तरह छोड़ सकेगा ?

वह वहीं बैठकर, दोनों हाथोंसे अपना मुँह ढककर ईंचे हुए गटेसे रोने लगा। उसको क्या यही इतना ही दुःख है ? अपनी प्यारी बहनको वह क्यों दे आया कि उसकी कोश खबरतक नहीं भिन्न पाती ! किन्तु ही दिनोंसे वह बहनको नहीं देख पाया—उसका उध कण्ठसे 'दादा' कहकर पुकारना भी नहीं सुन पाया ! परमे परम वह क्या दुःख उठा रही है किन्तु रो-कटन रही है, यह कुछ भी नहीं वह जान सक्त। अब व विराजके आगे उसका नाम सेना भी कठिन है। वह उसे पाक-पोसकर भी इस तरह मुक्त सकी है, लेकिन वह कैसे मूछे ? वह पेटकी सगी सहोदर बहन है उसे मोहमें लेकर, कन्वेस कदाकर इतना बहा किया है—क्यों कहीं गया, उसे भी साब ल गया और इसके लिए किन्तु ही ब्रम्ह-उपद्रास रहे हैं। लेकिन पूँटीको रोते छोड़कर वह किसी तरह परके बाहर एक पग भी नहीं जा सका है। ये सब बातें वह जानता है और छोटी बहन जानती है। विराज जानती दुःख भी नहीं जानती कभी एक बात भी नहीं कहती। पूँटीके विषयमें वह जैसे फरकी मूर्तिकी तरह सदाके लिए एक दम रूंगी बन गई है। वह स्वयं भी नीलम्बरके कलेत्रेमें दूल्हा-सा सुमता है कि उसने मन-ही-मन उसकी निरपराध बहनको अपराधी बना रक्ता है। किन्तु इस विषयकी अणु-सी चचा करनेतकका रक्ता बन्द है। कोई बात अस्मते ह विराज उसे रोकर कह उठती है—ये सब बातें रूने से। वह यकगनी हो—लेकिन उसकी बातोंकी अस्मत् नहीं। वह यकगनी शम्भुका उन्धारण कुछ इस तरहसे करके उठ जाती है कि नीलम्बरके दूरवर्षे भीतर आग-सी मुकग उठती है। वह इसी आर्षकासे मन-ही-मन व्याकुल हो उठता है कि कहीं उसपर गुरुजनोंका शाप न पड़े—और कहीं उसका अकस्मात् न हो अय। वह भगवान्से प्रापना करता था सिपाकर प्रसाद कदाकर नदीमें बहा जाता था। इसी तरह उसके दिन कट रहे थे।

दुर्गापूजा आ पहुँची। अब उत्सव रहा नहीं गया। विराजसे लिखकर कहसि कुछ थोड़े न्यय संग्रह करके एक थोटी और कुछ मिठाई मोठ लेकर उसने मुम्बरीको जाकर पकड़ा।

सुन्दरीने बैठनेके लिए आसन बिछा दिया समाप्त भर बाह । नीलावरने आसनपर बैठकर अपने फटे-पुराने मैमे-मुण्डेके भीतरसे वह बोली निकालकर कहा—देख सुन्दरी तूने तो उसे पागल-पोसा है । आ, एक बार देख आ । यह आगे न बोल सका मुँह फेरकर उसने आँखोंसे आँखें पोंछ लीं ।

सुन्दरी इन लोगोंके कड़वी बात जानती थी । गाँवके सभी जानते थे ।

उसने पूछा—वह कैसी है बड़े बाबू !

नीलावरने धीरे-धीरे कहकर कहा—आखिर नहीं ।

सुन्दरीमें बुद्धि बिभेचना थी । उसने और कोई प्रश्न नहीं किया । दूसरे दिन खेरे ही जानेकी बात कहनेसे नीलावर उसे कुछ राह-खर्च देनेको तैयार हुआ, पर सुन्दरीने नहीं किया । कहा—नहीं बड़े बाबू तुमने बोली मोठ से ली, नहीं तो वह मैं न ले जाती—तुम्हारी ही तरह मैंने भी तो उसे आदमी बनाया है ।

नीलावरकी आँखोंसे फिर आँसू गिर पड़े । वह मुँह फेरकर बार-बार उठने पोंछने लगा । ऐसी समझना उसने किसीसे नहीं पाई थी । सभी कहते हैं कि उसने मूठ की है, अन्याय किया है वृद्धीके ही कारण उसका यह सर्वनाश हुआ है !

नीलावरने उठते-उठते सुन्दरीकी विशेष सावधान कर दिया कि उसके मुँह-कण्ठकी लहर वृद्धीके कानमें न पड़ने पावे । नीलावरके बच्चे जानेकर जबकी सुन्दरीने भी आँखोंसे अपने आँसू पोंछ लिये । इस आदमीको सभी मन ही-मन प्यार करते थे—सभी मुक्ति करते थे ।

उस दिन बिज्यावसुषी थी । तीसरे पहर बिराजने सोनेकी कोठरीमें जाकर भीतरसे दरवाजा बन्द कर दिया । छप्पा होते-न-होते जोड़ बाधा कहकर धरमें कुछ आया और किसीने नीलू याद मीलू मैला, कहकर शहरसे ही आबाज लगाई ।

सुख हुई किने नीलावर बच्चीमण्डपते निकलकर सामने आ लड़ा हुआ । अचानक किसीने प्रणाम किया, कोई गले मिला । फिर सब मन्त्रीको प्रणाम करनेके लिए भीतरकी ओर लगे ।

उनके साथ साथ नीलावरने भी आकर देखा कि बिराज रमार्थपरमें भी मरी

है। सोनेकी कोठरीका द्वार भी बन्द है। उसने किशानमें प्रश्न देकर पुकारा—  
 बड़के तुमको प्रणाम करनेके लिए आये हैं विराज।

विराजने मीठारसे ही कहा—मुझे सुखार है उठ नहीं सकती।

उसके चले जानेपर बोधी ही देरमें फिर किसीने प्रश्न दिया लेकिन विराज बोधी नहीं। दरवाजेके बाहरसे ही भीरसे किसीने कहा—बीबी मैं हूँ मोहिनी,  
 जरा दरवाजा खोलो।

फिर भी विराजने जवाब नहीं दिया।

मोहिनी बोली—यह न होगा बीबी। सारी रात इस दरवाजेपर लकड़ा खना  
 पड़े तो भी लकी रहूँगी—किन्तु आज तुम्हारा आशीर्वाद बिना इस  
 जगहसे नहीं हटूँगी।

अब दरवाजा खोलकर विराज सामने आ लकी हुई। उसने देखा, मोहिनीके  
 बाएँ हाथमें खानेकी सामग्रीकी टोकरी और बाहिने हाथके पापमें टनी हुई  
 मँग है। दोनों भीमें पैरोंके पाठ रखकर मोहिनीने विराजके चरणोंपर फिर  
 रखकर प्रणाम किया। फिर कहा—मुझे केवल यही अतीव बड़ी बीबी कि मैं  
 तुम्हारे कैदी हो गई हूँ। अब, इसके सिवा मैं तुम्हारे मुँह और कोई अतीव  
 नहीं चाहती।

विराजने कुछ औखोंको औखलते घूँटकर गुपचाप छोटी बटुके छुके हुए  
 स्फिरपर हाथ रख दिया।

मोहिनी घड़ी होकर बोली—आज स्त्रीहारके दिन औख नहीं गिरना चाहिये  
 मगर मैं यह तुमसे तो कह नहीं सकती बीबी। अगर तुम्हारी देहकी हवा भी  
 मेरी देहको छू गई हो तो उसीके ओरसे बड़े जाती हूँ कि अगले सात ऐसे ही  
 दिन वह बाध करूँगी।

मोहिनीके जानेपर विराजने वह सामग्री उठाकर कोठरीमें रख दी और स्फिर  
 निम्नक बैठ रही। आज वह द्वार भी अन्धरी तरह समझ गई कि मोहिनी  
 दिन रात वहाँपर औख रखती है।

इसके बाद किसीने ही उसके आये-गये मगर विराजने फिर दरवाजा बन्द  
 नहीं किया। वही सब भीमें देकर आजका आभार पृथ किया गया।

दूसरे दिन सपर वह कान्तमामलते बरामदेमें बैठी थाय लैमाक रही थी कि



सुन्दरीने आकर प्रणाम किया।

विराजने असीस देकर बैठनेको कहा।

बैठते ही सुन्दरीने कहा—बहु रात हो गई थी इसीसे शाम सत्र हो करन  
आइ है। लेकिन प्यारे धो कहो वह ऐसा जानती हो मैं कभी न जाती।

विराजकी कुछ समझमें न आया। वह उसका मुँह टाकने लगी।

सुन्दरी कहने लगी—क्यों कोई नहीं है। सब लोग घूमनेके लिए  
पछौट गये हैं। है एक बूढ़ी बुआ। उसकी बह कभीकभी रातें स्वा कई  
बोली—बोय से बा। रामादतकको एक जाती नहीं मेरी लाठी एक छड़ी  
घोटी लेकर पूजाका स्वरकार बुझने आई है।—इसके बाद नीच जमाद, बेहपा  
आदि न जाने क्या-क्या बकती रही, जिसके कहनेसे कुछ धक्का नहीं।

विराजने विस्मित होकर पूछा—किसने किसे कहा रे?

सुन्दरीने कहा—और किसे हमारे बाबूको।

विराज अभीर हो उठी। वह कुछ भी नहीं जानती थी इसीसे कुछ भी न  
समझ पाई। उसने कहा—हमारे बाबूको किसने कहा तो तो क्या।

अबकी सुन्दरीने कुछ विस्मित होकर कहा—वही तो मैं इतनी देरसे कह  
रही हूँ वह। बूढ़ीकी बूढ़ी कुचिया सासको कितना घमण्ड, कितना दिमाग है,  
घोटी नहीं की बोय थी। कहकर ठठने वह घोटी बाँचकके भीतरसे निकालकर  
रख दी।

अब विराज सब समझ गई। वह एकटक उस बाँचकी ओर टाकने लगी।  
उसके भीतर और बाहर जाग कम गई।

नीलम्बर साहर गया था वह बीयेगा, इसका कुछ टीक न था। सुन्दरी  
उसकी राह न देख सकी बंधी गई।

दोम्बरको नीलम्बर मोहन करने बैठा था। भीतर आकर, वह घोटी उसके  
सामने कुछ दूसर रखकर विराजने कहा—सुन्दरी बीयाकर दे गई है।

सिर ठठाकर चलते ही नीलम्बर बरत एकदम मुहता गया। उसने कल्पना  
भी न थी कि वह भैरव इस तरह विराजके आगे कुछ जायगा। उसने कुछ भी  
नहीं पूछा सुननाप सिर हटका दिया।

विराजने कहा—उन्होंने क्यों नहीं की क्यों मरनेवाला गांधी देकर बीया दी

बद सब मुन्दरीके पाठ आकर मुन सेना ।

धिर भी नीलावरने न सिर उठाया और न कोई धार ही बात मुननेकी श्रमता प्रकट की । विद्याज भी चुप रही ।

नीलावरकी मूत्र-म्यास सब एकदम जाती रही । बद लुके हुए भीत मुखसे केवल यही अनुभव करने लगा कि विद्याज फिर हसित उठे होगा रही है आर उस हसिते भाव बरत रही है ।

शामकी नीलावर मुन्दरीके घर गया बार-बार पूछकर सब बातें सुनी । फिर कहा—जब पछोड़ बूझने गये हैं तो बहर ही बद मजेमें है, क्यों न मुन्दरी ?

मुन्दरीने सिर हिलाकर कहा—मजेमें तो है ही बाबूजी ।

नीलावरका मुँह रिसक उठ्य । बोला—तुम्हने इतना कितनी बर्नी हो गद है !

मुन्दरीने हँसकर कहा—मैं तो हूँ नहीं बाबूजी ।

जबने प्रसन्न होकर नीलावरने कहा—ठीक है लेकिन नीलावर पाकरोसे तो मुना होया ?

मुन्दरीने कहा—नहीं बाबू । मरी फुटिया सातन ऐसी लट्टी-कट्टी मुनाह, एत हाथ-पैर फँके आर भटकाये कि पूछती क्या मागते राह ही नहीं मिली ।

दममर मुख मुखसे तियर राकर नीलावरने कहा—बच्छा, मेरी पूँटी पहलेसे कुछ बुझती हा गई है या कुछ मोटी-छाबी ? तुमसे कैसा बयला है ?

प्रश्नोंका उत्तर देते-देते मुन्दरी स्वाम्त हा गइ थी । संक्षेपमें कह दिया—मोटी ही हुई होगी ।

आपसे ठामुक होकर नीलावरने पूछा—आन पसता है, मुन आर है, क्यों ? मुन्दरीने गर्दन हिलाकर कहा—नहीं बाबू मुन तो कुछ भी नहीं ब्याद ।

तो फिर आना कैसे ?

अबकी मुन्दरी खीझ उठी । बोली—स्यना और कहाँसे ! तुमन पूछा कि तुम कैसा बयला है, इसीसे कह दिया कि घायल मोटी ही हुई होगी ।

नीलावर सिर हटाकर धीरेसे बोला—ठीक है ।

इसके बाद मुन्दरीके मुँहकी और उपवास देखते रहकर, एक ठोरी खीझ बर उठ गया हुआ । बोला—बच्छा तो आज आता हूँ फिर किसी दिन आऊँगा ।

सुन्दरीने घान्तिफी लौंठ ली । अचकमे उठका बसूर म था । एक वो करने को कुछ था नहीं, उठकर वो बच्चेसे कमातार एक ही बातको छिपटों छपटों छह-छहकर भी वह नीलम्बरके बीरूहको मित्र महीं लक्ष्मी थी ।

उसने जल्दीसे कहा—हाँ बापू, रात हुई जाय जायों । और किसी दिन कर सकेर जाना सब सब बातें होगी ।

इतनी दर बाद नीलम्बरका ध्यान सुन्दरीकी उत्कण्ठापूर्ण व्यक्तताकी ओर गया और वह “जाता हूँ” कहकर चले दिया ।

सुन्दरीकी परराहटका एक विशेष कारण था ।

उस मोहल्लेके नितार् मंशुकी हठी समझ प्रायः निश्च ही एक बार उठकी मुवि केकर अपने चारोंकी पूछ द जाते थे । उनकी वह भूल कहीं भाविकके सामने ही नहीं न आ पड़े इती आसकासे उसके रोंगटे लगे हो जाते थे । यद्यपि अनेक कारणोंसे उसके भाव्य कम गये थे, और अमीरदारके अनुग्रहसे उठकी कमज गबमें ही बरक गई थी वो भी इस निष्कण्ठ तापु-चरित्र आदम के आगे अपनी हीनता प्रकट हो जानेकी सम्भावनासे वह जानके मते मरी जा रही थी ।

नीलम्बरके चले जानेपर वह पुनर्जित चित्तसे दशाङ्ग बन्द करने भाद, किन्तु सामने नजर डालते ही रेल पड़ा कि नीलम्बर बीरुह आ रहा है । वह मित्राद् पकड़कर लौटके साथ उठकी प्रतीक्षा करने लगी । उसके मुसपर आसपीके चन्द्रमाका प्रकाश पड़ रहा था ।

नीलम्बर निकट आकर कर शिपका, फिर अपने चारोंके लौंठसे एक अठपी लोकर, सलज कोमल स्वरमें बोला—तुलसे कुछ कम्मा नहीं है सुन्दरी, सभी कुछ तू जानपी है । ठिक वह अठपी है, इसे से से । कहकर वह हाथ ठठाकर देने लगा । सुन्दरी भीभ काटकर पीछे हट गई ।

नीलम्बरने कहा—तुल किठना छप दिया जाने जानेका कर्ष भी न रे सक्ष । और कुछ न बोला गया आसुओंसे उठका कण्ठाकरोष हो गया ।

सुन्दरीने समझ कुछ लोभा फिर हाथ लागे करके कहा—बीरुह, कुछ भी हो, आप मेरे लक्षके प्रतिक है । मेरा ‘ना’ कहना साम्य नहीं देता ।

वह कहकर उसने वह अपने हाथमें छे ली । फिर उसे मायेसे पुमाकर

बौचलमें बौचली हुई बोली—तो फिर क्या भीतर आइए। इतना कहकर वह भीतर चली गई। नीलांबर उसके पीछे जाकर बाँगनमें लड़ा हो गया।

मुन्दरीने क्षणभरमें ही खींचकर नीलांबरके पोंचके पास मुट्ठीभर रुपये रखकर बगीचनपर फिर रखकर प्रणाम किया और वह पैरोंकी धूँट भायेसे जमाकर लड़ी हो गई।

नीलांबरको विस्मयसे इतकबुझि हो लगे देखकर उसने कुछ हँसकर कहा—इस तरह लगे होकर पाकनेसे तो काम न चलेगा बाबू। मैं धिराजबकी दाखी हूँ। धड़ होनेपर भी वह जोर सिर्फ़ मेरा ही है।

वो कहकर झुककर रुपये उठाकर वह नीलांबरके आदरेमें बौचली हुई मुट्ठी फँठसे बोली—बाबूजी, ये रुपये आपकी दिने हुए हैं। तीर्थयात्राके लिये देवताके नामसे इन्हें अर्घ्य रखा दिया था। जो जाना तो हो नहीं सका आज देवता स्वयं ही पर आकर ले लेंगे।

अब भी नीलांबरसे कुछ बोझ नहीं गया। अचानक तरह बौचकर मुन्दरीने कहा—बहुनी घरमें आकैनी है। अब आप आइए, लेकिन देखिए, उन्हें वह बात किसी तरह मायूस न होने पाये।

नीलांबर कुछ कहना ही चाहता था कि मुन्दरी बाधा देकर कह उठी—इस्यार कहिए, मैं नहीं सुनूँगी। आज मेरा मान न रखेंगे, तो स्वयं अनिय, मैं फिर पटककर मर आऊँगी।

अभीतक मुन्दरीके हाथमें आदरेका वह सिर था। इस बीच “क्या हो रहा है जी?” कहते हुए नितारि बौचनी लुके दरवाजेसे भीतर लीच आतनमें आकर लड़े हो गये। मुन्दरीने आदर छोड़ दिया और नीलांबर बाहर चला गया।

क्षणभर नितारि मुँह बाधे अवाक लड़े हो गये।—वह छोकर तो नील था न ?

मुन्दरी मनमें तो अविष्ट हुई, पर लहज भाषसे बोली—हाँ, मेरे माझिक से। नितारिने कहा—तुनवा हूँ, परमें जानेकी भी नहीं है। इसनी रातको पछे ? काम था, इच्छेसे आये से।

‘जीह काम था ?’ कहकर नितारि होंठ हवाकर सुरक्षयये।

कि उन जैसे बड़े आदमीकी ओलोंमें घूक झोंकना सहज नहीं है।

सुन्दरी उस मुस्कराहटका मतलब स्पष्ट समझ गई। निताईकी वास्तवा पनास लाटके ऊपर ही थी। सिरके चारह आने बाक पड़ गये थे। मूँठ-याड़ी लम्बघट, सिरपर मोटी पोटरी, मस्तकपर सभैरेका चन्दनका सिक्का अमीतक पद्मस्थान था। सुन्दरी उनकी ओर एकटक देखती रही। उस हड्डिका अर्थ समझ लेना निताईके लिए सम्भव न था। "सीसे कुछ उल्लेखित होकर कह डटे—इस तरह क्यों देख रही हो ?

देख रही हूँ।

क्या देख रही हो ?

देख रही हूँ कि तुम भी घाछन हो और जो चले गये वह भी घाछन है। लेकिन दोनोंमें कितना आकाश-वायुका अन्तर है।

बात समझ न पानेके कारण निताईने पूछा—कैसा अन्तर ?

सुन्दरी मुसकाकर बोली—बड़े आदमी छदरे, ओलोंमें न लड़ रहीं। ऊपर शासनमें आकर बैठो। मैं कमस खाकर कहती हूँ गांगुली महाशय तुम्हारी तरह देखकर सोच रही थी कि मेरे मासिकके पैरोंकी तनिक-सी रज पाकर हो तुम-जैसे ही कितने ही गांगुली तर जाते।

सुन्दरीकी यह बात सुनकर निताई श्रेष्ठ और निस्समसे धाकते रह गये, उनके मुँहसे बोल नहीं फूट्य। सुन्दरीने बिज्जम उठा जी और तमाकू मल्ले-मल्ले बिलकुल ही छद्मभावसे कहा—श्रेष्ठ न करो ब्राह्मण देवता मैंने सब बात ही कही है। जाज ही नहीं, बरगबर देखती आ रही हूँ। मासिकके कन्ठकी ओर देखते ही आँखें चौंधिया जाती हैं, मासूम पड़ता है जैसे उनके गलेपर आसमानकी बिल्ली बाँध रखी है। और अपना कनेक देला देन्ते ऐसी जाती है। कदवै-कदवै वह सिकसिकाकर हँस पड़ी। निताई पहलेसे ही हथ्याकी आगमें जल रहे थे, अब कोपसे पागल हो उठे। उनकी आँखें आज भंगारा हो गईं। निस्वाकर कहा—इतना पसन्द न कर सुन्दरी, मुँह लड़ जावगा।

सुन्दरीने बिज्जम फूँकते हुए पात धाकर हँसकर कहा—कुछ न होया। ली तमाकू सियो। मुँह तो तुम्हीं कोमोंका मल्लेपर नहीं जल्लेगा जो मेरे तुम्हीं मासिकको देखकर हँसते हो।

नितार हुआ बैठकर उठ लाइ हुए। सुन्दरीने उनके मुपदेका एक तिरा पकड़ लिया और बैठते हुए कहा—बेटो-बेटो, तुराँ मेरे किराई कलम।

कुसु नितार अपना बुपहा औरते लीकते-बुझाते हुए—“सूखेमें क्या माँमें प”, तेरा सत्यानास हो!—माँकि बाप ऐसे हुए तेजीसे थक दिये।

सुन्दरी वहीं बैठकर थोड़ी देरका लूट ईसली रही। फिर धीरे-धीरे उठकर लम्बर दरवाजा बन्द करके धीरे-धीरे कइती रही—कहाँ बह और कहाँ पद। आकाश इसको कहते हैं। इसने बुला कइसे खनेपर भी सुँपर हमेशा हर पड़ी है। सज्जती जाती है, फिर भी उनकी ओर लौट ठानेकी हिम्मत नहीं पकती—मानो भाग जग रही हो।

९

ठीक कह नहीं सकते, किन्तु कृपास पद हुआ लेकिन वह बात विद्वत होकर विराजके कानोंक पड़नेकी बाकी नहीं रही। उस दिन आकाशका करने आई थी उठ पकड़ी हुआ। विराजने सब कुछ मन लगाकर सुना। फिर गम्भीर होकर कहा—उलका एक कान काट केना ठपित है हुआ।

हुआ विराजकर कभी गई। कइती गई—जानती तो हूँ, उस जेदी बायबल और मँकमें हूँ नहीं है।

विराजने स्वामीकी बुलाकर कहा—तुम सुन्दरीके वहाँ फिर फन गये मे ?

नीलाजने मसते ललाकर जवाब दिया—बहुत दिन पहले रूँटीके हाथपाक आननेके लिए गया था।

“अब न जाना। सुनती हूँ, उलका पाकपकन बहुत लपट हो गया है।” इसना कहकर वह अपने कामसे लगी गई। इसके बाद किन्तु ही दिन बीत गये। सूर्यनायक नित्य निकलते और अस्त होते हैं। उन्हें रोड रखनेका कोई उपाय न होनेके कारण ही धायब पीत गया और यहाँ भी ‘सूखे बाँट’ करने लगी। विराजके चेहरेपर एक गहरी छाया जमाया और गहरी होने लगी। अथ व एडि कम्पन और प्रसर हो गई। वो कोई उलकी और बैठने जाया, उलकी धँसलें जैसे बाप ही लूट जाती। सूखे बेबा गया कम्पा नाग एडिने ही लगातार टसकर पकड़कर, गिरकर जैसे दैगता है, विराजकी आँखोंकी

एपि भी बैठी ही बरज बाप ब बैठी ही मयानक हो उठी है। स्वामीके साथ बातचीत छाम्मा होती ही नहीं। वह सब पोरकी तरह आठा-जाठा है, ठपर जैसे वह देखती ही नहीं। तभी उसके ऊपर हैं केवल छोटी बहू नहीं उरती। वह मोका मिच्छे ही जब-तब आकर उपस्थित किया करती है। पहले-पछे विराजने उसके हाथसे झुटकारा पानेकी बहुत प्रेरणा थी, लेकिन छफ़ नहीं हो सकी। मौलें कम करनेपर वह गटेते छिपट जाती है। कड़ो बात कहनेपर पैर पछड़ छेती है।

उस दिन दण्डरा था। बहुत तकड़े छोटी बहू चुपकर आई और बोली—  
अभीतक कोई उठा नहीं है, पक्के न थीं, कम नवीमें एक मोठा बना आई।

उस पार उसके अभीष्टारका बाट ठेकार हुआ उसका नदीपर जाना कर कर दिया गया था।

देवरानी-जेठानी दोनों स्नान करने गए। स्नान करके उसके बाहर निकलते ही देखा थोड़ी दूरपर एक पेड़के नीचे अभीष्टार राधेप्रकुमार लड़ा है। उस जगह उस समय भी पूरी तरहसे अन्यकार बूर नहीं हुआ था तो भी दोनोंने उसे पहचान लिया। छोटी बहू ग्यसे तिरमियकर, सिमटकर विराजके पीछे जा लड़ी हुई। विराजको कड़ा आश्चर्य हुआ। इतने धीरे यह आदमी आया कैसे? किन्तु तुरंत ही उसके मनमें एक सम्मानना उठी कि शायद वह रोव रही थी वह पहरा दिया करता है। वो ही एक सैकिंड विराज दुनियामें थी, उसके बाद देवरानीका हाथ पकड़कर खींचकर बोली—कड़ी न छ छोटी बहू, पक्षी था।

उसे साथ लेकर ठेक पाकसे दरवाजेतक पहुँचाकर विराज एकाएक कुछ सोचकर बह गई। उसके बाद भीमी पाकसे बीटकर रास्तेतक कुछ दूरीपर जाकर पड़ी हो गई। उसकी दोनों मौलें कम रही थीं। छरपुटे जलप्र प्रकाशमें भी रास्तेतक उस दृष्टिको सह न सका। उसने सिर नीचा कर लिया।

विराजने कहा—आप गले आदमीके कड़के हैं बड़े आदमी हैं। आपकी पर कैसी प्रशंसा है।

रास्तेतक हठवृत्ति हो गया—कुछ जवाब न दे सका।

विराज कहने लगी—आपकी कमीचारी पाहे बिछनी बड़ी हो आप भिन्न  
कमरपर लड़े हैं वह मेरी है।—फिर उठ पारका पाद हाथसे पिछाकर कहा—  
आप भिन्नने कायम हैं इस बातको इस बातकी एक-एक छद्मकी जानती है मैं  
भी जानती हूँ। जान पड़ता है, आपके कोई मों-बहन नहीं है। बहुत दिन पहले  
अपनी दातीके हाथ मैंने आपका यहाँ आनेके किय मन्त्र कर दिया था, वह  
आपने नहीं सुना।

रामेन्द्र किम्बल या मयते इतना अभिभूत हो गया था कि इसनेपर भी कुछ  
बोळ न सका।

विराजने कहा—आप मेरे स्वामीको नहीं जानते। जानते होते तो कभी इसपर  
न आते। इसीसे आज करे देती हूँ कि और कभी आनेके पहले उनको जाननेकी  
प्रेष कर देखिबेगा। इतना कहकर विराज बीरे बीरे जाती गई। वह घरके भीतर  
ज ही रही थी कि उसने देखा पीठावर एक गहूआ हाथमें लिने लड़ा है।

बहुत दिनोंसे उससे बोलचाळ नहीं थी, तब भी उसने पुकारकर कहा—  
भामी भिन्नसे तुम अभी बात कर रही थीं, वह वही कमीचारी बाबू है न।

फटक मारते ही विराजका चेहरा और जौलें आज हो गए। वह 'हाँ' कहकर  
भीतर जाती गई।

पर अचरक वह अपनी बात तो उसी दम भूल गई, लेकिन छोटी बहूके  
किय मन्त्र-ही मन्त्र आत्मन्त्र उद्दिश्य हो उठी। वह बैसक यही सोचने लगी कि  
क्या अपने उते छोटे कम्बाने देख पाया था नहीं। किन्तु जबकि इतक  
साबना नहीं पड़ा अगमग वस मिनहके बाद उस घरसे आर-पौरका शब्द और  
दूसी स्मरणका आलस्यर सुन पड़ा।

विराज शीघ्रकर पीछेमें जाती गई और आठकी मुर्तिका तरफ बैठ गई।

नीलम्बर अभी-अभी नीलसे आकर बाहर आकर मुँह भी रखा था।  
पीठावरके डीटने-गरजनेका शब्द वह अचमक कर लगाकर मुन्ना रखा। उसके  
बाद ही अन्तरकर बेड़ेके पास आया अत आकर उसे लोह बाध्य और उपरकी  
परमें ज लड़ा हुआ।

देखा दूरनेके शब्दसे पीछेकर पीठावरने फिर उठायो कि सामने ही यमराजकी  
तरफ बड़े आँखों देखकर वह विचर्य होकर रुक गया।



जमीनपर पड़ी हुई छोटी बहूको सम्बोधन करके नीलावरने कहा—भीतर क्या बेटी, कोई डर नहीं है।

बहू चौंकी हुई ठठकर खड़ी गई। तब नीलावरने लक्ष्मणवत्से कहा—बहूके सामने ऐसा अपमान नहीं करूँगा। लेकिन मेरी इस बातकी भूलकर भी अबसे सना न करना कि कसतक मैं इस घरमें हूँ तसतक वह सब नहीं हो सकेगा। तू ठसपर जो हाथ उठावेगा उसे ही सीढ़ जाऊँगा। इतना कहकर वह कौट्य था रहा था कि साहस बंदोरकर पीतावर कह उठा—घरपर बंदूक मारने तो आ गये किन्तु कारण जानते हो ?

नीलावर झूमकर लड़ा हो गया। बोला—नहीं जानना भी नहीं चाहता। पीतावरने कहा—तो क्यों जानना चाहोगे ? देख पड़ता है, तब तो मुझे बिल्कुल घर छोड़कर ही मागना होगा।

नीलावर उसका मुँह ठाकता रहा फिर बोला—पर छोड़कर किसे मागना पड़ेगा यह मैं जानता हूँ। तुझे बाद न करना पड़ेगा। लेकिन वह मैं तुझे कसताये जाता हूँ कि कसतक वह नहीं होता, तसतक तुझे सब करके खाना ही पड़ेगा।

इतना कहकर नीलावर खैरनेको हुआ कि पीतावर सहसा सामने आकर लड़ा हो गया। बोला—तौ फिर तुमको भी बसतक देता हूँ याद, कि दूसरेका शासन करनेके पक्षे अपने घरका शासन करना अच्छा है।

नीलावर ठाकता रह गया। साहस पाकर पीतावर कहने लगा—जानते तो हो कि उस पारका घाट किसका है ? अच्छा। मैंने तभीसे छोटी बहूको घाटपर जानेको मना कर दिया था। बाध रात ये ठठकर वह मामीके साथ नहाने गई थी। कौन जाने इसी तरह रोब जाती हो।

नीलावरने विस्मित होकर कह—इसी अपराधपर तुने हाथ उठाया। पीतावरने कहा—पहले सब सुन लो खे। वह जमीनपरका कसका—क्या जाने एकेन्द्र या क्या नाम है उसका—उसकी देश-विदेशमें सुख्यातिकी सीमा नहीं है। आज भागी उसीके साथ बाध पक्षेतक बाँटें करती रही क्यों ?

नीलावर कुछ समझ न पाकर कह उठा—कौन बाँटें करता रहा ? विराज !

पीतांबरने कहा—बी हो नहीं ।

तूने अपनी बोलों देला है !

पीतांबरने मुँहपर हँसनेका-सा भाव आकर कहा—मैं व्यनता हूँ कि तूम मुझ देख नहीं सकते—मेरा वह गाय मगवान् करेंगे' लेकिन

नीलांबरने बौटकर कहा—फिर मगवान्का नाम मुँहपर झूठा है ! क्या करेगा वो कह ।

पीतांबर चाक उठा । कुछ झकड़कर वह स्वरमें कहने लगा—बोलते देना बिना बात कहना मेरा स्वभाव नहीं है । करता हूँ, अगर परमें शासन न कर सको तो वृक्षको मारनेके लिये न पद चौड़ा करो ।

नीलांबरके सिरपर जैसे अकस्मात् छाटीकी पीट पड़ गई । सचमुच उद्घात बिमूढ़ दृष्टिसे ताकते रहकर उसने अन्तमें पूछा—आप बटेरक कौन बातें करता रहा विराज बह ? तूने अपनी आलसे देला है ?

पीतांबर दो-एक पग पीछे लौट चुका था । लड़ा होकर बोला—हाँ, बोलसे देला है—आप बटेरसे घाबर अधिक ही होना ।

फिर नीलांबर कुछ बेरतक चुपचाप ताकता रहकर बोला—अच्छ, अगर यही हुआ तो वह कैसे जाना कि बात करना आवश्यक न था ?

पीतांबर मुँह फेरकर हँसकर बोला—यह तो नहीं जानना लेकिन मेरा भी मार-पीट करना उचित नहीं हुआ। क्योंकि वह पाट छोटी बहूके लिये नहीं बनाया गया है ।

छत्रमरकी उच्छेजनासे नीलांबर दोनों हाथ उठाकर चौड़ा परन्तु सहसा रुक गया । पीतांबरके मुँहकी ओर देलता हुआ बोला—तू एक जानवर है, और फिर छोटा मारूँ ठहर । बड़ा मारूँ होकर मैं तुझको घाय नहीं दूँगा । समा करता हूँ । अगर आज तूने अपने गुरुजनके लिये वो कहा उसके लिये मगवान् तुसे क्षमा नहीं करेंगे—आ । नौ कहकर वह धीरेसे अपने घरकी तरफ आकर दूरे हुए, बेइको छुद अपने हाथसे बाँधने लगा ।

विराजने फ़ान लगाकर सब सुना । लम्बा और गुणासे वह सिरसे पैरतक बार-बार काँप उठी । एक बार विचार किया कि सामने व्यकर अपनी सब बात कह दे, किन्तु उसके पैर नहीं उठे । पवित्र सामने वह वह बात कैसे

अपने मुँहसे उच्चारण करे कि उसके समर एक पर पुष्पकी पुष्प दृष्टि पड़ी है।

बेबा बाँपकर नीलावर बाहर पल्ल गवा।

दीवारको पायी फोसकर विराज आड़में बैठी रही, उसके पसिंके सो जानेपर पुष्पकेते आकर किसीनेपर पड़ रही और सवेरे उसके नींद कुम्हनेके पड़े हो बाहर निकल गई।

इसी तरह मामले होते जब दो दिन बीत गये और नीलावरन कुछ नहीं पूछा सब और एक सख्ती शंका उसके मनके भीतर धीरे-धीरे फिर उठने लगी। उसीके सम्बन्धमें इतनी बड़ी बदनामीकी बातमें पसिंके मनमें कोई कौतूहल न उत्पन्न होनेका कोई संगत कारण उसे ॥ नहीं मिला। अथवा इस घटनासे वह विस्मित हुआ है यह सम्भावना भी विराजकी सान्त्वना नहीं दे सकी। एक तरह इन दो दिनोंको उठने जैसे कुछ-छिपकर बिताया है, जैसे ही दूसरी तरह हर बड़ी उठे वह आधा लगी रही कि अब बात उठेगी अब वे कुम्हकर घटना बनना चाहिये। उस वह आदिसे अन्ततक सब हाथ करके, स्वामीके घरजोंके नीचे अपने हृदयका धारा बोल उठारकर स्वयं होगी उसकी वह बेचैनी बुर हो जावगी। किन्तु क्यों वह कुछ भी सो नहीं हुआ। नीलावर चुप ही रहा।

एक बार विराजने वह भी सोचनेकी चेष्टा की कि सम्भव है, स्वामीने इसपर विचार ही नहीं किया। लेकिन फिर उसने सोचा कि उसके इस तरह सम्पूर्णस्वसे अपनेको छिपाना क्या पसिंके मनमें कदाह नहीं उत्पन्न कर रहा है। पर जिस बातको वह आप इतने दिनतक छिपाती आई है, उसे अब आप ही बाहर कैसे करे। वह दिन भी इसी तरह बीत गया। दूसरे दिन सवेरे विराज भयभीत, व्याकुल हृदयसे परका काम-धंधा कर रही थी। उसका उसके हृदयके गहरे अन्ततकको मफकर पूर्णवर्षकी तरह वह मर्बकर बात बाहर निकल आए कि अगर उन्होंने छोट कसबाकी बातपर विश्वास ही कर लिया हो तो।

नीलावर दूध-पाठ समाप्त करके पठनेवाला ही था कि विराज बाँपीकी तरह उसके सामने आकर हॉपने लगी।

विस्मित नीलावरके फिर उठाते ही विराज औरसे होठसे होठ दबाकर कर

उठी—क्या बो, मिने क्या किया है ? मुझसे बोलते क्यों नहीं ?

नीलांबर हँस दिया । बोला—तुम तो मागती फिरती हो, बात किससे करें ?

मागती फिरती हूँ । तुम क्या एक बार पुकार नहीं सकते थे ?

नीलांबरने कहा—जो आसमी मागता धिरे उसे पुकारनेसे पाप होता है ।

पाप होता है तो यों करो कि तुमने छोटे बस्त्राकी बातपर विश्वास कर दिया ?

उस बात है, विश्वास न करूँगा ?

विराज स्नेह और दुःखसे रो दी । आँसुओंसे चिह्नित गलेसे निश्चयकर बोली—

तब नहीं, घोर छड़ है । तुमने क्यों विश्वास किया ?

तुमने क्योंके किनारे बात नहीं की थी ?

विराज उद्विग्नतासे उत्तर दिया—हाँ, की थी ।

नीलांबरने कहा—तो मिने हसना ही विश्वास भी किया है ।

विराजने हसते-हसते आँखें पोंछते हुए कहा—भगवत विश्वास ही किया है तो फिर उसी नीलांबर तरह मुझे दण्ड क्यों नहीं दिया ?

नीलांबर फिर हँसा । धागे किसे फूटकी-सी उम्भक निम्न हीरीसे उठका मुसलमण्डल उन्मत्त हो उठा । दाहिना हाथ उठाकर कहा—बच्चा तो पाप आसो, बचपनकी तरह और एक बार कान मक्क हूँ ।

पल्लवारों ही विराज सामने आकर, दुनोंके एक बैठ गद्द और तुरन्त ही पल्लवी छतरीपर झेरते गिरकर दोनों हाथ गलेमें बाँधकर फूटफूटकर रोने लगी ।

नीलांबरने रोनेसे नहीं रोका । उसकी भी बाँसों आँखोंमें आँसू भर आये । वह पल्लवीके स्तिरपर चुपचाप दाहिना हाथ रखकर मन-ही-मन आशीर्वाद देने लगा । कुछ देरमें जब बस्त्राका जोर कम हो गया, तब विराजने फिर उठाने बिना ही कहा—उससे मिने क्या कहा था जानते हो ?

नीलांबरने स्नेहपूर्वक गूँह खरसे कहा—जानता हूँ, उसे जानते रोक दिया है ।

तुमसे कितने कहा ?

नीलांबरने हँसकर कहा—कहा कितनीने नहीं । लेकिन एक अपरिचित आसमीसे बात की है, तो बड़े दुःखमें पड़कर ही की है, यह मैं जानता हूँ । तब

बह बात उसके सिखा और क्या हो सकती है ?

विराजकी ओल्लोंछ फिर औसू पड़ने लगे ।

नीलावर कहने लगा—केकिन काम अच्छा नहीं किया । मुझे बताना चाहिए था, मैं ही धुकर उसे समझा देता । मुझे बहुत दिन पहले ही उसके मनका भाव भाख्य हो गया था—फिरने ही दिन सबेरे और शाम उससे देल भी किया है, केकिन तुम्हने मना कर दिया था उसीका लयाक करके किसी दिन कुछ नहीं कहा ।

उठ दिन शामसे आकाशमें बादल छये थे और बूझावोंकी हो रही थी । रातको पति-पत्नीमें फिर खया खली ।

नीलावरने कहा—आज दिनभर मैं उसकी प्रतीक्षामें ही रहा ।

विराज दरकर कह उठी—क्यों ? किसलिए ?

दो बातें न करनेसे मगवानके सामने अपराधी होना पड़ेगा—इसलिए ।

मम और उल्लेखनाके भारे विराज ठट बैठी । बोली—ना, यह न होगा, किसी तरह न होगा । इसे लेकर तुम उससे एक शब्द भी न कह सकते ।

उसके मुल और ओल्लोंके भावको धर्य करके नीलावर अत्यन्त विस्मित होकर बोला—मैं तुम्हाथ पति हूँ, मेरा क्या बह कर्त्तव्य नहीं है ?

बिना सोचै-विचारै ही विराज कह उठी—पहले पतिके और कर्त्तव्य करो उसके बाद बह कर्त्तव्य करने आना ।

क्या !—कहकर नीलावर क्षणभर लम्मित-सा हो रहा । अन्तको धीरेसे 'अच्छा' कहकर, एक सौंठ लीककर, करबट बरबटकर चुप हो रहा ।

विराज उसी तरह पड़ी पड़ी रिवर होकर सोचने लगी कि आज यह कैसी बात खरसा मेरे मुँहसे निकल गई ।

बाहर बपाकी पड़की बूँदोंके गिरनका भीम शब्द होने लगा और खुली हुई सिड़कीसे भागी मिट्टीकी सौंघी सौहावनी गंध भीतर आने लगी । भीतर पति-पत्नी दोनों प्राणी चुपचाप लज्ज होकर पड़े रहे ।

बहुत देर बाद नीलावर गहरे भार्त-लारमें—जैसे अपने मनमें ही कह रहा हो—कह उठा—मैं किसना निकम्मा और अपराध हूँ विराज, यह कैसा तेरे पास सीखा पैसा और किसीके पास नहीं ।

विराजने कुछ कहना चाहा केकिन उसके गलेमें बोक ही नहीं पड़्य । बहुत

दिनीके बाद भाव इस अन्ध दुःख-रैत्र-पीडित दम्पतिके बीच सन्धिका सज्जगत होते ही वह फिर ठिग-मिल हो गया ।

१०

दोहरके समय कहा किसीका न देखकर छोटी बहू पैती हुई भारी और विराजके पैरोंपर गिर पड़ी । स्वामीने जो अपराध किया था, उसके भयसे व्याकुल होकर इधर वो दिनीके वह इसी सुयोगकी रातमें थी । रोकर बोली—उन्हें शाप न देना बीबी, मेरे मुँहकी जोर देखकर उन्हें लमा कर दो । उन्हें कुछ हो गया तो मैं किसीकी नहीं ।

हाथ पकड़कर उसे उठाते हुए, विराजपूर्व गम्भीर स्वरमें विराजने कहा— मैं शाप न दूँगी बहन । मेरा कुछ सिगाड़नेकी उसमें शक्ति भी नहीं है । लेकिन तुम कैसी कटी-कस्तीकी बेइपर बिना किसी अपराधके हाथ बजाना दुर्गा मैरा वो नहीं सहन करेंगी ।

मोहिनी चौप उठी । अम्बू सँकपी हुई बोली—क्या कहें बीबी उनका स्वभाव ही ऐसा है । किन देखाने उनको इतना बोधी बनावा है बही यमा करेंगे । फिर भी कोई ऐसा देवी-देवता नहीं क्या जिसकी मेरे मानवा न मानी हो । पर मैं बड़ी पापिन हूँ, किसीने मेरी पुकार नहीं सुनी । एक भी दिन ऐसा नहीं बीतता बीबी—कहते-कहते वह हठात् बक गई ।

अभीतक विराजने कब्र नहीं किया था कि छोटी बहूकी टारिनी बन्दपटीपर एक लिख गहरा काका दाग पड़ा है । तबमकर कह उठी—है मापेस क्या वह मारका निधान है ?

छोटी बहून कञ्चित मुल बोचा करके गरदन दिखाई ।

विराजने पूछा—क्यासे मारा था ?

स्वामीकी कब्जके धारे छोटी बहू फिर नहीं उठा पाती थी । उसने फिर छुकाये हुए ही पीरेसे कहा—अधे बानेपर उनको शम नहीं राता बीबी ।

तो तो मैं बहनती हूँ । लेकिन मारा किस बीबसे ?

मोहिनी बैठ ही फिर हाकाने बोली—पैरोंमें बड़ी थी

विराज धम्म हो गयी, जलकी बोलोंसे भाग निकलने लगी । कुछ

दूरे हुए विरूत कण्ठसे बोली—कैसे यह बिना तुने छोटी बहू ?

छोटी बहू फिर कुछ ऊपर करके बोली—मुझे जाम्बास हो गया है बीबी ।

विराजने जैसे उसकी बात जानसे सुनी ही नहीं । विरूत कण्ठसे कहा—  
और उसीके लिए तू समा करनेकी कहन आई है ?

जेठानीके मुँहकी ओर देखकर छोटी बहूने कहा—हाँ बीबी तुम प्रसन्न न होओगी तो उनका अनिष्ट होगा, और छानेकी वो बात कहती हो बीबी वो तो तुम्हींसे सीखा है । मेरा जो कुछ है वो सब तुम्हारे ही बरसोंकी

अधीर होकर विराज कह उठी—नहीं छोटी बहू नहीं । झूठी बात न कह ऐसा अपमान मैं नहीं सह सकती ।

मौद्गिलीने बरा हैसकर कहा—अपना अपमान सह जेना ही क्या बहुत अपमान सहना है बीबी ? तुम्हारा जेसा स्वामी-सौम्य संसारमें सब नारियोंको नसीब नहीं होता, फिर भी तुम जो सह रही हो उसे सहना पड़ता वो हमारा खूब है जाता । उनके मुँहकी ऐसी गायब हो गई है, मनमें दुःख नहीं है—यह सब तुम्हारा छठ-दिन बीससे देखना पड़ता है । ऐसे स्वामीका सहना कब तुम्हारे सिर झुकी बी नहीं सह सकती बीबी ।

विराज चुप हो रही ।

छोटी बहूने दोनों हाथोंसे जम्बीसे उसके पैर पकड़ किये और कहा—पताक बीबी उन्हें समा कर दिया । तुम्हारे मुँहसे सुने बिना मैं किसी तरह ना छोड़ूँगी । तुम जो प्रसन्न न होगी तो उन्हें कोई भी नहीं बचा सकेगा बीबी ।

विराजने पैर हटा किये और हाथसे छोटी बहूकी ठोड़ी पकड़कर कहा—  
समा बिना ।

एक बार फिर विराजकी पराजय माथेसे जगाकर प्रसन्नमुख छोटी ब  
पकी गई ।

किन्तु विराज अभिमूढकी तरह उसी जगह बहुत देर तक खम्ब होकर बै  
। उसके हृदयके अन्तस्तरसे कोई जैसे बा  
र पुकारकर कहने लगा—  
। देखकर सीता विराज ।

उसके बहुत दिन तक छोटी बहू इस घरमें

एक कान उसने हमर ही जगा रखा

किन्तु अपनी एक ओ  
मौजद बोले हमर उठ

बड़ी सावधानीसे हथर उभर देखकर इस धरमै प्रवेश किया।

विराज गालपर हाथ रखे रसोईपरके बराम्भेके एक किनारे खम्भ होकर बैठी बैठी यी बैठी ही बैठी ही थी।

छोटी बहूने पास बैठकर विराजके पैर छूकर नीचेसे कहा—जीजी क्या पागल हुई या रही हो।

विराजने मुँह फिटाकर तीव्र स्वरमें उत्तर दिया—तू न होसी।

छोटी बहूने कहा—अपने हाथ ठुठ्ठना करके मुझको अपराधी न बनाओ जीजी। मैं तो तुम्हारे इन दोन्हीं पैरोंकी धूँके बोम्ब मी नहीं हूँ। लेकिन तुम बताओ, कौन ऐसी हाँ थी हाँ! जेठजीको आज तुमने खाने क्यों नहीं दिया।

विराजने कहा—मैंने तो खानेको मना नहीं किया।

छोटी बहूने कहा—मना नहीं किया यह ठीक है, लेकिन एक बार प्यार क्यों नहीं दई? खानेके लिए बैठकर उन्होंने कितनी बार पुकारा एक बार बचाव तक नहीं दिया। अच्छा तुम्हीं करो, इससे कुछ होता है कि नहीं? एक बार अगर पास चम्बे काटी तो वह चाबी छोड़कर कभी न उठये।

तो मी विराज चुप रही।

छोटी बहू कहने लगी—‘हाथ दँठे थे’ कहकर मुझ परका न लगेगी जीजी। तुमने हमेशा सब काम-काज छोड़कर उन्हें खानेके लिए मोकन करवा है—छन्दारमें इससे बड़ा काम तुम्हारे लिए और कोई कभी नहीं रहा। आज

बात पूरी होनेके पहले ही विराजने पागलकी तरह उठकर एक हाथ पकड़कर नीचे लौफते हुए कहा—तो फिर सबकर देल, हठ्या कहकर उसे लौब आकर रसोईपरके बीच लड़ा कर दिया और हावते चाबी दिखाकर कहा—यह देख।

छोटी बहूने ध्यानसे देखा, एक काळे फर्शके पाथमें बिना लाल किये मोटे चाकड़का मल और उसीके पास पड़ा हुआ कौमुआका सारा रखा था। और कुछ मी न था। आज और कोई उपाय न देलकर विराजने इसे नदीके किनारेसे लौफकर पका दिया था।



दलते-दलते छोटी बहूकी बाँलोंसे सर-सर करके बाँसू गिरने लगा किन्तु किराबकी बाँलोंमें जलका आगमन तक न आ । दोनों बहुरें—देवानी जेठानी—बुपचाप एक दूसरेका मुँह टाकती रहीं ।

विराजने अभिप्राय सहाय स्वरमें कहा—तू भी तो एक ली है, मुझे भी तो पताकर स्वामीके आगे गवसी रखनी पड़ती है । तू ही बता, बुनिया में क्या कोई ली आगने बैठकर स्वामीका ऐसा मोहन करना देख सकती है ! पहले वह बता फिर तेरे मुँहमें जो आगे बही कहकर मुझे गाकी दे—मैं कुछ न बोलूँगी ।

छोटी बहू एक बात भी न कह सकी उसकी बाँलोंसे उसी तरह जमावार जल सरने लगा ।

विराज कहने लगी—दूध-संयोगसे अगर किसी दिन रखौंमें कोई दोष होनेसे उन्होंने एक कौर भी कम लाया है तो छारे दिन मेरे हृदयके भीतर कैसी सुन्नर्वां बुनती रहीं हैं, वह कोई और नहीं जानता तू जानती है छोटी बहू । और आज उनकी मूलके समय वह जो जाकर देना पड़ता है—सो वह भी साफ़ अब नहीं निकल सकेगा । आगे वह सहन न कर सकी, देवानीकी छतरी पर पड़ाइ लाकर गिर पड़ी और दोनों हाथोंसे उसके गलेसे कपड़कर जोरसे रो उठी । इसके बाद सभी बहनोंकी तरह दोनों बहुत देरतक एक दूसरेके कंठसे छिप्यी रहीं । बड़ी देरतक वे दोनों आभिन्न नारी-हृदय बुपचाप आँसुओं से भीगते थे । इसके बाद विराजने फिर उठाकर कहा—नहीं मैं तुझसे प्रिया लौंगी नहीं क्योंकि मेरा तुझ समझनेवाला धरे सिवा और कोई नहीं है । मैंने बहुत सोच-विचारकर देखा है कि मेरे यहाँसे हरे बिना उनका वह कम दूर न होगा । लेकिन रहनेसे तो वह मुझ देखे बिना एक दिन भी न बिता सकेगी । मैं जाऊँगी बता, मेरे जानेपर तू उम्हें देखेगी ।

छोटी बहूने बाँसू उठाकर पूछा—कहाँ जाओगी ?

किराबके खूबे होठोंपर एक कठिन मुसी हुई ठण्डी हँसीकी देखा लीन गइ । खान पड़ता है, एक बार उसके मनमें बुनिया भी आता वह हिनकी भी । उसके बाद बोली—वह कैसे जानूँगी वहन कि कहाँ जाना होता है । सुनती हूँ उससे बहुरें पप गायब और नहीं है । तो वह गाहे जो हो वह दिन-रातकी

कुहन तो मिट जायगी !

अबकी बार मतलब समझकर मोहिनी काँप उठी और म्यस्त होकर उसके मुँहपर हाथ रखकर कह उठी—छी छी यह बात मुँहपर भी न खना बीबी, आत्म-हत्याकी बात जो कहता है, उसे पाप होता है और जो जानोंसे मुन्ना है उसे भी पाप लगता है । छी छी, यह क्या हो गई हो तुम बीबी !

विराजने हाथ हटाकर कहा—तो नहीं जानती । वैसा यह जानती हूँ कि उन्हें सब में मरनेको नहीं दे सकती । आज मुझे पूछकर यह वचन दे कि जिस तरह होगा वृद्धों ग्राह्योंमें मेक कर देगी !

“बचन देती हूँ” कहकर मोहिनीने सहसा बैठकर विराजके दोनों पैर जोरते पकड़कर कहा—तो मुझे भी आज एक मिला दोगी, बोसो ?

विराजने पूछा—क्या ?

छोटी बहूने कहा—तो एक मिनट ठहरो, मैं जाती हूँ ।

इतना कहकर उसके जानेको पैर बढ़ाते ही विराजने उसका कौनसा पकड़ लिया और कहा—नहीं जा नहीं । मैं एक शिक्का किसीसे नहीं दूँगी ।

छोटी बहूने कहा—क्यों न जायगी ?

विराज वह जोरते फिर दिखाकर बोली—ना यह किसी तरह न होगा । मैं किसीका भी कुछ न ले सकूँगी ।

छोटी बहूने खणमर फिर दड़िते केतानीकी इस आकस्मिक उचेलनाका इत्थ किया, उसके बाद वहीं बैठ गई और उसे जोरते नीचकर पस बिठाकर कहा—तो मुनो बीबी ! मासूम नहीं क्यों, पहले तुम मुझे प्यार नहीं करती थीं अफ़सरी तरह बात भी नहीं करती थीं । इसके लिए मैं छिपकर अकेलेमें कितना रोई हूँ, जितने बेबी-बेस्ताओंको पुकारा है, इसकी कोई गिनती नहीं । आज उन्होंने भी मुँह उठाकर देखा है और तुम्हने भी छोटी बहन कहकर पुकारा है । अब क्या सोचकर बैठो, अगर मुझे इस हाकूममें देखकर कुछ न कर पाती, तो तुम किस तरह भाकुन होती फिरतीं ?

विराज कबाब न दे सके, फिर छुकाकर रह गए ।

छोटी बहू उठकर चम्पी गई और जम्बी ही एक बनी टोकरीको लप लाइकी खानेकी लाम्बीसे मरकर बाइ और लाम्बने रख दी ।

विराज स्थिर होकर बैठ रही थी। किन्तु छोटी बहू जब पास जाकर उसके बॉन्सका एक छोर उठाकर उसमें एक सोनेकी मोहर बाँधने लगी, तब उसके नहीं रहा गया। उसे बोरते पीछे ठेलकर पिछड़ा ठठी—ना, यह किसी तरह नहीं होगा—मर जानेपर भी नहीं।

मोहिनी उस बच्चेको सीमाबद्ध कर सिर उठाकर बोली—होगा क्यों नहीं, निश्चय होगा। यह मेरे बेटकीने मुझे म्माहके समय ही थी।

इतना कहकर बॉन्समें बाँधकर, मुँहकर और एक बार बैद्यनीकी तरफ रब साधेसे ध्याकर, वह घर चली गई।

## ११

समयका इतने दिनका पीछलके कर्मोंका कारखाना एक दिन एकएक बन्द हो गया और बॉन्सक आधिकारी को लड़की यह खबर सिराजको देने आई। सौबोंकी किसी बह होनेसे वह अपनी तरह-तरहकी छतियों तथा अनुविद्याओंका म्योरा ब्यापार करने लगी। सिराजने पुन होकर मुन्ना। उसके बाद वह केवल एक छोटी-सी छत छेड़कर रह गई। बच्चीने समझा उसके दुःखका हिस्सा बैद्यनेश्वरका उसे नहीं मिला, इससे वह दुःखित होकर पड़ी गई। हाबरे अवोध बुद्धिवाकी लड़की। तू कैसे समझेगी कि उस छोटी-सी छतमें क्या था, उस मैनकी भावमें कैसा दर्शन उठ रहा था। धान्य-मोन पृथ्वीके अस्तित्वमें कैसी आय बचकती है, वह समझनेकी समझा तू कहाँ पावेगी।

नीलेश्वरने आकर कहा—उस काम मिला गया है। जानेवाली दुर्गापूज्यते ही कंककसेके एक नामी कीर्तन-दलमें वह लक्ष्य बसावेगा।

खबर सुनकर विराजका चेहरा सुरे जैसा रह हीन हो गया। उसका स्वामी गणिकाके अवीन होकर, गणिकाके साथ, सब गले आबुधियोंके लामने गलत-बलाता धिरेगा उस आहार कुदेगा। धन्य और पिछारते वह जैसे बरतीमें सम जाने लगी लेकिन गृह कीड़कर मना भी नहीं कर सकी। और कोई उपाय तो न था। संप्ताके आन्धकारमें मीकांकर उसके मुँहका ग्राव मही देख पाया,—  
धपटा ही हुआ।

भरेके सिपायोंमें पानी जैसे धड़ी-धड़ी अपने खबके पिछुको तर-ग्रान्तमें

अंकित करते-करते दूरसे दूर हटता चला जाता है। ठीक उसी तरह विराजका घरीर सुलने लगा। बहुत देरकी साथ अत्यन्त सुस्वास्थ्यसे ठीक उसी तरह उसके घरीर-तटकी घरी भविष्यवाणीको निरन्तर बनाकर करती हुई उसके देवनीयता अनुपम यौवनकी प्रेमा न जाने कहीं गायब हो जाने लगी। ईह सल गई मुल मुरझा गया और हृदि अस्वामाधिक हो उठी—जैसे वह कोई बराबरी थीम निरन्तर देल रही है। अब वह उसे देखनेवाला कोई नहीं। वी केवल छोटी बहू। एक महीनेसे अधिक हुआ, वह भी माहके बीमार पड़ जानेके कारण माहके गद है। नीलांबर दिनकी बेला प्रायः ही नहीं रहता। अब जाता है, उस रातका अंधकार छा जाता है। दोनों ओरों अक्सर काक रहती हैं। लौट गमन कटती है। विराज उस कुछ देख पाती है, उस कुछ समझ लेती है। लेकिन कुछ भी नहीं कहती। कहनेको भी भी नहीं चाहता, अब साधारण बोल-भाषा करनेमें भी उसे कम्बन्ति मायूम होती है।

कई दिनोंसे इकर तीसरे पहर जादा लगाकर तिरम हई होने जाता है। इसी हावमें उसे डिमदिमाता हुआ सम्प्राप्ति दीपक हाथमें लेकर रत्नोद्वारमें प्रवेश करना पड़ता है। स्वामी घरमें रहते नहीं, इसलिए अब वह दिनकी प्रायः मौज्जा नहीं बनाती रातको बनाती है। परन्तु हर समय उसे हुलार रहता है। स्वामीका खाना हो जानेपर हाथ-पैर धोकर वह पड़ रहती है। इसी तरह उसके दिन बीत रहे हैं। आनन्दक विराज अपने आहूत देवतासे मुँह ठठाकर देखनेके लिए नहीं कहती और परदेकी तरह मार्चना भी नहीं करती। नित्यकी पूजा सम्राट करके गलेमें मौज्जा डालकर जब प्रणाम करती है, उस मन ही मन केवल गहरी कहती है कि भगवान्, किस राहमें वह रही है, उसी राहमें वह कसदी का गई।

उस दिन छायाकी संश्रुति थी। सबेरेसे ही जोरकी वर्षा रुकनेका नाम नहीं लेती थी। तीन दिन पार भोगनेके बाद विराज सूख-प्याससे व्याकुल होकर सम्प्राप्ति उपरान्त बिछीनेपर उठकर बैठ गई। नीलांबर घरमें न था। कीर्ति इतना बर रहनेपर भी, पत्नी उसे भीषमपुरके एक बनावट दिव्यके यहाँ कुछ प्रामाणिक आशासे जाना पड़ा था। किन्तु वह गया था कि किसी तरह रातको नहीं गहरी रहूँगा, जिस तरह भी हो, उसी दिन सम्प्राप्ति के

आँखों से पानी निकल रहा था, आजका दिन भी बीत चुका, मगर उसकी धारण नहीं हुए। कई दिनोंके बाद आज विराज दिनमें कई बार रोने लगा। जब किसी तरह सेरे नहीं रहा गया तब सन्ध्याका पीपक बसाकर, एक छोड़िया सिरपर बाँधकर कोंपले-कोंपले बाहरके रास्तेके किनारे जाकर खड़ी हो गई। सूर्यके अस्तकारके बीच अर्धतक मकर गई उसने ध्यानसे देखा, ऐक्यि कहीं कुछ न देस पाकर जोद आई। मीने कपन और मीने पच्छीमच्छपकी सीढ़ीका छाया डेकर वह बैठ गई और हलनी देर बाद फिर रोने लगी। क्या जाने, उनको क्या हुआ। एक तो दुष्ट कष्ट और अनाहारसे टनकी देह बुलक हो रही है उसपर वह परिश्रम। कहीं बीमार तो नहीं पड़ गये। कहीं किसी घोड़ा-माड़ीके नीचे तो नहीं आ गये। क्या हुआ, क्या सर्वनाश घटित हो गया—घरमें बैठे-बैठे वह कैसे कहे। किस तरह क्या उपयम करे। और एक निश्चित यह है कि पीछापर भी घर नहीं है। एक तीसरे पहर वह छोटी बहूको लेने गया है। छारे घरमें विराज एकदम अकेली है और स्वयं भी अस्वस्थ है। आज दोपहरसे बुलार बरस उठर गया है मगर घरमें ऐसी बरा सी भी कोई चीज न थी, जिसे वह लायी। दो दिमसे उसने पानी पिया है। पानीमें मीनेके कारण उसे बड़ा माकूम पड़ने लगा सिरमें पड़कर आनं भगा। वह किसी तरह हाथों और पैरोंको जोर देकर सीढ़ी छोड़कर सठ खड़ी हुई और पच्छीमच्छपके मीठर जाकर बगीचपर ॥ पेटके वस पड़कर फिर पड़ने लगी।

सदर दरवाजेपर किसीने धक्का दिया। विराजने एक बार कान बसाकर मुना। वृत्त बका पड़नेके साथ-ही-साथ 'आरी हूँ' कहकर पक-भरमें ही चौड़कर उसने कियाई लोका दिने। अब वह पड़ीमर पड़के वह ठठकर बैठनेमें भी असमर्थ थी।

कियाईमें जो बका ह रहा था वह उस मोहकलेके किसानका बड़ा था। उसने कहा—मौली दादा ठाकुरने एक सुली बोली मँगी है। है हो।

विराज अच्छी तरह समझ नहीं पाई। मौलिकका छाया डेकर कई सेरेण्ड तक ठाकुर रहनेके बाद बोली—बोली मँगते हैं ? कहीं हैं वह ?

कड़केने बकाव दिया—गोपाल महाराजके शपथी गति करके अभी तब सींग लेते हैं।

ऐसे ही निर्धनकी तरह पड़े खूब उठने न जाने क्या-क्या सोचकर देखना चाहता, सोचने भी क्या किन्तु उसका अभी सोचना असम्भव था। मर २, उसी बीच अन्धकार छाया बाद आ गया कि छारे दिन उन्होंने कुछ खाया-पिया नहीं।

फिर उसके कंठ नहीं रहा गया। कभीसे किसीना छोड़कर, दीपक हाथ लेकर वह मन्दारम गार्ड और बागीचीसे लोभन करी कि दीपनके कमरे कुछ निकल आये। किन्तु कुछ भी न था। बागका एक कम भी उसे न देख पड़ा। वह बाहर आकर लूटके छारे कुछ बेरुख सभी होकर लौटती थी। इसके बाद ठूँक मारकर हाथका दीपक धुआँकर रस दिया और लिवकी लोभन बाहर निकल गई। कैसा घोर अन्धकार था। किन्तु वह भीषण सदाय, मनी धारियों-झेंडेसे मरी फिक्क पड़ने कमरे वह लग रहा कुछ भी उसकी गतिसे नहीं रोक सका। बागके दूसरे अंगरेज, वनके लीवर बागानीकी झेदी-झेदी छेड़फुँकी थी। विरज उसी ओर गई। बाहर कोई सीधार नहीं थी। विरजने एकदम अँधियारी लगे होकर पुकारा—तुम्हारी !

पुकार सुनकर तुम्हारी रोसनी हाथसे छिने बाहर आकर विलम्बसे अन्धकार हो गया।

इस क्षणमें तुम कैसे आई मँची ?

विरजने कहा—मोड़ेसे बाबल दे।

बाबल हूँ ?—कहकर तुम्हारी हस्तुति हो रहा, इस अद्भुत मयनाका कोई अर्थ उसे सोचने नहीं मिला।

विरजने उसके मुँहकी ओर देखकर कहा—तुम्हारा न रह तुम्हारी, बर कसरी आकर दे।

तुम्हारीने और दो-एक प्रश्न करनेके बाद आसक्त आकर विरजके अँधियारी बाँध दिने और कहा—लेकिन इन मोड़े बाबलसे क्या काम आयेगा मँची ? यह तो तुम अयोग्य न लगेगे।

विरजने फिर हिचककर कहा—सा लगेगे।

इसके बाद तुम्हारीने रोसनी लेकर रास्ता दिखाया जाता। विरजने मना करके कहा—अगर नहीं है, तू अकेला बीटकर न आ लगेगा। और वह पलक मरसे

गति करके ? विराज स्वामिन् हो रही । गोपबन्धनमयी इन ओम्में एक दूरके नातेका आत्मीय था । उसके कुछ फिटा बहुत दिनोंसे बीमार थे । दो दिन पहले त्रिवेणीमें गंगा-यात्रा<sup>१</sup> कराई गई थी । आज गोपबन्धन उनकी मृत्यु हो गई । राह करके अभी सब लोग बीरे हैं । कड़कने सब लखर देकर अन्तमें बतलाया कि इधर आसपास राधा ठाकुरके बराबर किसीको नाड़ीकी फल नहीं है, इसीसे वह भी ठीकी दिनसे साथ थे ।

विराज बन्धनमयी हुई भीतर आई और एक पीली देकर फिटरपर पड़ रही । जन प्राणीसे अन्य क्षेत्रों परके भीतर उसकी ली लकीरी है सुखार, दुःखित और अनाहारसे मुक्त हो रही है—यह सब बान-बूझकर भी जिसका स्वामी बाहर फोफकार करनेमें लगा है उस अमागिनको कहने-सुननेके लिए और क्या बाकी रहता है ? आज उसका शिथिल निष्ठुर मस्तिष्क बार-बार जोर देकर कहने लगा—विराज सवारमें ठेग कोई नहीं है । तरे में नहीं है, बाप नहीं है, भाई नहीं है—स्वामी भी नहीं है । है केवल यमराज । उनके पास जानेके सिवा तेरी ज्ञात घान्त होनेका कोई दूसरा स्थान नहीं है । बाहर बपाके शब्दमें शीतुयोंकी संकारमें, हवाकी सनसनाहटमें यही 'नहीं है, नहीं है' का शब्द निकलकर उसके दोनों कानोंके भीतर गूँजने लगा । सन्ध्यामें चाकल नहीं कोठारमें धान नहीं बागमें फल नहीं पेलरमें मछली नहीं—सुख नहीं, शान्ति नहीं, स्वास्थ्य नहीं, परम छोटी बहू नहीं । उनके साथ आज उसका स्वामी भी नहीं । अब य, आश्चर्य यह है कि आज किसीके शिथिल विधेय कोर शोभका माप भी उसके मनमें नहीं उठा । एक रात पहले स्वामीकी इस हृदयहीनताके ली हिस्सेका एक हिस्सा भी, बान फफटा है, उसे शेषसे पागल बना देया । किन्तु आज न जाने कैसा एक तरहका सम्म अचानक उसे अनुभूतिमय बना देने लगा ।

१. हुयकी जिसेका त्रिवेणी पायक प्राप्त । २. बंधनमें अब राधीके बचन की कोई जाया नहीं रह जाती है या ऊर्ध्ववास बचने कराती है सब उसे बरिपा समेत रखा या किसी नहीके कियारे से बाकर अचानकमें रख देते हैं और सब 'हरिबोध हरिबाक' का उच्चारण करते हैं । इसीको रंधाबात्रा करते हैं ।





रहू। बसिक हाथमें तू नहीं है—तूने ज्ञान गैरा दिया है। तू अब अपने आपमें नहीं है।

विराज बैठ ही उसका मुँह चाकरी रही।

नीलावरण कहा—किसकी आँखोंमें धूँध होकरना चाहती है विराज ? नहीं ! मैं बड़ा ही मूल्य हूँ इससे उस दिन पीतावरकी किसी बातपर मैंने विश्वास नहीं किया। लेकिन वह छाया भाइ है उसने मयाय भाइका ही काम किया था। नहीं तो तू क्यों नहीं कह सकती कि कहाँ थी ? क्यों छुट कहा कि तू पाठपर थी ?

विराजकी दाना आँखें अब टीक पागलकी आँखोंकी तरह दहकने लगीं। तबपि कमलसरका संपत करके जवाब दिया—छुट बात इतकीय कही थी कि वह बात तुमकर तुम व्यक्तिगत हानि, दुःख पाओगे, भाइव तुम्हारा खाना न होगा इससे। लेकिन वह मय मिया है। तुम्हें कल्याण-धरम भी नहीं है, अब तुम अनुपन भी नहीं रह।—लेकिन तुम्हें छुट बात नहीं कही ? एक पशुको मार डालना बड़ा सऊ करते कमजोर होती किन्तु तुमको नहीं हुए ! भले आदमी, रोमार कोको धरम भककी छोड़कर किस विषयके परमें तीन दिनतक तुम गोजिकी वमपर दय किया रह थे, बताओ ?

अब नीलावरण बकामत न कर सका। 'बतावा हूँ' कहकर हाथके पाठ रखा हुआ खाली पानका डिब्बा उठाकर उसने विराजके मयेको लाकर करतें खींच मारा। बड़ा डिब्बा उसक कपारमें ब्याकर सन-स नाचे कुड़कर गिर गया। इसत-देखते उसकी आँखके कोनेस बहकर होठोंके किनारोंक लून फूँक गया।

बापें हाफसे माया बहाकर विराज निश्चय उठी—मुझे मारा ?

नीलावरण हाठ और मुँह बोपसे कौपन बो। बोव—ना मारा नहीं। लेकिन दूर हो मेर सामनेसे—यह मुँह अब न बिल्ला—बकरमी, दूर हो जा !

विराज उठकर खड़ी हो गई। बोली—जाती हूँ।

एक पय भाग बहकर सहसा ब्यंकर खड़ी होकर बाध्य—लेकिन सह ठा ल्याये ? कक अब नाह आगेया कि बुलारके ऊपर तुम्हने मुलको मारा है निहाल दिया है, तब उस सह सकीने ? मैंने तीन दिनस कुछ खाया-पिया नहीं तो मैं

करके, घान्त भावसे ही अवाक दिपा—आप का-सीकर सो रहो, वह बात कह मुन केना ।

नीलमरने फिर हिम्माकर कहा—गहीं आप ही मुनैगा । कहाँ यह थी बोझो !

उसकी निश्चिन्ता ठग देखकर उठने खुलमें भी विराजने हँसकर कहा—अगर न बताऊँ !

नीलमरने कहा—बताना ही हाथा । बताओ !

विराजने कहा—मैं यह किसी तरह न बताऊँगी । पल्ल साकर सोझो, तब मुन सकौने ।

नीलमरने इस हँसीपर कुछ ध्यान न दिया । दोनों ओरों फैलाकर फिर उठावा । उन ओरोंमें अब वह खुम्हरी या आच्छन्न भाव न था, हिंसा और घृणा फूटकर बाहर निकल रही थी । उसने मवानक स्वरम कहा—ना किसी तरह नहीं बिना मुने तुम्हारे हाथका पानीतक मैं नहीं पिऊँगा ।

विराज चौंक पड़ी । अज पड़ता है, काळे नागके बैठ केनेसर भी आदमी उस तरह नहीं चौंक उठता । वह अड़सकाटे-अड़सकाटे दरवानेके पासतक पीछे हटकर जमीनपर बैठ गई । बोझी—कहा कहा ! मेरा दुधा पानीतक नहीं पिबोने !

ना किसी तरह नहीं ।

विराजने पूछा—क्यों ?

नीलमर निश्चिन्ता ठग—उसपर पूछती हो, क्यों ?

विराज बुझाप स्वर दक्षिण स्वाभीके मुखकी ओर टाकती रही । अन्तमें पीरसे बोझी—समझ गई । अब नहीं पूछूँगी । मैं भी किसी तरह नहीं कहूँगी । क्योंकि कह अब तुम्हें होश होगा, तब आप ही समझ जाओगे । इस समय तुम अपने आपमें नहीं हो ।

नयेबाब तब यह समझता है, लेकिन अपनी बुद्धि अज होनेकी बात नहीं यह समझा । बहद दुर्लभ होकर नीलमर कहने लगा—मिने सौदा पिबा है, पही तो कहती हो ? गौआ भाव कि कुछ नया नहीं पिबा, जो मैं होश-हृष्टमें नहीं

उड़के आकाशमें गहरे बावक छाये थे, टिप-टिप करके पानी गिर रहा था । नीलेश्वर लुके दरवाजेकी चौखटपर खिर रखकर किसी समय सो गया था । उसका उसके सोये हुए कानोंमें आवाज आई—बहूबी !

नीलेश्वर हड़बड़ाकर उठ बैठा । घायल स्थानका नाम सुनकर ऐसे हा किसी बरफ के बरबसे धिरे प्रभावमें भीतरघाबी इसी तरह व्याकुल होकर ठठ बैठी थी । वह भीलें मलटा हुआ बाहर आया । देखा, आँगनमें खड़ा तुलसी पुष्कर था है । कंक सारी रात बन-बनमें हर एक वृक्षके नीचे खो-खा-बकर, राकर, पड़े डेढ़ बघे पड़े पका हुआ बर हुआ नीलेश्वर कीट आया था और दरवाजे पर ही बैठा था । उसके बाव न जाने कब उसे खीर आ गई थी ।

तुलसीने पूछा—भौंभी क्यों हैं बाबू ?

नीलेश्वर हठबुद्धिसे तरह उसकी ओर ताकता हुआ बोला—वह न किसे पुकार रहा था ?

तुलसीने कहा—बहूबीको ही पुकारता हूँ बाबूजी । कंक पार रात बंते घोर भेदोंमें बाकर खौंभी हमारे घरसे मोटे बावक मगकर आई थीं । इसीसे सबरे दरवाजा खुल पाकर आनेसे पका आया कि उस बावकसे कुछ काम निकल ।

नीलेश्वर मन-ही-मन सब समझ गया लेकिन कुछ बोला नहीं ।

तुलसी बोला—तो इतना उड़के बिड़की किसने खोली ? आन पड़ता है बहूबी घाट पर मह है । इतना कहकर वह पका गया ।

उसके किनारे-किनारे जितने गये थे, जितने मोह थे, जितनी खादियों थीं सबको देखते, खोले नीलेश्वर-जितने न बहाया था, न खाया था—सहसा एक ब्याह कंक गया बोला—यह क्या पागलपन मरे सिरपर सवार हो गया है ! क्या अकतक उसे यह याद आनेको बाकी होगा कि दिनभर हुआ, मैंने कुछ खाया नहीं, अब भी क्या वह क्यों किसी कारणसे धनभर भी ठहर रहती है ! तो फिर मैं यह कंक बाहुमुख काम सर्वसे करता फिर रहा हूँ ! यह सब आँखोंके सामने ऐसा मुखपट होकर दिखाई देने लगा कि उसकी सारी बुद्धि एकदम भो-पूँछ मह । वह बीचड़ ठेकता गेलीके देके खोदता, नाके-

इस अन्धकारमें तुम्हारे लिए भीस भोगकर जाह हूँ। इस अन्धकारको छोड़कर  
रुख रो सकोगे।

रक्त रेशमकर नीलनरका नया उतर गया था वह मूढकी तरह चुप हो रहा।

विराजने खेतीके औषधले रक्त पोंछकर कहा—इधर शास्त्रमेंसे अपनेके लिए  
खोज रही थी, लेकिन तुमको छोड़कर नहीं था सही। औषध उठाकर देखा  
मेरे देखमें कुछ नहीं था गया है औषधोंसे अन्धकी तरह नहीं समझा एक पय भी  
बचनेकी शक्ति नहीं है। मैं न जाती लेकिन स्वामी होकर जो बोलन तुम्हें मुझपर  
कहाया है उससे अब मैं तुम्हें मुझ नहीं दिखाऊंगी। तुम्हारे पैरोंके नीचे  
मरनेका बोम ही मेरा सबसे बड़ा बोम था। इसी बोमको मैं किसी तरह छेद  
नहीं पा रही थी। आज उसे मैं छोड़ती हूँ। कहकर मायेका रक्त पोंछते-पोंछते  
वह लिङ्गकीके लुके हुएसे फिर एक बार अन्धकारपूर्ण रागमें जाकर अहस्त  
हो गई।

नीलनरने कुछ कहना चाहा, लेकिन ज्ञान न दिख सका बौद्धकर पीछे-  
पीछे जाना चाहा, लेकिन उठ नहीं सका। किसी मावूके मंकेसे उसे अपना  
फरकी मूर्ति बनाकर विराज औषधोंसे ओझल हो गई।

आज एक बार उस सरस्वती नदीकी ओर औषध उठाकर देखो, डर मावूम  
होगा। वैशाखकी वह स्वयं कल्याणी, धीरे बहनेवाली नदी घाबनके अंतिम  
दिनोंमें कैसे तीव्र बेगसे दोनों किनारोंको जुबाकर तेज धारासे बह रही है। जिस  
काछे फरकीके ऊपर एक दिन बसतके प्रभावमें दोनों ग्राह-बहनोंको असीम स्नेह  
मुझसे एक साथ बैठे हमने देखा था, उसी काछे परस्परके ऊपर विराज आज  
औषधी रागमें किस हृदयको लेकर कौनसे-कौनसे जाकर लड़ी हो गई।

नीचे गहरी धन-राशि मुहुर प्राचीरकी धीवारसे पड़ा साकर, रक्तकर  
भरने बनाती हुई वह रही थी। उसी ओर एक बार मुककर देखकर वह सामने  
घबकी रही। उसके पैरोंके नीचे काव्य फरकी, सिरके ऊपर बारबोंसे भिन्न नील  
आकाश, सामने काव्य काव्य, चारों ओर पना काव्य निराश्व पन और हृदयके  
भीतर इन सबसे अधिक काव्य व्याप्यहत्याकी प्रकृति। वह वहीं बैठकर अपने  
औषधसे अपने हाथ-पैर मजबूतीके साथ जेदकर बाँधने लगी।

उसके आकाशमें गहरे बादल छाये थे, टिप-टिप करके पानी गिर रहा था । नीलावर लुके दरवाजेकी चौखटपर सिर रखकर किसी समय सो गया था । सहसा उसके सामने हुए कानोंमें आवाज आई—बहूजी !

नीलावर हड़बड़ाकर उठ बैठा । शायद शामका नाम सुनकर ऐसे ही किसी कपड़े बदलतेसे भिरे प्रयासमें भीराबजी इसी तरह व्याकुल होकर उठ बैठी थीं । वह आलें मल्लया हुआ शहर आया । देखा जंगनमें लड़ा तुलसी पुष्कर रहा है । कल सारे रात वन-वनमें हर एक वृक्षके नीचे खोम-खोजकर, रंकर, पच्चे डढ़ पच्चे पक्षे पक्षा हुआ, बरा हुआ नीलावर झोठ आया था ओर दरवाजे पर ही बैठा था । उसके बाह न जाने कब उसे नींद आ गई थी ।

तुलसीने पूछा—मौजी क्यों हैं बाबू ?

नीलावर हठमुद्रिकी तरह उसकी ओर ताकता हुआ बोला—तब तू कितने पुकार रहा था ।

तुलसीने कहा—बहूजीको ही पुकारता हूँ बाबूजी । कल पुर रात बंठ पेर भैंसेमें जाकर मौजी हमारे परसे मोटे पावक मोंगकर आई थीं । इसीसे सबरे दरवाजा खुल पाकर आनेने पका आया कि उस पावकसे कुछ काम निकला !

नीलावर मन-ही-मन सब समझ गया लेकिन कुछ बोधा नहीं ।

तुलसी बोला—ठा इसने तड़के खिड़की किसने खोली ? जान पड़ता है बहूजी पाट पर गई हैं । इसका कहकर वह पलक गया ।

जदीके किनारे-किनारे कितने पक्षे थे कितनी मोड़ थे, कितनी झाड़ियाँ थीं सबको देखते, खोजते, नीलावर—कितने न नहाया था न खाया था—सहसा एक ब्याह रुक गया बोला—यह क्या पागलपन मेरे सिरपर सवार हो गया है । क्या अकस्मात उसे यह पाल आनेको बाकी होगा कि दिनभर हुआ भी कुछ खाया नहीं, अब भी क्या वह करी किसी कारणसे क्षयभर भी ठहर सकती है ! तो फिर मैं यह कैसा अद्भुत काम करनेसे करता फिर रहा हूँ ! यह सब भौल्लेंके सामने ऐसा सुस्पष्ट होकर दिखाई देने लगा कि उसकी सारी मुस्मिठा एकदम धो पुँछ गई । वह कीचड़ टेकता खेतोंके देहे तोड़ता नाछे-

को धँसता उड़ सौंख परकी ओर भागा ।

जब दिन समाप्त होनेको था, पश्चिम आकाशमें सूर्यदेवने क्षणभरके लिए बारसोंकी धँकड़े अपना छाऊ-छाऊ मुल बाहर निकाला था उठ समय परमें पुसकर वह सीधा रसोईपरमें जाकर खड़ा हुआ । फर्कि ऊपर उस समय में आसन बिठा हुआ है गठ राबिका परोछा हुआ मात खूना फ्ला है, ठिक्कवहे धार चूहे रोज खे है, किसीने छोड़ा नहीं है । औपरमें उसने गौर नहीं किया था इस समय मातकी शकल देखकर ही समझ गया कि वही दुकानोकर बिठा हुआ मोटा बानस है वही निराहार धूले स्वामीके लिए बिराज खरखे कौपली हुई अन्धकारमें छिपकर मीन मोंग धार भी, इसीके लिए उसने मार काट, अन्धम्य कटु बात सुनकर खया और बिकारके मारे बर्बादी म्यानक राधमें वह घर छोड़कर चली गई है ।

नीबंकर वही बैठकर, दोनों हाथोंसे मुँह छिपाकर, किसीकी तरह आर्चनाय करता हुआ पाक मारकर रो उठा । जब कि वह अभीतक झैठकर नहीं आई, वह उसके झैट आनेकी बात वह न सोच सका—अपनी फनीको वह अनठा था । वह बिना किसी संजवके वह समझता था कि बिराजमें कितना स्वामिमान है, मास जानेपर भी परस भरमें आसय छेकर वह कभी इस कलंकको प्रकट करना नहीं चाहेगी । इसीलिए उसका हृदय मीतरसे हठनी बस्यो इस तरह हाहाकार कर उठा । इसके बाद धरके कल बाँधा फुकर, दोनों हाथ धामने पछमकर, बिना बिधाम किने बारबार कहने लगा—वह मैं वह न छूँया बिराज दू ला ।

सन्धा हो यह, इस भरमें किसीने शीपक नहीं जमया, रसोईके चौकमें किसीने लाना बनानेके लिए प्रवेध नहीं किया । रोते-रोते नीबंकरकी आँखें और डूँह पूछ गया किसीने आँख नहीं जैठे, दो दिमके भूले-प्यासे नीबंकरको किसीने खानेके लिए नहीं हुआया । बाहर खोरसे पानी बरसने लगा, बने-गहरे अंधकारका औरकर बिजलीकी देला चमक-चमककर उठकी बन्द आँखोंका मोठलक उल्लसित करके बुर्गोभी लहर कता जाने लगी ठा भी वह उठ कर बैठा नहीं आँखें नहीं खोली, एकदम जमीनमें मुँह डालकर गो-गो करने लगा ।

जब ठठकी नांव दूटी, तब सबेरा हो चुका था। बाहरकी ओर एक भस्मय कोआहल सुनकर, चौद आकर, उसने देखा बरबाजपर एक पैगमादी खड़ी है। भस्म होकर ठठके सामने खड़ा होते ही छोटी बहू धूमिल निकलकर उतर पड़ी। बड़े माहके ऊपर एक ठिछी नजर आकर पीछापर उस तरफ बह गया। छोटी बहूने पाठ आकर, बरतीपर फिर रसकर जैसे प्रणाम किया। जैसे ही नीलेश्वर भस्मय स्वर्गमें कुछ आधीनाद उच्चारण करनेके साथ ही ओरसे रा उठा। विस्मित छोटी बहू जबतक अपना हाथ मुआ फिर उठावे, तबतक नीलेश्वर ठेकीके साथ व आने कहां आहस्य हो गया।

छोटी बहू जीवनमें आज खड़ी बार अपने स्वामीके सिद्धांत प्रतिपाद करके देदी होकर खड़ी हो गई। अस्मृभाके बोलते बदे, ठाक हो पने शानों तब उठकर उठने कहा—तुम क्या फलरके बने हो? दुःख-कष्टमें जीवने आत्म हत्या कर दी तब भी क्या हम गैर बने रह्ये? तुम रह सको वो रा में आजसे उस फलर तब फलम करूंगी।

पीछापर चौक उठा—नह क्या कह रही हो?

मोहिनीने तुलसीके मुँहसे कितना सुना था और आप कितना अनुमान किया था तब रोते-रोते सुना दिया।

पीछापर सहजम विश्वास करनेवाला आदमी नहीं। बोला—उनकी बेह वा पानीमें डबय आवेगी।

छोटी बहूने अल्ले पेंछकर कहा—नहीं भी उतरा लकड़ी। बारमें बह गई है—हो सकता है, खली लकड़ीकी दोहको माल गंगाने अपने मोदमें उठाकर रख दिया हो। इसके सिवा, खोज ही कितने की है, कौन फल बग्याल दिया है?

पीछावरने पहले विश्वास नहीं किया, अन्तमें किया कहा—अच्छ, मैं खोज करवा हूँ। तब पीछाकर कहा—माफी माग्यके पर तो नहीं पड़ी गई।

मोहिनीन फिर हिलकर कहा—कभी नहीं। वह कहीं खान-पानकी थी। वह कहीं नहीं गई, नदीमें ही प्राण दे दिये हैं।

“अच्छ, वह भी देखता हूँ” कहकर पीछावर सुखा मुँह किये बाहर खड़ा गया। आज एकएक मागीके लिए उतरका भी खराब हो गया। लोगोंको बग्याकर, अपने एक भगामीको विराजके माग्यके पर फल बगानके लिए भेजकर, जीवनमें

धाब उठने पड़ती बार पुष्प-काय किया। झोका पुकारकर कहा—बहुते करकर  
बीगनका देना तुमका हो, और तुमसे जो हो सके वह करो। राधाकी मुँहसे  
जोर देता नहीं आया।

इतना कहकर, बोझ-ठा गुड़ मुँहमें डालकर और पानी पीकर, बस्ता बास्तेमें  
ढाकर वह अपने कामपर चला गया। चार-पाँच दिन नाया होनेसे उधका  
बहुत मुकसान हो गया था।

काज करते-करते झोटी वह घरपर आँखें चौंकर पड़ी सोच रही थी कि ये  
कित्त मुँहकी और देस नहीं सकते वह मुँह न जाने कैसा हो गया है।

नीलावर लम्बीलम्बीकी बीच घोंसी मूँहे निमक लम्ब बँटा था। सामनेकी  
सीमारमें राधाकामकी तुलना-झोटीका चित्रपट बैठा था। यह पट आमतौर देखा  
है। जब देखाकी नहीं पत्नी थी उस नीलावरके बाबा पैरक बाबा करके इसे  
कूनाबनसे बने थे। वह परम वैष्णव थे। उनसे वह पट मल्लिकार्जुनकी बाजीमें बाँट  
करा था—वह इतिहास नीलावरने अपनी भ्राताके मुँहसे बहुत सके सुना था।  
ठाकुरदेवताकी बात उसके निकट कोई पुँक्य बरसक सम्भव न था। उस तरह  
सच्चे निष्ठाके साथ पुकार उठनेसे वे सामने आकर बोलते हैं—बात करते हैं,  
वह सब उसके निकट प्रसन्न लग था। इसीसे बक्ते परसे, झिंझकर इस पटको  
बोल्बानेका प्रपास वह न जाने कितना और कितनी बार कर चुका है; लेकिन  
उपक नहीं हुआ। जब वह, इस निष्ठाका कारण उसने अपनी बसमल्लिकार्जुन  
ही माना है। उसके सबमें वह संघास कभी किसी दिन नहीं उठा कि चित्रपट  
सबकुछ ही नहीं बोलता है। कितना पढ़ना उसने सीखा नहीं। अक्षरमर  
पढ़ाने थे। उसके बाबू विराजसे उसने रामायण महाभारत पढ़ना और  
झोटा-बहुत चिट्ठी-पत्री कित्त लेना सीखा था। धास बा बर्मल्लिकार्जुनके पास भी वह  
नहीं पढ़ता था इसीसे इन्धर सम्भकी मारका उसकी बहुत ही स्पष्ट काममें थी।  
जब वह, इस सम्भाममें कोई मुक्ति-तर्क भी वह छान न कर सकता था। छोटी  
बकसामें इन्हीं बातोंको लेकर कभी पीतावरके साथ और कभी विराजके साथ  
उसकी मार पीठक हो जाती थी।

विराज मीठावरके केक बार एक झोटी थी। इतिहास उसे उठना मानती  
। थी। एक बार विराजने मार खाकर नीलावरके पैरमें काटकर लून निकाल



दिया। सासने दोनोंको पुका दिया और विराजकी मलना करके कहा था—  
छा बेटी गुरुमनको इस तरह काटना न चाहिए।

विराजने रोते-रात कहा था—उसने मुझे पड़े माया था।

तब उन्होंने पुनःको पुनःकर कसम करा दी थी कि वह अब फिर कभी विराजकी देहपर हाथ न उठाने। उस समय उसकी अवस्था खूब बपकी थी, आज क्याम्ह सीस बपका हो चुका है, लेकिन उसके मातृमख नीबनरने उस दिनतक मवाकी आकाश उसकीमन नहीं किया।

आज स्वप्न होकर बैठे हुए नीबनरने पुनःने दिनोंकी वह सब मूखी हुए कहानी याद करके पढ़के अपनी मातासे छमाकी मिठा मँगी, उसकी याद अपने उन्ही कामसे देखाको दो-चार सीपी बातोंमें बुलबुलाकर, समझाकर करने लगा—अन्तपामा मगवान्! तुम तो सब देख रहे हो। उसने जब छमाज अन्याय नहीं किया, तब सारा पाप मेरी ही सिरपर ब्यदकर उसे स्वयंमें बने हो। यहाँ वह अनेक दुःख पकर गए हैं, अब उसे और दुःख न दना। उसकी दोनों बन्द आँखोंके कानोंसे आसु गिर रहे थे। एकएक उसका प्यान मग हो गया।

बापू!

नीबनरने विस्मय हाकर देखा छाया वह थोड़ी दूरभ कैदी है। उसके मुँहपर साधारण-सा सूँप है। उठने छाब कच्छसे कहा—मैं आपकी बेटी हूँ बापू। मीतर बहिन। नहा-धाकर आज आपको थोड़ा मोकन करना होगा।

पड़े नीबनर अवाक होकर देखता रहा—बैठे कितने हो युग बीत गये, किसीने उसे खानेके लिए नहीं पुकारा। छोटी बहने फिर कहा—बापू, रखो हो गए हैं।

अबकी नीबनर समझ। एक बार उसका सारा शरीर काँप उठा। उसका नाद वह वही भीषण पड़कर रो उठा—रखो हो गए बटी!



गोंबमें सर्जन मुना, सर्जने पिपास किया कि विराज वह नहीं है हुएकर मर गए। केवल भूत पर्यावरने विस्वास नहीं किया। वह मन ही मन ठहरे करने लगा कि इस नबीमें इतने मोक्ष हैं, इतने साध-साध हैं, क्या वहाँ न

कहीं बचकर भटक जावगी । नदीमें नाव डेकर, किनार-किनार घूम-फिरकर और किनारेकी भूमिके सारे बन-जंगलको अपने आसमिताते रची-रची घूमनाकर मी जब आसका कोई पिर न पाया गया तब उसे निश्चयसे ताम विषास हो गया कि भगमीने और पाहे जो किया हो, वह नदीमें डूबकर नहीं मरी । कुछ समय पहले उसके मनमें एक सन्देह उठा था जब फिर वही सन्देह मनके भीतर पहर काटने लगा । अगर किसीके आगे उस प्रकट करनेका उपाय नहीं था । एक बार मोहिनीके आगे कहना शुरू किया तो वह जीम काटकर, कानोंमें रँगवरी डेकर पीछे हटकर बोली—तब तो देवी-देवता भी निम्ना है, दिन भी छूट है, रात भी छूट है । फिर सीधारमें ठगे हुए भयवती भयवतीके चित्रकी ओर देखकर बोली—मेरी बीबी इन्हीं भयवतीका अंश थी । इस बातको और कोई खने या न खाने, मैं जानती हूँ । इतना कहकर वह पकी गई ।

प्रेतमरन होय नहीं किया । एकएक वह ऐसा बरक गया था, जैसे कोई वृक्ष ही आबमी हो ।

मोहिनीने केठसे बोळना शुरू कर दिया है । खना परोसकर जरा आक्रम फैलकर, पूछ-पूछकर, बरा-बरा करके, सारी करना उठने लुन थी । सारे संसारमें केवल उसने खना कि क्या हुआ था केवल उसने समझा कि कैसी मर्ममेखी व्यव ठाकी छातीमें घुम गई है ।

बेकमरने कहा—वेदी मी मिथाना ही होय कभी न किया हो, लेकिन ज्ञान वृद्धकर तो किया नहीं । फिर किछ तब वह माया-समझा डेकर पकी गई । जब और न कह सकती थी, क्या इसीते पकी गई वेदी ।

मोहिनी बहुत-सी बातें जानती थी । एक बार उसका भी आस कि वह द—एक दिन जीजी अपने जानेकी बात कहती थी और उस दिन अपने स्वामीका सारा मार मुझे साथ मर्न है । लेकिन कहा नहीं गुप रही ।

प्रेतमरने खीसे एक दिन पूछा—तुम क्या बाबासे बाळती, बात करती हो । मोहिनीने कहा—हाँ । उन्हें बापू कहती हूँ, इसीते बोळती हूँ ।

प्रेतमरने हैसकर कहा—लेकिन होम को मुनकर निम्ना करेंगे ।

मोहिनीने यह मागते कहा—होम और क्या कर सकते हैं जो करेंगे । वे

अपना काम कर, मैं अपना काम करूँगी। इस हाथ्यमें अगर मैं उनकी बचा सकी तो बोक-मिन्दाको सिर-भौंलोंपर से उड़ी। कहकर वह कामसे चली गई।

१३

फिर महीने बीत गये। आगामी शारदीया पूजाके आनन्दका आभास ज्यों, त्यज्ये, आकाशमें, इसमें, सर्वत्र फैला फिर रहा है। तीसरे पहर नीलम्बर एक कमरेके आसनपर सिर बैठा है। वेह अत्यन्त कुछ, मुल कुछ पीम-वा छोटी-छोटी अट्टा ओलोंमें पैराम्प और विश्वम्पापी कम्पा। म्हाप्रायकी रोपी बन्द करके उसने विष्वा बहुको सम्बोधन करके कहा—बेटी अज पड़ता है, आज पूँटी बनेच्छा आना न हुआ।

छेद, बिना किनारीकी छोटी पहने निरामरण छोटी यह कुछ ही वरपर बैठी अकतक महामास्य सुन रही थी। दिनकी ओर देखकर बोली—नहीं बापू, अब मी समय है आ भी सकते हैं।

दुर्दान्त ससुरके मर जानेके कारण अब पूँटी स्वाधीन है। वह स्वामी और दास-दासियोंको साथ लेकर आज अपने बापके घर आ रही है और यह सब पहले ही भेज दी है कि पूजाके दिनोंमें वह यही रहेगी। अब मी उसे कुछ पता नहीं है। उसकी माताके सम्मान मामी नहीं है—जः महीने पहले सौंपके काटनेसे छोटा भाई मर गया है, वह कुछ भी वह नहीं जानती।

नीलम्बरने एक सौंठ छोड़कर कहा—अज पड़ता है, वह न आवी तो अक्का होता। एक रात इतना दुःख वह कैठे वह सहेगी बेटी।

अत्यन्त प्यारी छोटी बहनको याद करके बहुत दिनों बाद आज उसके लुली भौंलोंमें ओंख दिखाई दिये। जिस रातको पीलावरने सौंपके काटनेपर उसके रोती पैरोंको पकड़कर कहा था कि मुझे छोड़ और बचा नहीं चाहिये, कैवल अपने पैरोंकी धूँ मेरे माबेमें मुझमें रहे दो। इससे अगर मैं नहीं बचा, तो फिर अपना भी नहीं चाहता और यह कहकर सब तरहकी झाड़-पूँछको अवरबली बन्द करकर वह अगाधर उसके पैरोंकी नीचे सिर रगड़ता रहा। फिरकी बातनासे पुटकाप पानेकी आशासे आश्रित धीतक उसने पैर नहीं छोड़े। उसी दिन नीलम्बर अपना आशिरी रोना रोकर चुप हो गया था। आज फिर उसकी टन्नी

## विराज बाहु

आँखोंमें आँसू आ गये। पतिव्रता घाण्डी छोटी बहू अपनी आँखोंके आँसू गुलकमसे पोंछकर चुप हो रही।

नीलम्बर धीरे-धीरे कहने लगा—उसके लिए भी उठना दुःख नहीं करना बंटी, मेरे पीठावरको तरह विराजको भी अगर मगवान् उठा लेते तो ब्याज मेरे लिए मुलका दिन था। सो तो हुआ नहीं। पूँटी अब बड़ी हो गई है, उसके समय था गई है। क्याओ बेटी अपनी मामीका यह कड़क सुनकर उसके हृदयका स्वा हाक होगा जब तो वह सिर उठाकर देख भी न सकेगी।

सुनरपीको इतनी आत्म-भ्रान्ति हुई कि उसे वह खान नहीं कर सकी और कामगारों को महीने पहले उसने नीलम्बरके भागे यह कबूक कर दिया कि उस रातको विराज मरी नहीं क्योंकि रात्रिके समय पर झोकाकर पकड़ी गई है। नीलम्बरका मनविक कष्ट अब उससे देखा नहीं आ रहा था। उसने समझा था कि इस बातको सुनकर वह थोपके बस होकर घायब रह दुःखको भूक जायगा। पर आकर नीलम्बरने वह बात छोटी बहूसे कही थी।

उसी बातको स्मरण करके छोटी बहूने बराबर चुप रहकर क्रोधक स्वरसे कहा—ननवाईसे कहनेकी जरूरत नहीं है।

कैसे कियाऊँगा बेटी? जब वह पूछेगी कि मामीको स्वा हुआ था तब क्या जवाब दूँगा?

छोटी बहूने कहा—जित बातको सब जानते हैं कि बीबीने नयीमें प्राण दिये हैं वही।

नीलम्बरने सिर हिलाकर कहा—वह नहीं हो सकता बेटी। सुना है जब कियाते और बढ़ता है। हम उसके अपने आदमी हैं, हम उसके पत्रका बोझ और नहीं बढ़ा देंगे। यह कहकर वह बराबर हँसा। उस उठनी-सी रैलीमें कितनी मन्दा कितनी दया है वह छोटी बहू समझ गई। बसमर बाव छोटी बहूने धासन्त संकोचके साथ मुँह स्वरसे कहा—ये सब बातें घायब सब नहीं हैं बापू।

कौन उन बातें? इस्याधी बीबीकी बातें।

छोटी बहू सिर छुकाते चुप रही।

नीलम्बरने कहा—सब क्यों मारी हैं बेटी, सब ठप हैं। इस ब्यन्ती तो हो थोप जानेपर उस फाण्डीको ज्ञान नहीं रहा था। जब कहा-थी थी, सब मैं देखी

भी भार कम नहीं हो रहा, सब भी बही रही। उसपर जो अस्वाचार और सम्मान देने किया है, मैं समझता हूँ, उसे स्वयं भगवान् भी नहीं सह सकते, वह तो मनुष्य ठहरी।

नीलम्बरने हाथों एक बूँद आँसू पोंछकर कहा—यह आनेस छाती पट पटी है बेटी, अभ्यासिनन तीन दिनसे कुछ खाया-पिया न था, झरते कँपते-हँपते मेरे लिए कुछ प्यासक मौख मौगने रहा थी इसी अपराधम मैंने—इसके मांग कुछ बोझ नहीं गया। सोतीका लूट मुँहमें भरकर, उमड़ी हुई स्मरईको भरदस्ती रोककर, वह फूँक-फूँक उठने लगा।

छोटी बहू आप भी उठी तरह रो रही थी। उसके मुँहसे भी कोई बात नहीं निकल सकी। इसी तरह बहुत समय बीत गया। बहुत दूर बाद कुछ सकृतिस्व होकर ब्रैल-मुँह पोंछकर, नीलम्बरने कहा—बहुत सी बातें मुम जानती हो, सब भी सुनो बेटी। मायूम नहीं किस तरह, उसी रातको वह भजन, तन्त्र होकर मुन्दरीके घर आ पहुँची थी उसके बाद 'ओह'—क्योंके मेम्मे सुन्दरी उस पगडीको उठी रात रात्रेराचूके बजहर बड़ा आई

उसकी बात पूरी होते-न-होते ही मोहिनी अपनेको मूककर, राज-घरम मूक-कर उठ कण्ठसे कह उठी—यह कमी तब नहीं है बाबू, कमी सब नहीं है। जीवकी बेहमें प्राण रहते ऐसा काम कोई तनसे नहीं करा सकेगा। वे तो मुन्दरीका मुँहक नहीं देखती थीं।

नीलम्बरने घान्तभावसे कहा—यह भी मैंने सुना है। चायद तुम्हारी बात हा सब है बेटी, उसके छरीरमें प्राण न थे। जबकी तरह शान-मुद्रि होनेके पहले ही वह उसने मुझे अर्पण कर दिये थे। सो तो ले नहीं रहा, आज भी वे मेरे पत हैं। इतना कहकर ओल्ल कन्दकर जैसे वह अपने हृदयकी मीठरी तरहक हृदकर देखने लगा।

छोटी बहू मुग्ध होकर उस घान्त पीक ओल्ल मुँह मुलकी ओर ताकती रही। उस मुलमें श्रेय वा हिण-होली तनिक-सी भी छाया नहीं थी। पी केवल अतीम म्यथा और अनन्त धामकी अनिर्वचनीय महिमा। वह गलेमें बाँधक डाँडकर प्रणाम करके नीलम्बरकी परवरण खण्ठे खगाकर उठ गई। सम्पादीय कथाते-कथाते वह मन ही मन बोधी, जीवने पहिधान किया था,

इसीसे वे एक दिन भी हमें छोड़कर नहीं रहना चाहती थीं ।

उन्ने पार कपोंके बाब पूँटी गायके चार्ह है और बड़ आदमीकी तरह ही आई है । उसके स्वामी, छ महीनेके क्षिप्र-पुत्र पाच-छा रास राखी और अग्रणीत पीछेसे धारा पर भर गया । स्वेप्नपर उतरते ही वह नौकरसे लहर मुनकर वह बहिसे रोने लगी थी । ऊँचे त्वरसे रोते-रोते धारे मोहसेमो मोहकाकर, रात एक पार बीठनेके बाद धर्म प्रवेश करके, राधाकी मोहम फिर डाककर, वह भीषी फिर पड़ी । उस रातको उसने पानीतक नहीं पिया राधाको भी नहीं छोड़ा और मुँह उसके रसकर ही बोझा-बोझा करके सब हाक मुन्य । पहले वह भगनीसे तां बरिह करती थी छोव करती थी क्षिप्र राधा को जैसे ठीक हुष्य ही नहीं मानती थी संकोच भी नहीं करती थी । उसका साध कटना और धारे उपद्रव इस राधापर ही थे । समुद्राका अपनेके पहले दिन भी मजबूती क्षिप्रकी लाकर वह राधाके गलेसे ही किरकर बेह रोई थी । उसके बरी राधाको किन्हींने इतने दिन इतना दुःख दिया ऐसा बीम-बीम ऐसा आका-सा कर दिया है उनके समर उसके बीच और द्वेषकी तीस्र नहीं रही । अपने राधाके इतने बड़े दुःखके आगे पूँटीने अपने धारे दुःखको कुछ मान लिया । उसे अपनी समुद्राकाओंके ऊपर हुआ असन् हो गई, छोटे राधाकी लौके काटेसे मृत्यु उसे बरकी नहीं और उसकी बुझिया विषवाकी मोरत उसने एकदम मुँह फेर लिया ।

दो दिन बाद उसने अपने स्वामीको बुझकर कहा—मैं राधाको लेकर पहिल भूमने जाऊँगी तुम वह सब आन-व्यकर लेकर पर चोट आओ । और भयर की आड़े लो म हो, तुम भी साथ आओ ।

करीमन अपने सुनि-सर्कके बाद लिखत काध ही सहजधम समझा और फिर एक बार सब अवस्था बौधने बूँपनेकी तैयारी करने बध गया । बाबाकी तैयारी होने लगी । पूँटीने सुन्दरीको गुणकमते बुधा मेव्य था, बेकिन वह आई नहीं । जो बुझने गया था उससे कह दिया कि मैं यह मुँह न दिखाऊँगी और जो कुछ कहनेका था सब कह चुकी हूँ । और कुछ करनेको नहीं है ।

पूरी ओपठे होठ पकाकर चुप हो गयी। पूँरीकी पोर ठपठा भार उससे भी अधिक निष्ठुर व्यवहारने छोटी बहूके हृदयका कसी चोट पहुँचाए, इस धन्यपात्रीके सिखा और किसीने नहीं जाना। छोटी बहूने हाथ जोड़कर मन-ही-मन जेठानीको स्मरण करके कहा—जीजी तुम्हारे सिखा और कौन मुझे समझेगा ? तुम कहीं भी हो तुमने अगर मुझे धमका कर दिया है, तो यही मेरे लिए सब कुछ है। छोटी बहू सबसे निस्तम्भ प्रकृतिकी है। भाज भी वह चुपचाप सबकी सेवा करने लगी किसीसे भी कुछ नहीं कहा। जेठकी खिस्माने-का मार पूँयेने से बिना या इतकिए इधर कई दिन यहाँ भी उसके बैठनेकी जरूरत नहीं हुई।

जानेके दिन नीलकण्ठ अत्यन्त विस्मित होकर कहा—तुम नहीं बहोमी बहू ? छोटी बहूने चुपचाप गर्दन दिखायी।

पूँरी बड़केको गोदमें धिमे शब्दोंके पास आकर मुन्ने लगी।

नीलकण्ठने कहा—यह नहीं हो सकता बेटी। तुम अकेली यहाँ कैसे रहोगी और यहाँ रहकर हो क्या होगा बेटी ? बच्चे।

छोटी बहूने बैठे ही फिर लफाये गर्दन दिखाकर कहा—नहीं बापू, मैं कहाँ न जा सकूँगी।

छोटी बहूके मायकेकी माँजी हास्य बहुत अच्छी है। विनया बड़कीको जेठानेकी डन बाँयोंने अनेक बार पछा की थी; किन्तु वह किसी तरह नहीं गई।

सब नीलकण्ठ समझता था कि छोटी बहू कैवल मेरे हाँ का राज नहीं जाती। किन्तु अब खुले करके वह क्यों अकेली पड़ी रहना चाहती है, यह वह किसी तरह नहीं समझ सका। पूछा—क्यों बेटी क्यों कहीं नहीं जा सकोगी ?

छोटी बहू चुप रही।

न बताओगी तो मेरा जाना न होगा बेटी।

छोटी बहूने गूँह कण्ठसे कहा—भाप बाबू मेरे रहूँगी।

क्यों ?

छोटी बहू फिर कुछ देर चुप रहकर जैसे मन-ही-मन एक लफायेको बड़काको प्राणप्रयत्नसे बुर करनेकी पछा करने लगी उसके बाद थूँक पेटकर बहुत पीरसे बोली—जीजी दासद कमी था बाँयें इसीसे मैं कहीं न जा सकूँगी बापू।

नीलवर थीक उठा। तेन शिकारीकी धमकते बाँखें पाबिसा बानपर बैठा होता है, बैठा ही बम्भकार उठने पारों ओर देला; किन्तु केवळ क्षणभरके लिए। तत्पश्चात् ही अपनेको समझकर अत्यन्त धीमे जग-सी हँसी हँसकर बोझ—छि: बेटी, तुम मो अमर ऐसी पागलपनकी बात कहो, ऐसी धमक हो बबो, तो फिर मेरा क्या उपाय होगा!

छोटी बहूने पल्लभ बाँखें गूँहकर अपने हृदयके भीतर देला। उसके बाद संघमसेवाहीन स्वर धीमे स्वरसे कहा—मैं धमक नहीं हो गई हूँ बापू। आप जो भी चाहे कहिये। किन्तु जबतक पन्द्रमा और सूर्यकी उदय होते देखूँगी तबतक किसीकी किसी बातपर विश्वास नहीं करूँगी।

माई और बहन एक-एक करके होकर, अवाहू होकर, उसकी ओर टाकने लगे। उसने जैसे ही मुहड़ स्वरसे कहा—स्वामीके घरपोंमें तिर रखकर मरनेका बरदान जैसीने आपसे माँग लिया था। वह बर कभी किसी तरह निम्न्य नहीं हो सकता। कहींकभी जैसी निम्न्य ही जैड आसंगी। जबतक निर्मुरी इसी आशासे उनको यह देखती रहूँगी। मुझे कहीं जानेके लिए न कहियेगा बापू। इतना कहकर एक सोंसमें बहुत बोक जानके कारण वह तिर छकाकर होछने लगी।

जब नीलवरस ओर छा नहीं गया। स्मार्ड उसके गलथक आकर बाहर निकलनेके लिए ओर मारने लगी। कहीं आकमें आकर उसे निकालनेके लिए वह बीड़कर भाग गया।

दूँदने एक बार पारों ओर नजर डालकर देखा उसके पास आकर अपने कदकेको पैरोंके पास बिठाकर, व्याज पहले-पहले इस विषया भावकके गलेसे छिपटकर अस्तुत स्वरमें रोते हुए कहा—माँमी! कभी तुमको पश्चान नहीं पाई माँमी मुझे क्षमा करो।

छोटी बहूने छक्कर उसके कण्ठको उठाकर छातीसे लगा लिया और उसके मुँहसे मुँह लगाकर अपने बाँस छिपटी हुई वह रतोई परमें पड़ी गई।

विषयका मरना ही उचित था लेकिन वह मरी नहीं। उसी रातको, मरनेके



ठीक पहले क्षणमें, उसके अनुदिन व्यापी दुःख-दैन्यसे पीड़ित बुरा और बिगड़  
मस्तिष्कने अनादर और अपमानकी अछछा बाँटते, मरनेकी राह छोड़ सम्पूर्ण  
रस्से विभिन्न राहमें फैल बहा दिया। मृत्युको छातीपर रखकर जब वह अपने  
हाथ पैर झेंचकते बाँध रही थी, उसी समय कहीं बिजली गिरी। उस भयानक  
सम्भसे चौंककर, सिर उठाकर, उसीके तीव्र प्रकाशमें उस पारक्य वह नहानेका  
घर और वही मसखी पकड़नेके लिए बनाया गया डकड़ीका मंचान उसकी  
नजरमें पड़ गया। वैसे अचटक ठीक इसीकी ओरधामें चुन्पाप बाँलें ओते  
उसकी आँख देख रहे थे। पार आलें हाँस ही इसनेते उसे पुकार उठ। विराज  
उसका भयानक स्वरमें कह उठी—वे सधु-पुरुष मेरे हाथका पानीतक नहीं  
पियेगे, किन्तु वह पापिछ हो मित्र। अच्छी बात है।

आहारकी चीकनोके मुँहपर कट्या हुआ कोपका जैसे दहककर कठकर  
पल हो जाता है, ठीक वैसे ही विराजके प्रभावित मस्तिष्कके सम्मन  
उसका अनुकनीय अमृत्य हृदय भी डककर मुक्यकर पल हो गया। वह  
स्वामीकी भूक गई, फलकी भूक गई, मरणकी भूक गई और एकटक प्राप-न्यस  
उस पारके पाटकी ओर टाकने लगी। फिर औरसे सरजकर कड़कड़ाहटके साथ  
अन्धकारमें आकाशकी लौली चीरली हुए बिजली कीप गई। विराजकी पैठी  
हुर हाँ संकुचित होकर अपनी ओर बाँट आई। एक बार मुँह क्दाकर उसने  
पानीकी आँ देख एक बार गहन पुम्भकर मरकी ओर देखा, इसके बाद  
पुटीसे अपने हाथके बीचें बन्धन लोडकर पटक मारते ही वह बीसे फनमें  
झकड़ पायब हो गई। उसके तेज पैरोंके शम्भसे फिजने ही बीच-बन्तु लस-लस,  
सर सर करके राह छाँडकर हट गये पर उसने ठपर ध्यान ही नहीं दिया—वह  
मुन्दरीके पास आ रही थी। देवानन ठाकुरजसमें उसका घर था। पूजा चढ़ाने  
झकड़ विराज कह बार टठका पर देस आई थी। इस मौककी पहुँ होकर म्य  
बचपनमें इस मौकके प्रायः सभी राह-भ्याद वह ज्ञान-पाह्यान गई थी। थोड़ी ही  
देरमें वह मुन्दरीकी बन्द लिङकीके पास जाकर लकी हो गई।

इसके कमम्म हो पयेके बाद ही कंगुली नामक भीरने अपनी बोंगी उस  
पारकी ओर छोड़ दी। अनेक रातोंको वह पैसेक ओरसे मुन्दरीको उस पार  
पहुँचा आया है और आज भी वय रहा है। किन्तु आज एककी कमा हो जिये

## विराज पाद

पुष्पाप बेठी है। अम्भकारमें विराजका मुँह बह नहीं बस पाया, बेल भी डेठा तो पचान न पाता। अपने घाउके पास आकर दूरसे ही धँपरे बिनारेपर एक अस्सल दीप लीये धारीको कम्पा हुआ बेलकर विराजने आँखें मूँद थीं।

सुन्दरीने पुष्पकेसे फिर प्रश्न किया—किजने इस तरह मारा बहू !  
विराजने अपीर होकर कहा—मेरी बेहपर उनके सिवा और कौन हाथ उठा सकता है सुन्दरी ओ तू बार-बार पूछ रही है ! सुन्दरी अग्रिम हो-

और भी वो पण्डके बाह एक सुसम्पन्न बकरने जैसे ही डंयर उठानेक।  
उपक्रम किया विराजने सुन्दरीकी ओर वाककर कहा—तू साथ न पड़ेगी !  
सुन्दरीने कहा—नहीं बहू मैं यहा नहीं खुँगी तो कोय स्नेह करगे।  
असो बहू उठो नहीं। फिर मेठ होगी।  
विराजने और कुछ नहीं कहा। सुन्दरी कंगाखीकी खँगरीपर बैठकर अपने पर अंत गई।

अधीरारक सुन्दर मुद्रौक बकर विराजको देखकर, किनारा छोड़कर, त्रिनेत्री-की ओर कल दिया। खँडके राखको दबाकर ओरकी हवा पकने लगी। दूरपर एक किनारे मौन राखेप्र नीचा मुँह किने मर्मरपान करने लगा। विराज पत्थरकी नुर्मित्री तरह पानीकी ओर वाकती हुई बैठी रही। आका राखे-त्रने बहुल मर्मिरा ये थी। राखक नछा उसके शरीरके रक्तको उच्छत और मलिकको उम्भप्रपाय बना रहा था। बकर सब सतप्रपायकी सीमके बाहर हो गया तब वह उठकर विराजके पास आ बैठा। विराजके कन्ने केय विस्तरकर डोट रहे थे, माकेपरका आँकल लिछककर कन्नेके ऊपर आ गया था—किजो बावका उठे होय न था। कौन आका कौन पास बैठा इत्तर उछने प्यान ही नहीं दिया।

लेकिन राखे-त्रको यह क्या हो गया ! किसी मर्मरकर रसनमें छाया अकेले आ फनेपर मूत-प्रेतके मर्मरे आदमीके हृदयमें पैसी इक्ष्मक मन्त्र जाती है ठीक उसी तरह उलके मनमें भी आतङ्कनी आँखी उठ लगी हुई। वह वाकटा ही रहा कुम्भकर वाकपीठ नहीं कर सका।  
अब य इसी रम्भीके छिय उछने क्या नहीं किया ! वो साव्यक दिन

मन ही मन पीछा करता फिरा । नीचे, जागते, पान करता रहा है—  
मन भीमोंसे देखा पानके बोमसे—लाना-लोना भूषकर बन-बंगलमें छिपा  
हा है । जिसका मनमें भी लयाक न था वही लवर आज लव मुन्दरीने  
माकर, लोलेसे अयाकर, उसके कानमें कही थी लव मावके जानेसे अमिभूत  
हकर बहुत देरतक वह अपने इस सौभाग्यको हृदयगम ही नहीं कर सका था ।

सामने नहीं भूमकर, दोनों किनारोंके दो बड़े-बड़े बाँधके लगभग, बहुतसे  
पुण्डने बरतक और पकरके हथोंके भीतरसे होकर गई थी । कमल-जगह बाँधकी  
कमलियों और हथोंकी बाँधने लकके अमरतक लककर सम्पूर्ण स्थानको घेर  
लन्यकारसे भर रहा था । इस स्थानमें प्रवेश करनेके पहले राजेन्द्रने साहस  
नयेकर, कलकी वड़ा हथकर, किसी तरह वह बाँध—जुय—आप—आप  
कर भीतर लककर बैठने वहाँ पेड़ोंकी शाखा बगैरु बगौगी ।

बिराजने मुँह पुसाकर बैठा । सामने एक छोटा-सा दीपक जल रहा था,  
उसीके भीच प्रकाशमें दोनोंकी बाँधें पार हुई—जैसे भी हो चुकी थी । उस  
समय वह दुःखिन फाई कमीनपर लड़े होकर भी उस दृष्टिको ध्यानकर सका  
था किन्तु आज अपने अधिकारके भीतर अपनेको धारणके लगेमें पुर करके भी,  
वह इस दृष्टिके सामने अपना फिर लीला नहीं रख सका उसने गर्दन झुका ली ।

लेकिन बिराज ताकती ही रही । पणुकर उसके हतने निकल बैठा है अब वह  
मुसपर कोई आकरन नहीं है, फिरफ जग-छा आकलक नहीं है । इसी समय  
कमलके पनी कपात लैकी हुए एक बाँधीके भीतर पुलते ही बाँध कमलेशाके  
बाँध छोड़कर छाती-छाती बाँधियों हथनेमें अलत हो गये । यहँपर नहीं अनेक  
हुत लैकी थी, इसीलिए माटेका आकर्षण बहुत ही तेज था । 'मो दे,  
साधधान ! कइकर राजेन्द्रने बाँध कमलेशाकेको साधधान करके उनके ऊपर  
नकर रखकर बिराजसे 'कुछ कम आसगा, भीतर आइये' कइकर आप कमलमें  
पक गया ।

बिराज मोहलक और यंत्र-बाँधकी तरह उसके पीछे-पीछे आकर, कमलके  
भीतर पैर रखते ही अकस्मात् 'मैवा रे !' कइकर चिल्ला उठी ।

उस पीछारते राजेन्द्र पीक उठा । दीपककी अलक पुपकी रोखनीमें उस  
समय बिराजकी दोनों बाँधें और रखते लना हुआ मँगला सेहुर आमुखाके

लीनीं नेत्रोंकी तरह जल उठे य । वह मगबाध घायली उस अग्नि के सामने  
 बैठ लाये हुए कुत्तेकी तरह एक मीठ विह्वल शब्द करके झपटा हुआ हट गया ।  
 बिना जाने अन्धकारमें पैरों नीचे गीले ठंढे और चिक्के सॉफर पैर पड़ जानेसे  
 मनुष्य जैसे उछल पड़ा है जैसे ही विद्याज छिड़कर बाहर भा गई । उसने  
 एक बार पानीकी ओर देखा और उसके बाद ही भैया रे ! यह क्या किया  
 नि !' कहकर वह उसी अन्धकारपूर्ण अटक लड़के बीच घुँस पड़ी ।

जैसे पकानेवाले माछी आठनाद कर उठे इस उपर रौड़ पड़े जिससे  
 बज्ज उठनेको हो गया । इसके सिवा वे और कुछ भी नहीं कर पावे ।  
 प्राचपवसे लकड़ी और ताककर भी उस दुर्मेघ अन्धकारमें कुछ भी न देख  
 पावे । राजेन्द्र अपनी आवासे क्या भी नहीं हिम्ब । उसका सारा नशा उतर  
 गया था वो भी वह कम्हा था । कुछ देरमें धाएँ के सिचाफसे बज्ज आप ही  
 बाहर निकल आया । मछीने उद्विग्न मुखसे पाछ आकर पूछ—बाबू साहब  
 क्या किया आया ? पुष्टिसमें सवर देनी होगी !

राजेन्द्र विह्वलकी तरह उसके मुँहकी ओर ताकते रहकर भयाने हुए गळेसे  
 बोध—क्यों जेक जानेके हिम्ब ! भरे गवाँ किस तरह हो सके, मग कल ।  
 गवाँ मौसी पुराना आदमी था, बाबूको आचान्ता था । सभी पहचानते  
 थे । इसीसे मामला कुछ-कुछ पड़ेसे ही ताक गये थे, इस समय इस इच्छासे  
 उसकी आँखें खुल गई । वह और सबको जमा करके फुरते-फुरते आग देकर  
 सबको उड़ाता हुआ आराम हो गया ।

कलकत्तेके पठ पर्वतपर राजेन्द्रने स्वस्तिकी सॉव ली । गत रात्रिके अत्यन्त  
 फने अन्धकारमें आग्ने-सामने बैठकर उसने वो आँखें देखी थीं उन्हें छत्रण करके  
 आज दिनके समय इसनी पूर आकर भी उसके धीरेमें डैपकपी आन लगी ।  
 उसने अपने कमल पकड़कर मन ही मन कहा—इस जीवन्में अब यह क्षम  
 कमी न करूँगा । जिसकी भीतर क्या छिपा हुआ है कोर नहीं जानता । उस  
 पसलोंने अपनी काकप आँखोंसे उसके पैतृक प्राण नहीं हर लिये इसीको अपना  
 बड़ा माम्प उसने समझा और किसी कारणसे किसी भी समय उबर मुँह पर  
 लूँगा इसका भरोसा उसे नहीं था । अवलक मूल कुटुम्बोंसे ही वह मित्र  
 हुआ था सही क्या चीज है, यह उसे जान न था । आज उस पतिव्रतने अपने

कष्टपिष्ट जीवनमें पहले-पहल होश हुआ कि केंचुलसे लेखा था सफ़ा है, लेकिन जीवित बिपक्ष होने वाले जमींदारके बड़केके भी खेदनेकी नीति नहीं।

१५

उठ दिन तीसरे पार जो ली विराजके सिरछाने बैठी थी उससे पूछकर विराजने खना कि वह दुगलीके अस्पृष्टाद्यमें है। बहुत दिनतक बात-धोखा विचारके बाद जब उसे होश हुआ है, तभीसे वह धीरे-धीरे अपनी बात समझ करनेकी चेष्टा कर रही थी। एक-एक करके बहुत-सी बात उस माद में आई हैं।

एक दिन बर्षाकी रातमें उसके स्वामीने उसके सतीसके ऊपर कड़ाच किया था। पीड़ासे बर्बर, उपवाससे शिथिल दूटी हुई उसकी बेह और विकल मन उस निदात्मक अवस्थाको खन नहीं कर सका। दुम्हपर दुम्ह उठाते रहकर बहुत दिनोंसे ही वह शायद पागल-सी हो रही थी। उस दिन अचानक और ज़पाते 'अब उनका मुँह न देखोगी' कहकर धीरे बपन रोड़-टाढ़कर नदीमें डूब मरने गई थी किन्तु मरी नहीं।

उसके बाद जब और मानसिक विकारकी शौकमें वह बज्जेपर चढ़ी थी और भागी राहमें नदीमें पड़कर तैरकर किनारेपर पहुँच गई थी। मींगे सिर और मींगे कपड़ोंसे सारी रात बकेली बैठी वहाँ खैपती रही थी। अन्तमें न जाने कैसे एक पक्षिके छारपर आकर पड़ गई थी। वह इतना ही बाद आता है। वह माद नहीं पड़ता कि कौन यहाँ आया, कम आया, किन्तु दिनोंसे यहाँ इस तरह पड़ी हुई है। और माद आता है कि वह पक्ष-त्यागिनी कुख्या है, परपुरुषका आश्रय लेकर यहाँके बाहर हुई थी।

इसके आगे और कुछ वह सोच न पाती थी—सोचना भी नहीं चाहती थी। इसके बाद क्रमशः अच्छी होने लगी ठठकर थोड़ा थोड़ा खाने लगी। किन्तु मासिककी ओरसे अपनी चिन्ताको उसने प्राणजलसे बच्य रखा। वह कैसी पटना थी वह उसके सरीरका प्रत्येक अणु-परमाणु दिन-रात भीतर-भीतर अनुभव अवश्य करता था किन्तु जो पक्ष पड़ा हुआ है उसका जरा-सा कोना उठाकर देखनेमें भी भयसे उसका सारा सरीर ठण्डा पड़ जाता था सिरमें चक्कर आने लगता था और उसे बेहोशी-सी आती खन पड़ती थी।

एक दिन अगहनके महीनेमें सबेरे नही ज्ञी उसके पास जाकर बोली कि तुम अच्छी हो गई हो, अब तुम्हीं बहोसि अन्वत्र जाना होगा ।

विराज 'अच्छ' कहकर चुप हो रही । वह ज्ञी उस अस्पतालकी ही थी । उसने समझा था कि इस बीमार बुलियाका कोई आत्मीय-स्वजन धायद नहीं है । उसने कहा—तुम न मानना बन्धी मैं पूछती हूँ कि जो लोग तुमको नहीं रख गये थे, वे तो फिर किसी दिन देखने आये नहीं ? वे क्या तुम्हारे अपने आदमी नहीं थे ?

विराजने कहा—नहीं । उन्हें तो मैंने कभी आँसुसे नहीं देखा । एक दिन बयाकी रातमें मैं त्रिवेणीके पास जलमें डूब गई थी । ज्ञान प्रकटा है वे लोग ही दवा करके मुझे बहा रख गये थे ।

ज्ञीने कहा—ओह, जलमें डूबी थी ? तुम्हारा घर कहाँ है ज्ञी ।

विराजने मामाके परका नाम लेकर कहा—मैं वहीं आऊँगी, वहाँ मेरे अपने आदमी हैं ।

वह ज्ञी अधिक अवस्थाकी थी और विराजके अन्ध स्वभावके कारण उसके ऊपर कुछ भयना भी उसे हो गई थी । उसने दवासे मीने खरमें कहा—वहाँ आओ बन्धी । क्या सावधानीसे रहना कुछ दिनोंमें अच्छी हो जाओगी ।

विराजने क्या ऐसकर कहा—अब अच्छी क्या होऊँगी मैं ! वह आँस भी ठीक न होगी और यह हाथ भी अच्छा न होगा ।

रोमके बाद उसकी बायीं आँस अच्छी और बायीं हाथ बेकार हो गया था । उस ज्ञीकी आँसोंमें आँसू भर आये । बोली—कहा नहीं था सच्य बन्धी, अच्छा भी हो सकता है ।

बूरे दिन वह अपना एक पुराना आदेका कपड़ा और कुछ राह-अर्ज दे गई । विराज उसे लेकर, प्रणाम करके बाहर जा रही थी, सहसा झटकर बोली—मैं क्या अपना मुँह देखूँगी एक बीधा अयर हो

“है क्यों नहीं अभी देखी हूँ” कहकर क्या बेरमें ही झूट जाकर एक आहना विराजके हाथमें दकर वह अन्वत्र चली गई । विराज फिर एक बार अपने छोटेके पकमानर झूट जाकर बीधा लेकर बैठी । अपने मुँहके प्रतिबिम्बकी ओर देखते ही एक असीम ज्ञानसे उसका मुँह अपने-आप विमुक्त हो गया । दर्पणको

फटकर बिछनेमें मुँह छियाकर वह गम्भीर भावस्वर कर उठी। उसका सिर मुँहा हुआ है—उसके चे आकाशमें लगे बावलोंके समान काँचे केच कहीं हैं ? उसके सारे मुत्तको इस तरह सब बिखर बिखरने कर दिया ! वह कमलरक्तवर्ण विद्याल धौलें कहीं गई ! वह अशुक्लीय कुन्दन-सा रंग बिखरने हर दिया ! म्मात्ताम् ! यह कैसा मारी बख्त तुमने दिया ! अगर कमी में हो गई तो यह मुत्त कैसे समझ करेगी ? जितने दिनतक इस देखमें प्राण रहते हैं उसने दिन तक आधा एकदम निमूठ होकर नहीं भरी। इसीसे धायर अस्पन्त खीब, थोड़ी-सी आधा, अन्तःसम्पन्न नहीं की तरह अस्पन्त गुप्त अन्तःसत्त्वमें उस समय भी वह रही थी। हे दयालय ! उसे मुखा लेकर—नष्ट करके—तुमको क्या मिला ?

ज्ञान झोट आनेके बाद रोयदाण्यामें सेरे-सेरे सब स्वाधीका मुत्त उसे उलझल होकर हिलाई देता था सब कमी-कमी रहता लवाक होता था कि मने जो कुछ किया है वह तो अज्ञान अवस्थामें ही किया है तो क्या वह अवस्था समा नहीं हो सकती ? सब पापोंका प्रायश्चित्त है क्या केवल इतीका नहीं है ! अन्तर्धामी तो अनन्त हैं, बर्षार्थ पाप मने नहीं किया। तप्यामि जो कुछ किया है वह क्या इसने दिनों तक जो स्वाधीकी सेवा की है उससे नहीं थो-पूँछ आया ? खीब-खीबमें कहती थी कि उनके मनमें तो श्रेय नहीं टिकता अगर एकएक पैरोंपर आकर गिर पड़ूँ और सब कुछ सोल-कर कह दूँ तो वह मेरे मुँहकी ओर देखकर क्या करेंगे ? ऐसा होनेपर वह सम्भवतः क्या करेंगे इस कल्पनाको बिखरने रंगीसे, बिठनी तरहसे रंगकर, सबारकर देखनेके लिए वह रात-रातभर आसकर बिठा देती थी नींद आनेपर उठ जाती, पानीसे धौलें और मुँह धोती और फिर नये सिस्ते इसी प्रसंगधे सोचने बैठती थी। हाव ममदात् ! उसके उस विचित्र चित्रको क्यों इस तरह रानी पैरोसे रीरकर तुमने बूर-बूर कर दिया ! वह अपने स्वाधीके पैरोंपर खीब गिरकर बजाकी सारे अब यह मुँह उठाकर उनके मुँहकी ओर कैसे देखती ?

उस कमरेमें एक और बीमार खी थी। बिराजको इस तरह रोते देखकर वह उठकर पास आ गई और बिछमपके स्वरमें पूछने लगी—क्या हुआ खी ! क्यों रोती हो !

उत्तर ! और एक आवधी बिराजके रोनेका कारण जानना चाहता है ।

विरासने चरफ्त बोलें पोंछ खाकी और किसी ओर दृष्टिपात न करके घर धीरेसे बाहर निकल गई।

उठ दिन जोगेंकी मीनमाइसे मरी और उनमें बोझ-बाइसे गैर रही छड़ के एक दिनारे होकर जब उसने अपने अन्तर्मन ज्ञान्त रोनें पैतोंको छारे को चरकर एक जमी सोंस बाहर निकल आई। उसने मन ही मन कहा— मन्वान्। घायद तुम्हने यह अफसा ही किया। अब जोह इधर आँस ठठाकर भी नहीं देखना—यह मुक्त और ने आँसों घायद इरी यात्राके बोझ है। गौंके जोगोंने जाना है कि वह परस्पागिनी कुख्या है। इसीसे उसके किय वह मुक्त ठठाकर अपने गौंका मुक्त अपने स्वासीका मुक्त देखना निर्पद्ध हो गया है। घायद इत मुक्तका ऐसा हो जाना ही तुम्हारा मन्वन्त विधान है ईस्कर!— विरास यत्नेपर पड़ने लगी।

१६

फिरने ही दिन बीत गये। विरास पक्ष रासीराशि करने गई थी। फिर उसकी दृष्टि हुई देह काम न कर सकी परस्वने विरा कर दिया। उसके मित्र ही उसकी उत्पत्ति है। वह राह-राह मीन मोगी है इसके नीचे फाकर ला लेती है और पेड़के नीचे ही पड़ जाती है। इस वर्तमान जीवनमें उसके पिछले जीवनका रचीमर मी पिछले जैव नहीं है। उसके शरीरपर छतछिल कब, कब के हुए जोड़ेसे बसे बाक, मित्रासे मित्री हुई एक मैत्री कबरी है। इस समन पैसी ही उसकी देह है, केसा ही कर्त है, बैसा ही सव है। अब य, अभी उसकी अकल्प केवल पचीस वर्षकी है। एक दिन इरी रहकी दुखना स्वर्गमें भी नहीं मिलती थी। अतीतसे लोककर, अकल्प करके मन्वान्ने जेसे उसे नवे फिरसे गड़ दिया है। वह आप मी सव भूख गार है। मूक नहीं सकी केवल रो जातें। एक तो कुछ गौंयते समन 'हो' करनेमें उसका दुह बाक ही जाता है, बाक मी यह शब्द उसके गलेसे स्पष्ट नहीं निकल पता और दूसरी बात वह नहीं भूलती कि उसे बहुत बुरा करके मरना होगा। मरनेका वह स्थान किस देशांतरमें है—वह अकल्प वह नहीं जानती किन्तु यह अनती है



के लड़कियाँ स्वयंसे चुपनके दिन ही वह बग़र रात बह रही है। वह  
'क्यों तब बन्नी नह रहा' स्वामीकी नही दिख सकेगी, और उलझ मन्ना  
रात पावे किन्ना बन्नेन हो उठको वह अस्तव्य अस्तव्य देखकर स्वामीकी  
छटा पर बग़र, नह एक फ़ीके दिन भी भूख न पानके कारण वह निरन्तर  
हू हटके बग़र थी।

वह एक बहते बग़र रात बह रही है। लेकिन उठका वह अचानक  
'म स्वयं बर्ता है ! बर्ता, किन्ना भूमिगम्यार, हू बग़र उठ मन्नाको  
बग़र हू बहते बग़र को बन्नाको चुपचाप बग़र कर बग़र ! आन को दिनेसे  
वह एक बहते नोवे प्यो है उठ नही सकी !

दिर बने धीरे रोयने देर किन्ना है—राखी, बुराण, छातीम दर्द। बुराण  
दावे बर्ता बीमारोंमें पकड़कर अस्तव्य बर्ता थी अचानक होवे न होवे वह पथम,  
मनघन और आधा पेट मोझन। उठको देह बहुत बग़र थी, हलीसे अस्तव्य  
टिकी है किन्ना अब आन प्यो है नही टिकेगी। आन औरों मूरकर छेप  
रही थी कि वह बहते ही क्या वह गमरवान है ! इलीके लिए क्या वह  
हवने देह बहती है, इतना राखी विभाम किने किन्ना प्यो है ! अब क्या  
बह न उठेगी !

दिन समाप्त हो गया, बहती बहते खँची चोटीसरवे अस्तव्य-मुरा धुँकी  
अन्तिम बह आधा बर्ता हट गई। सग़रकी धारापानि बग़रके भीतरसे उठकी  
बुराणकर उठके कानोंम पड़ी। उठकी राखी उठकी बग़र आरवके लगने  
अपरिचित बग़र-बग़रों की राखी मंगल-मूर्तिवों माप उठकी। हू राखी भीन  
न्या कर रही है किन्ना राखी दीपक जलाती है, हाथों दीपक लेकर बर्ता-बर्ता  
दिल्ली की छिटी है, अब गमनेमें आँकल बग़रकर प्रणाम करती है, प्रणमी  
चौतरेपर दीपक रलकर मंगलान्के परणोंमें कौन न्या कामना निवेदन कर  
रही है वह सब कुछ वह आँकलें देलने लगी और कानोंमें मुन्ने बग़री।  
आन बहुत दिनोंके बाद उठकी आँकलेंमा आन आने। नैव छिउने ही हन्ना  
बर्ता भीत गये हैं वह छिटी घरमें राखीका दीपक नहीं जला सकी, छिटीके  
मुलको रमल करके मंगलान्के परणोंमें उठकी आन और ऐश्वर्यके लिए मार्गन  
नही कर सकी ! इन सब चिन्ताओंको वह मापपणसे बुर राखी थी किन्ना

पना रहे है। पञ्च पूँदीने ऐसा नहीं सोचा था। वह हठात् नहीं हुई थी। सम्पत्ती थी और दो दिन बीतें सब ठीक ॥ आनन्द, किन्तु दो-दो दिन करके पार-पंच यहीने बीत गये, कहाँ कुछ भी तो न हुआ ? पर छोड़कर आनेके दिन मोहिनीकी बाथोंस आनन्दारसे विराजके ऊपर उसके मनमें एक कस्याक भाव आया उठा था, उसके बाथोंपर विश्वास भी किया था। यदि उसका बाथ ठीक हो जाता तो बचपनकी बातें बाद करके वह आनन्द मन ही मन विराजको सम्पूर्णस्मृति से ध्या भी कर सकती। वास्तवमें ध्या करनेके लिए, उसी माँमीको जोड़ नगुर भावसे स्मरण करनेके लिए एक समय वह आप भी व्याकुल हुई थी, लेकिन वह धुनोय उसे मिश्रता कहाँ है ? दादा कहाँ ठीक होते है ? एक तो संसारमें ऐसे किसी युवाकी, ऐसे किसी कारणकी वह कल्पना ही नहीं कर सकती, जिससे इस आनन्दकी इतने युक्तमें आनन्द कोई हटकर सदा हो सकता है। माँमी मन्दी हो या कुटी, सब पूँदी उपर भूषण भी नहीं करती। किन्तु उसके दादाको स्थायकर आनेके अक्षय्य अपराधकी जो स्त्री अपराधिनी है उसके प्रति पूँदीके विद्रोहकी भी जैसे सीमा नहीं रही, जैसे ही, उस अमागिनीको हर पक्षी स्मरण करके, उसके विमोहको इस तरह मनमें पाककर, जो आनन्द अपनेको इस तरह ठिक-ठिक ध्या करता था था है, उसके ऊपर भी उसका विश्र प्रसन्न नहीं हुआ।

एक दिन वह मुँह फुल्लव आकर बोली—दादा पचके, पर पचें।

नीलम्बरन कुछ विस्मित होकर ही बहनके मुँहकी ओर देख। कारण व्यापक महीना प्रभावमें विधानकी बात हुई थी। पूँदीने दादाके मनका भाव समझकर कहा—एक दिन भी अब रहना नहीं चाहती, कुछ ही बर्तनी।

उसके सम्भावको देखकर नीलम्बरने जरा विप्रायकी ऐसी हँसकर कहा—क्यों रे पूँदी क्या बात है ?

पूँदीने अवतक जोर करके आँसू रवा रखे थे, अब रो पड़ी। अभुविष्ट स्वयं बोली—रहकर क्या होगा ? तुम्हें यहाँ अन्ध नहीं आता तुम स्वयं-स्वयं करके प्रतिदिन चुल्लते आ रहे हो। ना, मैं किसी तरह एक दिन भी नहीं पहुँगी।

नीलम्बरने स्नेह हाथ पकड़कर, सीपकर, पास बिठाकर कहा—बेट जानेसे

ही स्था में बन्धा हो जाऊंगा रे ! इस देखके ठीक होनेकी आशा धब में नहीं करता पूंटी—इससे एक बहिन भी होना हो वह घर आकर वहीं हो ।

बादाकी बात सुनकर पूंटी और अधिक रोती हुई बोली—तुम क्यों उसे हमसा इस तरह भाव किया करते हो ! किन्तु लोभ-लोभकर ही तो तुम ऐसे हुए आ रहे हो ।

तुमसे किन्तु कहा कि मैं उसे हमेशा याद करता हूँ ?

पूंटीने उसी तरह जवाब दिया—कहेगा और कौन ! मैं खुद ही जानती हूँ ।

नीलावरने कहा—तू उसे नहीं याद करती !

पूंटीने ओम्बे रोककर उबल भावसे कहा—ना, नहीं याद करती । उस पाप करनेसे पाप होता है ।

नीलावर चौंक पड़ा—क्या होता है ?

पाप होता है । उसका नाम सेनेसे मुँह अजीब होता है स्नान करना पड़ता है । कहते-कहते उसने किछमके साथ ऐसा बादाकी जेहज्जेमक इसी पञ्चममें ही बदल गई है । नीलावरने बदनके मुँहकी ओर देखकर कठिन स्वरमें कहा—पूंटी !

सुनकर वह डर गइ और अत्यन्त कुटिल हो पड़ी । वह बादाकी बड़ी दुबारी बहन है । बचपनसे ही हमपर अपराध करनेपर भी कभी उसने बादाकी ऐसी आख नहीं देखी ऐसा स्वर नहीं सुना । इतनी बड़ी अवस्थामें जिसकी साफर खोम और आम्बानसे उसका छि छक गया ।

नीलावर और मुँह न कड़कर जब चर्चाते उठ गया तब पूंटी ओलोंमें ओंका देकर कड़ककर छेने लगी । दोपहरको बादाके मोहनके समय पास नहीं गई । लीसे पार दासीके हाथ खानेकी चाकरी मेककर आप बाढ़में लड़ी गयी ।

नीलावरने न छे मुझसा और न बात ही की ।

शाम हो चुकी है । नीलावर संध्या-कप आदि आदिक उमरा करके पूजाके आसनपर ही गुणपाप बैठा है । पूंटीने गुणकेसे पीछे आकर पुढे टेककर बादाकी पीछम मुँह रख दिया । उसका बादाते नमिध करनेपर मरी तरीका है । बचपनमें अपराध करके, मापीते रीट साफर, वह इसी तरह आकर धीपाव करती थी । नीलावरकी लहना यह समझ हो आया और उसकी आँखें

गीबी हो उठी। पूँटीके सिरपर हाथ रखकर कोमल स्वरमें टहन कहा—  
स्वय है रे !

पूँटी पीठ छोड़कर बाककभी तरह बाबाकी गोदमें आँधी गिरकर, मुँह छिप्य  
कर रोने लगी। नीलम्बर उसके सिरपर एक हाथ रखकर चुपचाप बैठा रहा।  
बहुत देर बाद पूँटीने कर्माँची आवाजमें कहा—अब कभी न कहूँगे दादा !

नीलम्बर हाथसे उसके केशोंको इधर उधर करता हुआ बोला—ना अब  
कभी न कहना !

पूँटी चुप होकर वैसे ही पकी रही।

उसके मनकी बात समझकर नीलम्बरने कोमल स्वरमें कहा—बह ठीक बड़ी  
है—गुलजन है। केवल नातेमें ही नहीं पूँटी उसने इसे माँकी तरह पाला-पोसा  
है और तेरी माताके सम्मान हो गई है। और जेग जो चाहे फेंक, लेकिन तेरे  
मुँहसे यह बात निकलना घोर अपराध है। पूँटीने आँसू पोंछते पोंछते कहा—बह  
क्यों हम कोमोंको इस तरह छेड़कर बची गई ?

बह क्यों गई पूँटी, सो केवल मैं जानता हूँ और जो उसके अन्तर्प्राप्ति है  
बह जानते हैं। बह आप भी नहीं जानती थी—उस समय बह प्राणल हो गई  
थी। उसको जरा भी ज्ञान या होश होना तो वह आत्महत्या ही कसती यह  
काम न करती।

पूँटीने और एक बार आँसू पोंछकर उसकी हुर आवाजमें कहा—तो अब  
क्यों नहीं वह आवाही दादा ?

था है और कुछ नहीं।

पूँटी फिर रो पड़ी।

नीलम्बरने हाफसे अपनी आँखें पोंछकर कहा—वह अपनी टाफकी—  
कामनाकी—दो बातें कम सब मुससे कहा करती थी। एक बात यह कि अन्त  
छमन यह मेरी गोदमें सिर रख सके और दूसरी बात यह कि सीता-सावित्रीकी  
तरह होकर अपनेके बाद तम्हीं सत्यियोंके साथ जाय। अम्मागिनकी सभी बात  
मिट गई।

पूँटी चुप होकर मुन्ने कगी।

नीलम्बर आँसुओंसे डूबे गलेको साफ करके बोला—तुम सभी तब अपनाप  
छपाते हो। मना नहीं कर पाया इससे मैं भी चुप पाया हूँ। लेकिन क्या  
मगवान्को कैसे बोला हूँ। वह तो देखते हैं कि किसकी भूख, किसके भारपका  
बोला खिरपर छदकर वह हूब गई। वही कह मैं फिर मुँहसे तब दोप हूँ। मैं  
तब आधीरात बिसे बिना कैसे रहूँ। नहीं बदन संवारकी नक़्क़मे वह चाह  
कितनी कककिनी हो उसके खिलाफ मेरा कोई बोम, कोई धिक्कार नहीं है।  
इस कममें पाकर भी अपने दोस्त तब मैंने वीरा लिया मगवान् कर, अगले  
कममें भी मैं तब पाऊँ।

वह आगे कुछ कह न सका बापिर उसका गला एकदम ईंच गया। पूँटीने  
बस्तीसे ठठकर आँचकले दादाके आँखें पोंछते-पोंछते आप भी रो दिया। सरवा  
तब आप पड़ा कि दादा जैठ कहीं इटते आ रहे हैं। रोकर कहा—क्यों इन्क  
हो क्यों कबो दादा लेकिन मैं तुमको एक दिनके लिए भी कहीं अकेला नहीं  
छोड़ सकती, नहीं छोड़ूँगी।

नीलम्बर सिर ठठकर बच हुआ।

विवाह अगलापपुरीकी राहपर लौटी आ रही थी। इसी राहका पकड़कर जब  
वह अन्तर्द्वार मसुदाप्पाकी लोन्में गई थी, तबके तब जानेमें और आप इस  
जानेमें कितना अन्तर है। अब वह अपने घर आ रही है। ठठकी बुकक दे  
राहमें कितना ही कातर होकर विनामकी मिठा मँगने कगी, तब अपनी  
रोहपर उठना ही श्रेष्ठ और सीस जान कगी। वह किसी भी कारणसे कहीं  
भी किन्म करनेको राबी नहीं। ठठकी लाँची यहममें परिवर्तित हो गई है,

गौमी हो उठी। पूंटीके सिरपर हाथ रखकर कोमल स्वरमें उसने कहा—  
क्या है ? !

पूंटी पीठ छोड़कर बाइककी तरह बाइककी गोदमें झोंपी गिरकर, मुँह छिप  
कर रोने लगी। नीलम्बर उसके सिरपर एक हाथ रखकर पुष्पाप बैठा रहा।  
बहुत देर बाद पूंटीने बग़ायी आवाज़में कहा—अब कमी न कहूँगी दादा।  
नीलम्बर हाथसे उसके केशोंको हथर उधर करता हुआ बोला—ना अब  
कमी न कहना।

पूंटी चुप होकर बैठे ही पड़ी रही।  
उसके मनकी बात समझकर नीलम्बरने कोमल स्वरमें कहा—बह उठी बड़ी  
है—गुबबन है। केवल नातमें ही नहीं पूंटी उसने तुम माँकी तरह पस्य-पीठा  
है और तेरी माताके समान हो गई है। और लोग जो पाहे कहें, लेकिन तेरे  
मुँहसे यह बात निकलना घोर अपराध है। पूंटीने जॉर्जों पेंसले पेंसले कहा—बह  
क्यों इस जगहोंको इस तरह छोड़कर प्यसी गई ?

बह क्यों गई पूंटी सो केवल में जानता हूँ और जो उसके अन्तर्ग्रामी हैं,  
वह जानते हैं। वह आप भी नहीं जानती थी—उस समय वह पगल हो गई  
थी। उसको पता भी खान या होस होस या वह आत्महत्या ही करती, वह  
काम न करती।

पूंटीने और एक बार जॉर्जों पाछकर उसकी मुँह आवाज़में कहा—तो अब  
क्यों नहीं बह आती दादा ?

क्यों नहीं आती ! आनन्द उषय नहीं है बहन इसीसे नहीं आती। इतना  
करकर, जोर करके अपनेको सँभालकर खगमर बाद ही उसने कहा—जित  
अवस्थामें वह मुझे छोड़कर गई है, अगर उसके बीटनेकी जगह-सी में वह रखी  
ता वह बीट आती—एक दिन भी कहीं नहीं पाती। वह बात क्या दादा आप ही  
नहीं समझती पूंटी ?

पूंटीने मुँह छिपाये रखकर ही गहन हिंसाकर कहा—समझती हूँ दादा  
नीलम्बरने जोसमें आकर कहा—तो पड़ी कह बहन। वह जाना चाहती है,  
जाने नहीं पाती। वह कैसा दण्ड है पूंटी सो इस जगह अवस्थ नहीं देख पाते  
लेकिन मैं जॉर्जों मुँहसे ही देख पाता हूँ। वह देखना ही नित्य मुझे पाये दादा

या है और कुछ नहीं।

दूँटी फिर रो पड़ी।

नीलम्बरने हाकसे अपनी आँखें फुँटकर कहा—वह भ्रमनी साधकी—  
कामनाकी—दो रातें जब तक तुमसे कहा करती थी। एक साध यह कि अन्त  
कल्प यह मेरी गोश्वमे फिर रख लके और दूसरी साध यह कि सीता-सावित्रीकी  
तब होकर अपनेके बाद उन्हीं सतिशोक पाव आय। अम्नागिनकी सम्ये साधें  
मिट गई।

दूँटी चुप होकर मुनन लगी।

नीलम्बर आँसुओंसे रोके गलेको साध करके बोला—तुम लम्बी उस अन्तपत्र  
क्याते हो। मना नहीं कर पाया इससे मैं भी चुप थावा हूँ। लेकिन क्या  
मयदान्को कैसे बोला हूँ। वह तो देखते हैं कि किसकी भूल, किसके अपराधका  
बोला फिर कबकर वह हूब गई। वही कह मैं किस मुँहसे उसे दोष हूँ। मैं  
उसे आशीषाव दिये बिना कैसे रहूँ। नहीं वहन संसारकी नजरों वह पादे  
कितनी कलकलनी हो उसके सिक्काफ मेरा कोई खोम, कोई धिक्कावत नहीं है।  
इस कर्ममें पाकर मैं अपने दोषों उसे मने गैवा दिया मगवान् कर, अगले  
कर्ममें मैं मैं उसे पाऊँ।

वह आगे कुछ कह न सका वहीपर उसका यका एकदम रूँच गया। दूँटीन  
कलकलते उठकर आँसुबले हावोंके आँसु खेँडते-खेँडते आप भी रो दिया। उसका  
उसे खान पड़ा कि हावा जैठ करी इन्हे का रहा है। रोकर कहा—जहाँ इन्ध  
हो वहाँ लखे हावा लेकिन मैं तुमको एक दिनके लिए भी करी ब्रहेका नहीं  
झेड़ लक्ष्मी नहीं छोड़ूँगी।

नीलम्बर फिर उठकर गया हँस।

विराज अग्रभाषपुरीकी राहपर बोटी आ रही थी। इस राहको पकड़कर वह  
वह अनुविष्ट मृत्युपत्राकी सोचमें गढ़ रही, लकड़े उस कानेमें और अब इस  
कानेमें कितना अन्तर है। अब वह अपने पर आ रही है। उसकी दुबक देह  
राहमें कितना ही कातर हाँकर विभामकी मिछा मँगन लगी उसे अपनी  
देहपर उठना ही श्रेष्ठ और सील काने लगी। वह किसी भी कारणसे कहीं  
भी बिकम्प करनेको सखी नहीं। उसकी आँखी सन्मयमें परिवर्तित हो गई है

गीली हो उठी। पूंटीके सिरपर हाथ रखकर कोमल स्वरमें उठन कहा—  
क्या है रे ?

पूंटी पीठ छोड़कर बाककभी तरह बाबाकी गोदमें आधी गिरकर, मुँह छिप  
कर रोने लगी। नीलावर उसके सिरपर एक हाथ रखकर चुपचाप बैठा रहा।  
बहुत देर बाद पूंटीने बर्भासी आवाजमें कहा—अब कभी न कहूँगी दादा !

नीलावर हाफते उसके कंधोंको इधर उधर करता हुआ बोला—ना अब  
कभी न कहना।

पूंटी चुप होकर बसे ही पड़ी थी।

उसके मनकी बात समझकर नीलावरने कोमल स्वरमें कहा—बह ठीक नहीं  
है—गुरुजन है। 'केवल नातेमें ही नहीं पूंटी उसने गुप्त मौकों तरह फटा-पेसा  
है और तेरी माताके सम्मान हो गए हैं। और लोग जो चारे करें, लेकिन उसे  
मुँहसे यह बात निकलना पौर अपराध है। पूंटीने आँखें पोंछते पोंछते कहा—यह  
क्यों हम दोनोंको इस तरह छोड़कर चली गई ?

बह क्यों गई पूंटी तो केवल मैं जानता हूँ और जो उसके अन्तर्दामी हैं,  
वह जानते हैं। वह आप भी नहीं जानती थी—उस समय वह पामल हो गई  
थी। उसको कुछ भी ज्ञान या होश होना तो वह आत्महत्या ही करती यह  
काम न करती।

पूंटीने और एक बार आँखें पोंछकर उसकी हुई आवाजमें कहा—तो अब  
क्यों नहीं बह आधी दादा ?

क्यों नहीं आती ? जानेका उपाय नहीं है बहन शीघ्र नहीं आती। इतना  
कहकर, और करके अपनेको सँभालकर लज्जत बाव ही उठने कहा—किस  
अवस्थामें वह मुझे छोड़कर गई है, अगर उसके बीटनेकी जगह-सी भी राह पड़ी  
तो वह जैद आती—एक दिन भी नहीं खड़ी। यह बात क्या दू आप ही  
नहीं समझती पूंटी ?

पूंटीने मुँह छिपाने रखकर ही गर्जन दिखाकर कहा—समझती हूँ दादा

नीलावरने जोरमें आकर कहा—तो पढ़ी कह बहन। वह जाना चाहती है  
जाने नहीं पत्ती। यह कैसा दण्ड है पूंटी तो तुम लोग व्यवस्था नहीं देख पाते,  
लेकिन मैं आँखें मूँदते ही देख पाता हूँ। वह देखना ही निश्च मुझे खाने तक



या है और कुछ नहीं।

पूँदी फिर से पड़ी।

नीलमरने हाथसे अपनी बाँल घँटाकर कहा—वह अपनी साधकी—  
कामनाकी—दो बातें अब तब मुझसे कहा करती थी। एक साध यह कि अन्त  
तम्य वह मेरे गोरुमें सिर रल सके और दूसरी साध यह कि सीता-सावित्रीकी  
तरह होकर भरनेके बाद उन्हीं ससियोंके पास जाय। अभ्यासिनकी सन्ने साधें  
मिद गई।

पूँदी चुप होकर सुनने लगी।

नीलमरने आँसुओंसे कैंसे गलेको साफ करके बोध्य—तुम सभी उस अपराध  
क्याते हो। मना नहीं कर पाया इससे मैं भी चुप रहता हूँ। लेकिन क्या  
मगवान्को कैसे छोला हूँ? वह तो देखते हैं कि किसको भूल, किसके अपराधका  
बोझा सिरपर छादकर वह डूब गई। वही कह मैं किस मुँहसे उसे दोष हूँ! मैं  
उसे भाषीनाद दिने बिना कैसे रहूँ! नहीं वहन, संसारकी नजरमें वह चाह  
किसनी कककिनी हो उसके सिक्कफ मेरा कोई खोम, कोई सिक्कमत नहीं है।  
इस काममें पाकर भी अपने दोषसे उसे मैंने गँवा दिया, मगवान् कहे, अमर  
अमरमें भी मैं उसे पाऊँ।

वह भासे कुछ कह न सका यहाँपर उसके गला एकदम कँच गया। पूँदीन  
कन्दीसे उठकर नीलमरने दादाके आसू पोंछते-पोंछते आप भी रो दिया। सहसा  
उसे आन पड़ा कि दादा कैसे कहीं हयते जा रहे हैं। रोकर कहा—आँ इम्का  
हो क्यों फले दादा लेकिन मैं तुमको एक दिनके लिए भी कहीं अकेला नहीं  
छोड़ सकती, नहीं छोड़ूँगी।

नीलमरने फिर उठकर चला हँला।

विराज मगधानपुरीकी राहपर खड़ी आ रही थी। उसी राहका पकड़कर अब  
कर अनुविष्ट मृत्युसन्माकी खोजमें यह थी, उसके उस जानेमें और अब इस  
जानेमें कितना अन्तर है। अब वह अपने पर प्य रही है। उसकी दुर्बल देह  
एहमें कितना ही आठर होकर विग्रामकी मिछा मँगने लगी उसे अपनी  
देहपर उठना ही श्रेष्ठ और सीध जाने लगी। यह किसी भी कारणसे कहीं  
भी विग्राम करनेको राजी नहीं। उसकी खोशी यह्यमें परिवर्तित हो गई है,

यह उसे मायूस हो गया है। इसीसे आसकाफी सीमा नहीं थी कि कहीं वह बर्होसक न पहुँच पाये। अकस्मिकसे ही उसे यह फज्र बिभास था कि शरीर निष्पाप न हो तो कोई अपने स्वामीके पारणोंमें प्राणत्याग नहीं कर पाती। वह इसी उपायसे मरनेके पक्षे एक बार अपने शरीरकी परत कर केना चाहती है—उसका प्राणभिन्न सम्पूर्ण हुआ कि नहीं। इस परीक्षामें उत्तीर्ण हो सक्नेपर वह निर्मय होकर बड़े आनन्दसे जीवनके उस किनारेपर लड़ी होकर उनकी राह देखती बेटी रोती। किन्तु रामोदर नहीं कि इस पार आकर उसके हाथों और पैरोंमें बरम आ गया, मुँहसे अधिक माधामें लून आने लगा। अब आगे किसी तरह पैरोंमें चढ़नेकी राह नहीं रही। वह हठाथ होकर एक दुसरे तले झेंडकर मयसे रोने लगी। वह कैसा ममानक अफराध है, जो इतना करके भी उसकी अन्तिम आशा पूरी नहीं हुई। उसका वह जन्म तो गया, दूसरे जन्ममें भी आशा नहीं रही अब वह और क्या करेगी? आशा नहीं है, तो भी वह दुसरे तले पड़कर सारा दिन हाथ जोड़कर स्वामीके चरणोंमें प्रार्थना करने लगी।

दूसरे दिन ठारकेसरके आसपास कहीं बाजार जमानेका दिन था। सवेरे ही उस सड़कपर बैक्याड़ियाँ कब्जे लगीं। उसने हिममत करके एक बड़े गम्भीरानसे प्रार्थना की। बूढ़ा गाड़ीवान उसका रोना देखकर राखी हो गया और उसे अपनी यात्रीपर चढ़ाकर ठारकेसर पहुँचा गया। किराजने निश्चय किया कि मन्दिरके आसपास ही कहीं वह पड़ी रहेगी। यहाँ किराजने ही जोय आये-जये रहे हैं। शामक किसी उपायसे वह एक बार छोटी बहूके पाठ सवर मेज सके।

किराजने ही मर-नाही कठिन व्याप्तियोंसे पीड़ित किराजनी ही कामनाएँ करके, इस देवमन्दिरकी चरकर इधर-उधर भ्रम हुए हैं। उनकी बीच आकर किराजने बहुत दिनोंके बाद कुछ शान्तिका अनुभव किया। उनकी तरह उनके भी व्यापि है, कामना है। वह उसीको छोड़कर यहाँ पुण्यपाप पड़ी रह सकेगी किसीकी भी इच्छा आकाश नहीं करगी किसीका भी अर्थहीन कौमूद परिचार्य न होगा। यह सोचकर इतन दुःखमें भी उसे आराम मिला। लेकिन राग तेजीसे साव बढने लगा। उसके इस दुर्बल आश्रयमें किना कुछ साये-भिये छः दिन बीत गये किन्तु अब और भी दिन कट जायेंगे, ऐसी आशा नहीं रही, कोई आकाश—यह भी मरोछा नहीं था। मरोछा था कैवल्य मूल्यका। वह उसीके स्थिर फिर

एक बार अपनेको तैयार करने लगी ।

उस दिन आकाशमें शहरक छाये हुए थे । तीसरा पहर होते न होते ही अंधियरा बन पड़ने लगा । सबेरे उसके मुँहसे बहुत-सा रक्त निकल अपनेके कारण, उसकी मृतकस्य रोह मानों एकदम निशेष हो गई थी । उसने मन ही मन कहा—  
जान पड़ता है आज ही सब समाप्त हो जायगा । अभीसे वह मंदिरके पीछे मुँह बाँधे पड़ी थी । सोपहरको देवताकी पूजा हो चुकनेपर वह और दिनोंकी तरह ठठकर बैठकर प्रणाम नहीं कर सकी—मन ही मन प्रणाम कर लिया । इतने दिन वह स्वामीके घरखेतोंमें केवल बिनती ही करती आ रही है । वह मनोष नहीं है । जो काम उसने कर बाँटा है उससे इस कमपर उसका कोई राजा नहीं रहा केवल यही उसने पाया है कि उसका अगले कमका अभिधार न थाय समझे-बूझे बिना अपराध करनेका दण्ड इस कमको अपनकर वृत्ते कम-तक ज्ञात न हो सके, यही मित्रा उसने खींची है । किन्तु आज दिनका जन्म होनेके साथ-साथ उसकी मित्रा साथ चहछा एक आत्मसमर्पणमें सुगम । वह मित्राका मान नहीं रखा; विद्रोहका भाव दिखाइ पड़ा । उसके सार विलसमें भरकर एक अपूर्व अभिमानका शुरु अभिव्यक्तीय भावबुद्धि बल उठा । वह उसीमें यत्न होकर मन ही मन केवल यही करने लगी—तो फिर तुम्हने क्यों कहा था ?

उसे मालूम नहीं हुआ कि जब उसका अपना शायो हाथ गिरकर परिक्रम्यकी राहमें टैक गया है । चहछा उसी हाथपर एक कठिन व्याघ्र पाकर वह अस्फुट स्वरमें काँठोकि कर उठी—उसके मुँहसे 'आह'का शब्द निकल गया । यह अपने-अपनेकी राह थी । जिस आहमें न रोकर इस अवस्था कीर्ण हाथको धनधान्यमें कुछक दिया था उसने अत्यन्त कथित और व्यथि होकर, झूलकर लड़े होकर, कहा—हाथ हाथ ! कौन इस तरह राहमें पड़ा हुआ है ! मुझसे क्या अप्पाय हुआ—अधिक थोटा तो नहीं लगी !

विराजने धीरेन मुँहसे कपड़ा हटाकर देखा इसके बाद और एक अस्फुट स्वर करके वह चुप हो गई । वह आदमी नीकटतर था । वह एक बार प छुकर देखनेके बाद हट गया ।

कुछ देरमें सूर्य अस्त हो गये । पश्चिम क्षितिजपर बादल न थे ।

दियन्तमाखण्डते गिरणी और मिलरी हुई सूर्यकिरणोंकी सुनहली आग्न मंथिरके कच्छपर, पेड़की खोदीपर फैल गई थी। नीकनरने दूर लख होकर पूंछीसे कहा—उस बीमार स्त्रीको मैंने जोरसे कुचक दिया है वहन। देख तो अगर उसे कुछ रे सई—जान पड़ता है, कोई मिलागिन है।

पूँछीने देखा, वह स्त्री एकदक ऊंचीकी ओर ताक रही है। वह वह धीरेसे पास आकर लड़ी हो गई। उसके मुखका कुछ हिस्सा कमरसे ढँका था, तो मैंने जान पड़ा उसने वह मुख पकड़े कमी देखा है। पूछ—हाँ धी, तुम्हारा पर क्यों है !

‘उत्पन्नमो’ कहकर वह स्त्री हँसी।

विराजकी समस्त मुन्बर चीज उसके मुखकी हँसी थी। इस हँसीको समस्त संसारमें कोई भी नहीं भूक सकता था।

‘अरे वह तो भाभी है !’ कहकर पूँछी उसी घड़ी उस जीर्ण-जीर्ण देखके ऊपर भीखी पड़कर मुँह रलकर रो उठी।

नीकनर दूरपर लड़ा बेज रहा था। बाधधित न धुनकर भी वह समझ गया। एकबार विराजको सिरसे पैरक देखा उसके बाद शान्त स्वरसे कहा—महाँ न रो पूँछी उठ। इतना कहकर, वहनको अज्म हटाकर, स्त्रीकी जीर्ण देखको छोड़े बन्धकी तरह उठाकर छातीसे लगावे हुए तेज आँखोंसे अपने डरेकी ओर बज गया।



चिकित्साके लिए उत्तम स्वास्थ्यकर स्थानमें जानेके लिए, विराजसे बहुत कुछ कहा गया बुधामर की गर्ह, किन्तु किसी तरह उसे राखी नहीं किया जा सका। पर छोड़कर जानेको वह किसी तरह राखी नहीं हुए।

नीकनरने पूँछीको आँखों में मुखाकर कहा—और कितने दिन हैं वहन ! क्यों जिस तरह खना पाहे, खने दे। अब तुम इसे धीर दिव न करो।

छारकेस्वरमें स्वाभीकी गोदमें फिर रलकर उसने पकड़े यही भावैरन किया था कि उसे पर से पकड़े उसकी अपनी शाय्यापर तुल्य दो। परके ऊपर, परकी हर एक सामग्रीपर और स्वाभीके ऊपर उसकी कैसी उत्कट तुल्य है, इस बातको जो कोई आँखोंसे देखता वही उसका अनुभव करके रो देता। दिन रात-

के अधिकतर समयमें ही विराज सुनारसे बेरोस-सी पड़ी रहती है किन्तु मोहा-सा सनका होते ही परकी हर एक चीजको गौरसे ताका करती है।

नीलम्बर उसकी छायाको छोड़कर प्रायः ही कहीं नहीं जाता और प्रायः ही बसियोंमें औंधू मरे हुए प्रार्थना करता है कि मामान्, तुम्हने बहुत दण्ड दिया अब क्षमा करो। जो मनुष्य परलोक जानेकी तैयारी कर चुका है उसके इस लोकके माया-मोहका कम्पन काट दो।

पारमार्थिकता पाहके ऊपर वह उत्कट आकषण बेलकर नीलम्बर मन ही मन संयुक्त हो उठता है। जो सप्ताह बीत गये। कलसे घोर विकारके लक्षण प्रकट होने लगे हैं। आज दिनभर प्रक्षय करके कुछ देर पहले वह सो गई थी। सप्ताहके बाद उसने औंलें खोखकर बेछा। पूँदी रोते-रोते उसके पैरोंके पास पड़कर सो रही है। कादी बहु सिरानेके पास बैठी है। उसे देखकर विराजने कहा—छोटी बहू ई न ?

छोटी बहूने उसके मुहपर हाककर कहा—हाँ जीजी मैं मोहिनी हूँ। पूँदी कहाँ हैं ?

छोटी बहूने हाकसे दिखाकर कहा—तुम्हारे पैरोंके पास सो रही है। वह कहाँ हैं ?

छोटी बहूने कहा—उठ तरफ संध्या-पूजा कर रहे हैं। 'तो फिर मैं भी करूँ' कहकर वह औंलें मूँदकर मन ही मन जप करने

लगी। बहुत देर बाद दाहिना हाथ माथेसे झुकाकर प्रणाम किया। इसके बाद छोटी बहूके गुरकी ओर क्षणभर उपस्थाप ताकती रही फिर धीरे-धीरे बोली—जान पड़वा है आज ही जा रही हूँ बहन, लेकिन मेरी कामना यही है कि फिर दूसरे जन्ममें तुम्हसे मेल हो, फिर तुम्हें इसी तरह अपने निकट पाऊँ।

कलसे ही सब लोगोंको मायूस हो गया था कि विराजका जीवन निरङ्कुश सम्पन्न हो जाया है इस समय उसकी बात सुनकर छोटी बहू उपस्थाप रने लगी।

विराज अब लूण हाशम है। उसने गंधका और मी चीमा करके गुपके गुपके कहा—छोटी बहू, मुनरीको एक बार बुझा लकड़ी है ? छोटी बहूने ईची दुर घोंसले कहा—अब उसे क्यों बुझाती हो जीजी ! वह नहीं ब्यावेगी।

विराजने कहा—आवेगी री आवेगी। एक बार कुछ मेजो। मैं उस क्षण करके आधीरात से जाऊँ। अब मुझे किसीके ऊपर श्रेष्ठ नहीं है, किसीके प्रति कोई शोभ नहीं है। मगधामने जब क्षमा करके मेरे स्वामीको छोड़ दिया है, तब मैं भी सभीको क्षमा करके जाना चाहती हूँ।

छोटी बहूने रोते-रोते कहा—वह मगधान्की क्षमा क्या है जीम्मे ! बिना अपराधके इतना दण्ड देकर भी उनकी मनोकामना पूरी नहीं हुई—वह तुमको भी उधर से जाना चाहते हैं। एक हाथ से किया तो भी अगर तुम्हें हम लोगों के पास समझ देते

विराज हँस उठी बोली—मुझे डेकर तुम क्या करती ! गौँव-मोहल्लेमें बदनामी हो गई है—मेरे जीते खानेमें तो अब कोई क्षम नहीं है बहन !

छोटी बहू जोर देकर कह उठी—क्षम है जीम्मे। इसके सिवा वह तो बहू बदनामी है—उसका हय लोग नहीं करते।

विराजने कहा—तुम क्षेम नहीं करते अगर मैं करती हूँ। बदनामी छूटी नहीं है किन्तु कुछ सच है। मेरा अपराध चाहे धिक्का पोझा हुआ हो छोटी बहू, उसके बाद हिन्दू धरणी कीका जीवित रहना ठीक नहीं। तुम कहती हो कि मगधान्के दया नश है। किन्तु

उसकी रात पूरी होनेके पहले ही पूँटी उमड़ी हुई स्बाहक स्तरमें बिस्मा उठी—मोह मगधान्की बड़ी दया है।

अकलक वह चुपके-चुपके से खी थी और मुन खी थी। अब उससे कर्पाष्ठ न हो सका और वह इस तरह बिस्मा उठी। रोकर फिर बोली—उनकी घर खी भी दया नहीं है, उनके जग-सा भी विचार नहीं है। जो असल पापी है, उनको कुछ नहीं हुआ—और हम लोगोंको ही वह इस तरह दण्ड दे रहे हैं।

उसके रोनेकी और ताककर विराज चुपचाप इसने खी। वह इसी कैसी मगध, कैसी हृदय-विचारक थी ! उसके बाद बनावटी फोवके स्तरमें बोली—तुम हा कलमुही, बिस्मा नहीं।

पूँटी चौक साकर उसके गलेसे छिपकर जोरसे रो उठी—तुम मते नहीं माँगी, हम सह नहीं सकते। तुम दया लाओ—और कहीं पको—तुम्हारे पैरों पड़ी हूँ माँगी, और कुछ दिन बिना।

पूँदीके रोनेका सध्व सुनकर, आदिक बीनमें ही छाड़कर, नीकंवर तेजीके साथ पलट आकर सुनने लगा । पूँदीके मुँहमें जो आवा, यही कहकर वह मामीसे कन्नासार बोलित खनेके लिए तिरौरी करने लगी ।

अम्मी कीरजको दोनों ओँल्लोंसे बहकर बड़ी-बड़ी आँसुकी धूँहें गिर पड़ीं । छोटी बहूने अच्छी तरह सँभाककर उसके आसू पोंछे और पूँदीको खींचकर अलग किया । पूँदी छोटी बहूकी छातीमें मुँह छिपाकर, सगळो रक्कती हुई फूट फूटकर रोने लगी ।

बहुत देर बाद विराज उससे हुए गलेसे थर-थर कहने लगी—ये मत पूँदी सुन ।

नीकंवर आँकमें लड़ा होकर सुनने लगा उसने ज्ञान किया कि विराजका चैतन्य सम्पूर्ण व्योम आया है, उसकी कल्पनाका अन्त हो गया है । विराज कहने लगी—बिना समझे उनको दोष न दे पूँदी । उनका क्या सूक्ष्म विचार है, तो भी किठनी दया है—इस बातको जान मुझसे बढ़कर कोई नहीं जानता । मरना ही मेरा बीना है—वह मेरे न खनेपर ही तुम जेय समझोगे । और तू क्यूँ है कि एक हाथ और एक आँख उन्होंने ले ली है, सो दो दो दिन आने-पेछे खरीद नष्ट होता ही । किन्तु इतनी-सी सजा देकर उन्होंने मुझे तुम लोगोंकी गोदमें बँध दिया—यह तुम जेय किस तरह भूलोगे पूँदी ?

साक जेय बिना है ।—कहकर पूँदी रोती ही रही ।

भक्तानुकी दया या सूक्ष्म विचारके एक अक्षरपर भी उसने विश्वास नहीं किया बल्कि यह सब उसे घोर अत्याचार और अविचार ही ज्ञान पड़ने लगा । कुछ देर बाद विराजने कहा—पूँदी, बहुत देरसे नहीं कहा क्या एक बार अपने दादाको तो बुला दे ।

नीकंवर आँकमें लड़ा ही था । उसके पलट आते ही छोटी बहू किठनी छोड़कर खड़ी हो गई । नीकंवरने खिरहाने बैठकर खींचा राहिला हाथ राख घानीसे उठाकर अपने हाथमें छे किया और वह नाड़ी देखने लगा । सबमुच विराजमें अब कुछ बाकी न था । नीकंवरने इसके पल्ले ही यह अनुमान कर लिया था कि वह कुलारके ओरसे इतनी बातें कर रही है और उसके उत्तरनेके साथ ही बहुत सम्भव है कि सब समाप्त हो जाय । इस समय नाड़ी देखकर भी

उसने यही समझा ।

विराजने कहा—बस हाथ दलो।—कहकर ही यह हँस पड़ी ।  
सहसा वह यह मर्ममोही परिचास कर उठी । इसीको लेकर यह इतना उस  
अनखं हुआ है, यह बात समीचीन याद आ गई । वेदनासे नीलम्बरका मुख  
विकृत हो गया । अन्ध पड़ता है, विराजने भी यह देख पाया । उसने घोरन  
फटफट कर कहा—ना ना, वह बात मैंने नहीं कही । सस ही कहती हूँ, अब  
फिज्जती बेर है !

इतना कहकर, चेष्टा करके अपना चिर स्वामीकी गोदमें उठकर रल  
दिया । फिर बोली—सबके सामने और एक बार तुम कहो कि मुझे क्षमा  
कर दिया ।

इन्हे स्वरमें 'किया है' कहकर नीलम्बरने हाथसे अपनी आँखें पोंछी ।  
विराज सपन्न आँखें मूँदने लगी थी । फिर बीरेसे कहने लगी—अनकर या  
अनखान इतने दिन तुम्हारी यादगी करनेमें न जाने फिज्जने अस्पृह और गम्भीरों  
मैंने की है—कोरी बहू तुम भी सुनो, दूरी दूमी सुन सीखी तुम छोटा सब  
नूतकर आज मुझे भिरा करो । मैं जाती हूँ । इतना कहकर वह हाथ बढ़ाकर  
स्वामीकी करज खोजने लगी । नीलम्बरने सिगानेका रुकिया हथकर पेर उस  
उज्ज दिये । विराज हाथसे बार-बार कमावार उनके पैरोंकी रज अप  
मध्यमें कमाती हुई बोली—मेरा सब दुःख इतने दिन बार लार्थक हुआ ।  
और कुछ नहीं है । रोह मेरी प्रुय निष्ठाप है । अब पकती हूँ, व्यकर राह  
देखती हूँगी ।

कहकर वह करबड लेकर पतिकी गोदमें मुँह छिपकर असुप्त स्वरमें बोली—  
रही तरह मुझे किये रगे कहीं अना नहीं । इतना कहकर चुप हो गई । वह  
बिज्जुक्त एक गइ थी ।

समी सला मुँह किये बैठे रहे । रातके बारह बजनेके बाद वह प्रसन्न करने  
लगी । नदीमें फँद पड़नेकी बात—अस्पृहाकी बात—निर्दोष पात्राकी  
बात—यही सब । फिज्ज उन समी बातोंमें बसि उसके एकप्र पति-मेम था ।  
परीमरके अग्रने फिर तरह उस लती-लाम्बीकी जवाबा—देखा पहुँचाई,  
देकक यही ।



इन कई दिनोंमें विराजके सामने बैठकर नीलेश्वरको मानन करना पड़ा था । उस दिन बीच-बीचमें पुरीको पुकारकर, छोटी बहूको पुकारकर बहने लगी । उसके बाद सक्केके समय पुकारना बन्द हो गया और अन्धकार पड़ने लगी । फिर उसने किसीकी भोर देखा नहीं फिर उसने किसीसे कुछ कहा नहीं । स्वामीकी देहपर फिर रखकर सूर्योदयके साथ-साथ ही बुलियाके तारे बुल्योद्ध्वनित हो गया ।

—समाप्त—

# बचपनकी कहानियाँ

१—उत्सव

बचपनमें मेरा एक मित्र था उत्सव नाम था उसका। पचास-साठ साल पहले—जबकि इतने दिन पहले जिसकी ठीक बाराण ही गुप्त न कर पाओगे—हम दोनों एक छोटे-से बंगला-समूहके एक ही बरतमें पढ़ते थे। हमारी अवस्था उस समय दस-पन्द्रह सालकी होगी। आदमीको डरा देनेके, डकानेके इतने शौचक समूहके दिमागमें थे, जिनकी कोई फिकर नहीं। उसने एक दिन अपनी मौके अवधानक खबरका छाप बिताकर ऐसी आपत्तमें डाल दिया था कि वह जो बरकर मायी तो उनके एक पैरमें मोल था यह और वह छत-भाठ दिवसक बैसकाकर चकती थी।

मैंने नाराज होकर कहा—इसके लिए एक मास्टर रख दो। घामको आकर वह पढ़ाने बैठे, तो फिर इसे ऊबस-उपद्रव करनेका मौका नहीं मिलेगा।

मुनकर समूहके बापने कहा—ना। उनके बुरा भी कोई मास्टर नहीं था अपनी ही कोशिशसे बुद्धि उठाकर, क्या भोगकर उन्होंने कितना-कुछ था और आज वह एक बड़े नामी बकीर है। उनकी हल्का थी कि थका भी बैठे ही बिना पाठ करे। लेकिन धीरे-धीरे यह बुरा कि जिस समय समूह हासकी परीक्षा अवसर न हो लगेगा तभीसे उसे परम पढ़ानेके लिए मास्टर रख दिया जायगा। उस दफा समूहकी जान बच गई लेकिन मन ही मन वह अपनी मौके ऊपर चढ़ गया। कारण यह था कि मैं उसके तिलक मास्टर करनेकी कोशिशमें थी। वह जानता था कि घर में मास्टरको बुलाना और पुस्तकको बनाना बराबर है।

समूहके पिता धनी पारस थे। कई धातु हुए, पुराना घर तुड़काकर नए

सिम्बिलिया इमारत बनवाइ है। उसीसे बस्खुकी मोंकी नयी इच्छा है कि अपने गुरु म्हाराजको उसमें आकर उनके चरणोंकी रखते भरकी और अपनेको पवित्र करें। लेकिन गुरु म्हाराज बूढ़े हैं, फरीदपुरसे इतनी दूर आनेके लिए राखी नहीं होते। बस्खुकी बार अच्छा मौका हाथ आया है। क्योंकि गुरु म्हाराज स्वस्थत्वमें गंगप्रस्नान करनेके लिए काशी आये हैं पर झोटे समय नंदरानी (बस्खुकी मौ) को आधीरात्रि देते पायेंगे। बस्खुकी मौ आत्मन्त्रसे पूछी नहीं समझती गुरु म्हाराजके स्वागत और सेवाकी तैयारीमें जुटी हुई हैं। इतने दिन बाद उनकी मनोकामना पूरी होगी—परमे गुरुदेवके पैर पोंगे। पर पवित्र हो जायगा।

नीनेके हाथ कमरेसे अस्पाक-पत्र हटा दिया गया। नया निराकृष्ण फलंग बनवाया गया—गुरुजी ठप्पर सोबेंगे। इसी कमरेके एक कोनेमें गुरुजीके पूजा-घडके लिए स्थान ठीक किया गया। क्योंकि सिम्बिलियेपर बने ठाकुरद्वारेमें गुरुजी का न सकेंगे—घड़ने-उठनेमें उन्हें कष्ट होगा।

कुछ दिन बाद गुरुजी आकर उपस्थित हुए। लेकिन कैसा खराब दिन था—कैसा दुपोंग था। आकाशमें काले बादलोंकी परत छाई हुई थी। जैसी चोरकी हवा चल रही थी, वैसी ही चोरकी वर्षा हो रही थी। आधी और पानी बमनेका नाम ही नहीं लेते थे।

हजर मिठाई-फलवान बनानेमें और फल बीरुद काटकर सवानेमें बस्खुकी मौ इतनी व्यस्त थी कि उन्हें कम खानेकी फुर्सत नहीं थी। इसी बीचमें वह अपने हाथसे झाड़ूझुकर गुरुजीके पंखीमें मसहरी डाक गईं। बिजने बिछा गईं। बातबीतमें रात हो गई, राहके बके हुए गुरुदेव सा-पीकर पंखीतर आकर बैठ गये। नौकर-चाकर झुड़ी पा गये।

पड़िया पंख और गुरुगुले बिछीनेपर बैठकर प्रसन्नचित्त गुरुजीने मन ही मन अपनी पेंखी नम्हरानीको अनक आधीरात्रि दिये।

लेकिन गहरी रातमें अकस्मात् उनकी नींद उषर गई। उससे उपककर मसहरी फोड़कर उनके लूट पुष्ट पेडके ठप्पर पानी गिर रहा था—उनकी चौंख पर हो रही थी। ओह वह पानी कितना ठण्डा था! इतककर वह पंखीत उठ पड़े, पेडकी पोंछते हुए कहने लगे—नंदरानीने वो नया बनवाया

हे लेकिन देखा है, पछोहकी कड़ी भूप लाकर छत इतनी जल्दी चिड़क गई है।

निबाइका फर्श भारी नहीं था। मसहरीसमेत उसे गुरुजी दूसरे कोनेमें खींच ले गये और चुपकेसे फिर बैठ रहे। लेकिन एक मिनट भी नहीं बीतने पाया दोनों आँखें खींचे ही मूँसी थी कि फिर वैसे ही दो-चार बूँद ठण्ठा पानी टप-टप-टप पेटके ठीक उसी स्थानपर टपक पड़ा।

स्मृतिरत्न महाशय फिर उठ बैठे फिर फर्शको खींचकर दूसरे किनारेपर ले गये। बोले—यै! छत इस छिरेसे उस छिरेतक फट गई आन पक्की है।

फिर बैठे, फिर पेटके ऊपर उसी जगह टपके पानी गिरा। फिर उठकर, पटक पानी पौछकर फर्श खींचकर और एक किनारेपर ले गये लेकिन छेड़ते ही फस भी वैसा ही पानी टपकने लगा। फिर खींचकर चौथे कोनेपर ले गये लेकिन वहाँ भी वही हाक हुआ। जबकी टटोकर देखा, दिखाना भी मीरा गया है। खोनेका उपाय नहीं है।

स्मृतिरत्न मुस्किरते पड़ गये। बूढ़े आरम्भी ठहरे, जगह भी नई है, खनी हुई नहीं। इर्बाज्य लोकर आते दर जमाता है और यहाँ खाना भी खतरसे लायी नहीं। क्या ठिकाना पड़ी हुई छत कहीं अधानक सिरपर ही न गिर पड़े। डरते हुए इर्बाज्य लोकर गुरुजी बरामदेमें आये वहाँ एक बाज्जेन जकर जल रही थी लेकिन आरम्भी कोई न था। बाजारमें घोर भीषण जमा हुआ था।

जैसा धोरका पानी जल रहा था, वैसी ही जारकी हवा जल रही थी। खड़े खाना भी कठिन था। नौकर-धाकर सब कहाँ हैं किपर सोते हैं। वह भी बेचारे नहीं आनस्त। जोरसे निश्चयकर पुकारा, लेकिन कोश नहीं बोध। एक तरह एक बैप पड़ी थी। कपड़े के पिताके गरीब मवाकिकक उसीपर आकर बैठते थे।

आपार होकर गुरुजी उसीपर आकर बैठे। उन्होंने मनमें यह अवस्था अनुभव किया कि इससे उनकी मर्वाइको बड़ी टेस लगी, लेकिन और उपाय ही क्या था। उससे बचनेका भी ठही हवामें बरतनेवाले पानीकी छिंटें मिमी हुई थी और वे उड़-उड़कर गुरुजीके ऊपर पड़ रही थी। उन्हें रोएँ सड़े हो

छे ये। आधी छोटी सोककर उन्होंने देखको अपनी तरह तक किया और दोनों पैर, अंतक हो सका ऊपर उठाकर आराम पानेका इंतजाम कर लिया। पक्षन और आराममें बाधा पड़नेसे बेह शिथिल हो रही थी मनमें खींच मर गई थी नींदके सोछेसे पकड़ें मारी हो रही थीं। गुरुजी परमें हमेशा सीधा सदा मोहन करते थे, आज यहाँ बढ़िया मोहनकी सामग्री पाकर उन्होंने खुद बहककर खा किया था। उसपर रातको सोनेको नहीं मिला था। पछ यह हुआ कि दो-एक लोही बखरें गलेतक आकर रह गईं। गुरुजी बहुत पसंदावे।

इसी समय एकएक एक नया उपवास उठ सका हुआ जिसका गुरुजीको खयाल भी नहीं था। बड़े-बड़े मच्छड़ोंने न जाने कहाँसे आकर उनके कानोंके पास मनमनाना शुरू कर दिया। आँखोंकी पकड़ें उठना नहीं चाहती थीं, उन्होंने खक बनाव दे दिया था। गुरुजीका मन आँखोंसे मर गया—न जानें वे बहमाच मच्छड़ कितने हैं। यह हास केवल एक ही हो मिनट रहा, वो अनिश्चित था वह निश्चित हो गया—गुरुदेवको मारुत हो गया कि ये सूनके प्यासे सधु बेगुमार हैं, सचमें कोई भी ऐसा बहादुर नहीं है, जो इस सेनाका सामना कर सके। मच्छड़ोंके फटनेमें जैसी लुत्तबी बैठे ही सड़न होने लगी। गुरुजी तेजीसे उठकर कहाँसे मरने, लेकिन मच्छड़ोंने उनका पीछा नहीं छोड़ा। कमरेके भीतर जैसे पानीके कारण टिकना बुरा था, बैठे हैं। बाहर मच्छड़ोंके मारे जैन न थी। गुरुजी बार-बार बगावतार हल-उपर हाथ-पैर पकड़ते थे, अंग्रेज फटकारकर मच्छड़ोंको ममाते थे, लेकिन किसी तरह उनके धावेको रोक न पाते थे। गुरुजीकी इस योग्यबायीसे अमर हो-बार मच्छड़ घड़ीर हो जाते थे तो उनकी बगल छेनेके लिए नई कुमक आ जाती थी—हूने ठस्राइसे और सैकड़ों मच्छड़ हमला कर देते थे। गुरुजी बरामदेमें इस सिरसे उस सिरतक रोड़ने-भागने का और इस आँखकी आगुमें भी उनकी बेहसे पसीना निकलने लगा—उनका भी चाहने लगा कि मध्य पड़कर पिछाई पुकारें। लेकिन यह निकलुक्त बड़कपनको बात होमी खोगा हैंसेगे, वह सोचकर वह चुप रहे।

उन्होंने कसनाकी नजरसे देखा कि उनकी बेटी नन्दरानी बढ़िया पर्ययके गुग्गुले गहरेपर मखरीके भीतर आरामसे सो रही है। परकी और खोगा भी अपनी-अपनी बगहपर निकलुक्त बेफिकरीके साथ सो रहे हैं। केवल उन्हींको सोना—

दिया—देखो, हरमन्नाश कहीं गया ! काम-काज परका चूस्नेमें जाय, तुम काम जाओ, उस बदमाशको जहाँ पाओ मारते-मारते यहाँ पकड़ आओ ।

बम्बूके पिता उसी समय ऊपरसे नीचे उतर रहे थे । झीका केतहाणा दिगड़ना और निस्स्थाना देख-मुनकर वह मौनचक्रेसे हो गय । बोले—क्या बात है ! हुआ क्या ! क्यों चिन्मय रही हो !

नन्दरानी रो पड़ी । बोली—तुम अपने इस पापी बम्बूको घरसे निकाल दो नहीं तो मैं आज ही गंगामें डूबकर इस महापाप का प्रायश्चित्त करूँगी ।

बम्बूके पिताने पूछा—उसने किया क्या !

नन्दरानीने कहा—किना किसी कारणके उसने गुरुदेवकी सेवा दण्ड की है जरा थककर अपनी आँखोंसे देखो तो सही ।

सब सब आने कमरेके भीतर गये । नन्दरानीने सब हाठ-हवाक कहा और बम्बूको सब करल्लु बिसाई । फिर पतिसे कहा—इस पापी बम्बूकेको लेकर केतहाल्ली निभ चकती है तुम्हीं बताओ !

गुरुजी सब समझ गये । अपनी मूर्खतापर हस बाप ही 'हो हो' करके वार-वार हँस पड़े ।

बम्बूके पाप वूसरी ओर मुँह फेरकर लड़ रहे । धावत उन्हें भी हँसी आ रही थी ।

नौकरने आकर कहा—बम्बूबाबू कोठीमें कहीं नहीं हैं ।

और एक नौकरने आकर खबर दी कि वह मौसीके घरमें बैठे पेड़पूजा कर रहे हैं । मौसीने उनको रोक लिया, जाने नहीं दिया ।

मौसी माने नन्दरानीकी बहिन । उसका पति भी बकील है । वह पासके ही वृत्ते मोहस्त्रमें रहता है ।

इसके बाद अगमग पन्द्रह दिनतक बम्बूने अपने परकी भीमदण्ड फेर नहीं रखे ।

## २—बर्बोका चोर

उन दिनों थारों तरफ वह खतर पैठ गई कि रुम्मारूपण नरकें ऊपर रेकल्य पुछ सनेगा सेकिन पुछका काम रुका पड़ा है । इसका कारण यह है कि

पुछकी रेबी छीन पत्थोंकी बलि मोंग रही है। बहियानके बिना पुछ नहीं बन सकत। फिर सबर पैसी कि हो बन्ध पकड़कर जीते ही पुछके सम्भेके नीचे गाढ़ दिवे गये हैं, अब कयल एक झड़केकी तयार है। उसके मिश्र जानेसर पुछ तैयार हो जायगा। वह भी सुना गया है कि रेश-कम्पनीके आदमी झड़केकी सोन्में घाह और गोंबोंम पकड़कर जगा रहे हैं। कोह नहीं कह सकता कि वे कब कहाँ पहुँच जायेंगे। उनको पखानना भी कठिन है। क्योंकि उनमेंसे कोह भिखारीके मेसम है, कोह साधु-सन्नासीका शाना बनाये है और कोह गुप्ते झड़कोंकी तरह झटो बंधे भूमि है। वह अचानक बहुत दिनोंसे पैसी हुई थी। इसविषय आसपासके गोंबोंमें खनेवाले बेहर डरे हुए थे और सन्देहका यह हाक था कि हर किसीको यह कड़का पकड़नेवाला रेश-कम्पनीका आदमी ही समझ बैठे थे। हर एक यही समझता था कि अन्की ठसीकी बारी है, घायद ठसीका कच्चा पकड़कर पुछके नीचे दफना दिया जायगा।

किसीके भी मनमें शान्ति न थी। सभी परोंमें सनसनी थी। उसके ऊपर झलकानोंकी सबर भी थी। कड़कचेम जो खोग नौकर थे, वे आकर बैठकते थे कि उस दिन वह बाब्यरमें एक झड़का पकड़नेवाला पकड़ा गया है। कड़की ही बात है, कड़कचेको एक गलीमें और एक आदमी पकड़ गया है। वह एक छोटे झड़केको पकड़कर अपनी झोलीमें डाल रहा था। इसी तरहकी निल नई कितनी ही सबर हुन पड़ती थी। कड़कचेकी गलियों-कूचोंमें सन्देहके शिकार कितने ही बेगुनाह बेचारे पकड़ और पीटे गये, किसी तरह मुश्किलसे उनके प्राण बचे और इस अत्याचारकी सबरें लोगोंके मुँहसे हमारे दण्ड—हमारे गवाम भी पहुँचने लगी। ऐसे ही समयमें एक पढ़ना एक दिन एकाएक हमारे गोंबमें भी हो गई।

गोंबकी राहके पास ही कुछ फलफेन, एक बागकी मीतर एक बूढ़ पाखन और उनकी झाड़नी दोनों रहते थे। वह मुलकी थे। उनके झड़का-बाक कोह नहीं था लेकिन दुनियामें और दुनियाक सभी मामलोंमें आसक्ति साह्र आनकी कयल झलक आने थी। उनके एक लया भतीया था। उसे उन्होंने अन्न कर दिया, मगर उसका हिस्सा नहीं दिया। देनेकी कसना भी उन दोनोंने कमी नहीं की। भतीया बीच-बीचमें आकर कहा-सुनी करता था खड़ा-कड़ा या

और अपने हिस्से के कसन कपड़े और गहनों की सामग्री का दाना करता था। करता था—मैं कुछ भी नहीं माँगता। कम्माई सब मेरे पुरस्कोषी है, मेरे बाप का हिस्सा हमम करनेवाले तुम कौन होते हो ?

हल्कर उसकी प्याची हल्ला मचाकर पिछा पिछा कर खोमों की भीड़ घमा कर खेती थी। करती थी—हीरू (मसीना) हम मारने आया है। यह गुप्ता हमें मार टाकने की धमकी देता है।

हीरू बोल कर कहा—अच्छी बात है, किसी दिन मारकर ही सब कत्तू करूँगा। इसी तरह दिन बीत रहे थे।

उस दिन सगड़े की हल हो गई। दोनों ओर गरमागरमी बढ़ चली। हीरू ने खोमों में लड़े हाँकर कहा—यह आलसियों मर्तवा करता है। प्याचा, मेरा हिस्सा जो मुझे मिलना चाहिए, दोगे या नहीं ?

प्याचाने सिक्ककर कहा—जब था तेरा कुछ नहीं है।

हीरूने भी तमककर कहा—नहीं है ?

प्याचाने कहा—हाँ हाँ नहीं है।

हीरूने कहा—तुम बड़ बोलते हो। मैं अपना हिस्सा लेकर ही खेजूँगा।

प्याची रसोईपरमें थी। बाहर निकलकर बोली—तो फिर अब अपने बापको बुझा दो।

हीरू बोल कर कहा—मेरे पिता तो स्वर्ग गये, वह भा नहीं खोंगे। मैं जबकि तुम्हारे बापबाबोंको बुझा आऊँगा। उनमें शायद कोई बग़ी खीटा हो। वह आकर मेरा रसी-रसी हिस्सा बाँट देगा।

इसके बाद वह मिनकतक दोनों ओरसे मिस म्यापका इस्तेमाल किया गया वह यहाँ किसी नहीं जा सकती।

आनेके पहले हीरू बोल कर गया कि आज ही इसका फैसला करके खूँगा—यह तुम्हें करे जाता है। सावधान रहना !

रसोईपरके भीतरसे प्याचीने गरककर कहा—तू तो बड़ा दीसप्यारलो है न ! जा जो काने का बना लेना।

हीरू बोल कर सीधा राहपुर नामके गाँवमें पहुँचा। इस गाँवमें कुछ गृहस्थ मुखकमान रहते थे। मीररममें वे ताजिने निफाकते उनके आगे बढ़ी-बढ़ी



काठिनो सेकर बहते और अपनी कसरत तथा कसरत दिखाते थे। काठिनोनों से तेज किया था और उनको गाँवों में मूलसूरीके लिए पीतकनी फुलियाँ बड़ी थी। इसीसे बहुत छोटा यह समझते थे कि इस जंगलमें उनको बचकर बाटी बधनेका कोई नहीं है। ऐसा कोई काम नहीं मिलको वे न कर सकते हैं। कुछ पुकिसेके मयसे ही पं धान्त रहते हैं।

हीराबाबने कटीक मिर्चोंके पास जाकर कहा—ये दो रुपये पशगी को। एक तुम्हारा और एक तुम्हारे भाइय है। काम पूरा कर दो, तब और भी इनाम मिलेगा।

दोनों रुपये हाथमें लेकर कटीक मिर्चोंने हँसकर कहा—क्या काम है बाबू।

हीराबाबने कहा—इस देशमें तुम दोनों भाइयोंको कौन नहीं जानता। तुम्हारी बाटीके बारेसे निम्बास खानदानके बाबुओंने कितनी जमींदारीपर अपना कब्जा कर दिया है। तुम बाहो तो क्या नहीं कर सकते हो।

यह मिर्चोंने बाँसका हथारा करके कहा—तुप करो बाबू, मानका बरोगा घुन पावेगा तो फिर हमारी जान नहीं बचेगी। पुकिसेको यह मालूम है कि बीरजमर गाँवपर हम दोनों भाइयोंने ही बाटीके जोरसे निम्बास बाबूका दखल करना है। लेकिन कोई हमें मौकेपर पहचान नहीं सका, इसीसे उस दफा हम काम कर गये।

हीराबाबने वह भाइयके साथ कहा—कोई पहचान सका ?

कटीकन कहा—कोई पहचानता कैसे। सिरपर बहुत बड़ा पम्पक रंधा था गाँवोंपर पम्पके ऊपर से, माथेपर बड़ा-सा सेंबुरका टीका था, हाथमें छ हाथकी बाटी थी। दोनोंने समझा कि हिन्दुओंकी अमराजपुरीसे अमरुत ही आकर हाकिम हो गये हैं। पहचानते क्या, सब अपनी जान लेकर न जाने कहीं भागकर छिप रहे।

हीराबाबने उसका हाथ पकड़ लिया। कहा—देखा ही काम एक बार और तुम्हें करना होगा मिर्चों। मेरे बाबा तो फिर भी मेरा पोड़ा-बहुत हिस्सा इनको बेनार हो सकते हैं लेकिन चाची हरामबादी ऐसी दीवान है कि एक पूरी छड़ीमें भी हाथ नहीं लगाने देना चाहती। वही पम्पक की गन्धला वही सेंबुरका टीका लगाकर, हाथमें कभी बाटी लेकर एक बड़े बाबाके आम्नमें

आकर लड़ ही आओ और वही झुकुझोफी धमकी-मुझकी दिखानो। वर, मैं फिर देख दूँगा कि कैसे पया होता है। मेरा जो कुछ पावना है, सब बखूब कर दूँगा। टीक घाम हनेके पहले, छटपुटेमें लखो वर, काम फते हो आवगा।

कटीफ मिर्चो राखी हो गय। यह धय हो गया कि कटीफ और महमूद दोनों माइ, यही राज-पाशाक फलनकर, मेरा बनाकर आज ही रिया जमानके पहले चाचाके घर जा बसकेंगे। उनके पीछे हीराकाक रहेगा।

एकादशीका दिन था। दिनभरके अतई बाद हीराकाकड़ी चाची काइवाने अपने पतिको लिखानेके लिए अँगनसे मिछे हुए पचूतेपर आसन बिछावा और याकी आकर सामने रखी। मुसवीं चाचा फकाहार करनेके लिए बैठे। कायरण फल कंदमूक और वृष, यही फलहारका सामान था। मुसवीं बाबी-मकृतिके ये, इसलिये बसका आहार करनेसे उनकी रक्किस्त लराव हो जानेका दर था। परकरके पात्रमें डाम (कच्चे नारियल) का पानी रखा था। उसे पीनेके लिए चाचाने जैसे वह पात्र उठाया जैसे ही—ठीक उसी समय—हरबाब ठंढकर कटीफ और महमूद, दोनों मार सामने लड़ हो गये। वही सिरपर बड़ी ली फाड़ो वही म्यानक गकपुआ वही मायेमरमे लिपा हुआ सैबुरका डीठा, आर हाथमें वही छः हाथकी ऊँची मोटी आटी। चाचाके हाथसे परकरका पात्र धमसे बरखीपर गिर पड़ा। जगदवा औरसे चीख पड़ी—अरे मेइल्लेबाबो, चौड़ा चौड़ा आधा—कड़के पकड़नेवाले आये हैं—बच्चोंके चोर—बच्चोंके चोर!

सामनेके छोटे-से मंडानमें रोब माइल्लेके, गोंबके छोटे-छोटे कच्चे कमा होकर लख-लखके लेक लखतें वर आज भी लेक रहे थे। ये भी निद्राते हुए इपर ठकर मागे—कड़के पकड़नेवाले आये हैं! बच्चोंके चोर आये हैं! कड़कोको पकड़े लिमे था रहे हैं।

पर कतानेके लिए हीराकाक भी कटीफ और महमूदके साथ आवा था। आर हरबाबकी आइमें लिफा हुआ था। उसने यह रंग देखा तो पीभी आबाकत कहा—देखत क्या हो मिया आन छेकर मागे। मोइल्लेके जेय मेरकर पकड़ देंगे छे फिर आन कवाना कठिन हो जानगा।

रटना करकर यह वहाँसे चम्पत हो गया।

छटीक मियाँने शहरकी ओर कोह सनर चाहे न मुनी हो छकिन बर्योक  
तड़ जानेका हुल्लाह—गायब किये जानेकी अपवाह उसके कानोंतक मी पहुँच  
गुझे थे। पल भरमें ही उसकी समझमें आ गया कि इस अपरिचित अनजानी  
आहमें, ऐसे मेसमें, लासकर सँतुरका अम्मा-आँदा दीका लगाये हुए वे अगर  
पकड़ दिने बचे तो उनकी एक मी बड़ी साबुत नहीं रहेगी।

यह ख्याल आते ही दोनों माह जान लेकर भाग। लेकिन भावनेसे क्या  
हो सकता था ! यह पक्ष्यानी नहीं थी। दिनका उदयेस मी बुझ गया था—  
संझाका बीभेस नुँह बाये उसे खीझता बसा था रहा था। चारों ओर बहुलस  
बनोंकी सिन्धी हुए एक ही पुकार सुन पड़ रही थी—पकड़ थे ! पकड़ का !  
घर बाका साँझका !

अब माह महमूद किबर भागा कुछ फटा नहीं लेकिन बड़े माह छटीक  
का डेराने चारों ओरसे घेर लिया। वह शायद पक्षानेके लिए काँटोंका जंगल  
जिंदा हुआ एक गढ़ैयामें फँस पड़ा। इसके बाद सब लोग गढ़ैयाके किनार  
तह हाँकर उसे ठाक-ठाकर हट-हँकड़ मारने लगे। छटीक जब सिर निकालता  
था तब सिरफ़ ठसा पत्ता था। वह फिर पानीमें सिर कर देता था। फिर जब  
जबकि सिर उठाता था तभी डेका भाकर आता था।

छटीक मियाँ इस तरह हट आकर और पानी पीकर अकमल हो गया।  
पर किन्तु ही हाथ जोड़कर कहना चाहता था कि वह बड़का पकड़नेवाला  
घोर नहीं है, बड़क पकड़ने नहीं आया है, उतना ही छोटेका श्रेव और  
कन्दा कट्टा काटा था। वे कहते थे कि वा फिर वह यक्षपुष्ट क्यों लगाने है !  
पर पनाइ क्यों सोँध है ! उसके मुँह भरमें यह सँतुर कहाँसे आया !

पगल उसकी छुल गयी थी गलपल्ल मी छुलकर एक तरफ़ झूझ रहा  
था माधेका सँतुर मी झुलकर मुँहभरमें फैल गया था।

छटीक मियाँ क्या बेक्रियत होता और उसकी सुनता ही अन ?

दूसी बीचमें कुछ अधिक उत्साही आता पानीमें उतरकर छटीकको किनारपर  
पधँट बाये। वह रा-रो-कर केवल यही कह रहा था कि वह छटीक मियाँ है  
अब दूसरा उसका माह महमूद मियाँ है। वे बड़के पकड़नेवाले नहीं हैं—ब  
कन्दाक घोर नहीं है।

इसी समय मैं उसी राहसे निकला—उपर एक कामसे गया था। हुस्वर मुनकर उस गढ़वाके किनारे गया। मुझे देखकर वह उत्तेजित भीड़ फिर एक बार आपसे बाहर हो गई। सभी एक स्वरसे कहने लगे—उन्होंने एक बप्पोंका पोर पकड़ा है।

बेचारे कटीस मियाँकी दशा देखकर मेरी धीरजम भौंख आ प्ये। उसमें सोझनेकी भी ताब नहीं थी। गळपट्टा पगड़ी, सेंदुर और रुधिरन मिळकर उसकी अजीब सूरत बना दी थी। वह केवल उसको हाथ जोड़ता था और रोता था।

मैंने बोझोंसे पूछा—“सुन किसीका बड़का पुराया है? किसन अपना बड़का पुरानेकी नाकिल की है?”

उन बोझोंने कहा—यह कौन जाने!

मैंने कहा—अच्छा वह बड़का कहाँ है, जिसे इसने पकड़ा था?

बोझ बोले—यह भी हम नहीं जानते।

मैंने कहा—तो फिर इसे तुम इस तरह मारत क्यों हो?

उनमेंसे एक आदमी को शायद आधिक बुद्धि रहता था, बोझ—जान पड़ता है, एतको इसने बड़केको गढ़वाके भीतर कीचकम गाड़ रखा है।

बूझ बोला—होँ होँ बहोसे भेक पाकर निकल छ जायगा। बकि इनेके छिप पुलके खेनेके नीचे गाड़ बगा।

मैंने कहा—अप सोचो ठा, मेरे प्राणीकी कहीं बलि की जाती है?

उन्होंने कहा—मरा क्यों होगा जीता होगा।

मैंने कहा—बड़केको दकदकमें गाड़ देनस वह मका कमी अेता रह सकता है?

मेरी बात और मुक्ति तब उनमेंसे बहुतोंको ठीक जान पड़ी। पहले आंग बोसमें थे इसलिये वह सोचनेका अवसर ही किसीको नहीं मिला।

मैंने कहा—उस छोड़ दो। फिर उस आदमीसे पूछा—कटीस मियाँ, मामका क्या है सच-सच बताओ।

अब समय पाकर कटीसने रोते-रोते सब सच्चा हाल बताया। हीराधकके बाबा मुसली और उनकी स्त्रीके साथ किसीकी सहानुभूति नहीं थी। मुनकर

कुछ लोगोंको छटीफ मियाँपर तरस भी आया ।

मैंने कहा—छटीफ मियाँ अब अपने घर जाओ । अब कमी ऐसा काम न करना ।

उसने जान पकड़े नाक रगड़ी । फिर कहा—बुराकी कसम बाबूजी अब ऐसा काम कभी नहीं करूँगा ।—लेकिन मेरा माई कहाँ गया ?

मैंने कहा—माईकी चिन्ता पर ध्यान करना छटीफ मियाँ । अभी तो यही गनीमत समझो कि तुम्हारी अपनी जान बच गई ।

छटीफ डेंगाड़ाटा बड़बड़ाता किठी तरह अपने घर गया ।

बहुत घस गये फिर एक बार पासके दूसरे मोहल्लेमें—घोषाक-टोबामें—बरका हुल्का और और गुल मुन पड़ा । घोषाक बाबूजी बरकी नौकरानी गोषाकमें गऊकी सानी करनेके लिए गई थी । उसने गऊके लिए कहीं फटकेसे इरी बुवारका गड्डा फसीदा तो वह उससे सौधा नहीं गया । एकाएक उसके मीसरसे एक बिकट सुरतका आदमी निकला और उसने कुर्तीसे छुककर नौकरानीकी दोनों पैर पकड़ लिये ।

नौकरानी कितना ही विस्मयी है कि भरे चौको चौको भूत मुझे सामे डेठा है, अपना ही भूत उसका मुँह हाथसे बन्द कर कहता है—मैया, विस्मय नहीं उस बच्चा—मैं भूत-प्रेत नहीं हूँ, मैं आदमी हूँ ।

नौकरानीकी विस्मयहट मुनकर बरके माझिक घोषाक बाबू हाथम काट्टन और साधमें नौकर-बाकर लेकर गोषाकमें चौक आये ।

इसके पक्षे जो घटना हो चुकी थी वह गोषाके सब लोग मुन चुके थे । इसलिए वह माईकी-सी दुर्गति कादे माईकी नहीं हुए । उसने खबरमें ही विचार कर लिया कि छटीफका माई मरमूद है मृत नहीं ।

घोषाक बाबू उस छोड़ दिया, केवल उसकी वह पके बाँझकी खूबसूरत बटी छीन कर कहा—छोट मियाँ तुम्हें भिन्दगीभर याद रहेगा इसीलिए यह राने डेठा हूँ । मुँहका यह सब रंग-रंग जो जाओ और चुपकेसे घर चले जाओ ।

एकदम मानकर, कुतस होकर मैकरी सदास करके मरमूद बरसे पक दिया ।

यह को मनगढ़न्त कहानी नहीं है, सचमुच हमारे गाँवमें हुए एक सच घटना है।

### ३—बलिदानकी विभीषिका

उसका पुकारनाका नाम था बल्लू। उसका अम्मा-सा एक नाम जरूर था, लेकिन मुझे याद नहीं है। आप धावद आनते होंगे कि बल्लू धावदका एक बर्ष प्रिय था प्यारा भी है। मायूस नहीं उसका यह नाथ किउने रत्ता था मों-याफने या भीर किमीने लेकिन यह सच है कि यह सबको प्यारा था। इतना सार्थक नाम बहुत कम लोगोंका होता है।

स्कूलकी पढ़ाई समाप्त करके हम लोग कानिबमें मर्ती हुए। वह मेरा घर पाठी था। बल्लूने कहा—मैं रोक्कापर करूँगा। पढ़ना छोड़कर, मर्ते इस काममें मोंगकर उसने ठेकेदारी शुरू कर दी। हम साथियोंने कहा—बल्लू तुम्हारी पूँजी तो सिर्फ़ इस रुपये है इस पूँजीसे क्या होगा ?

उसने हँसकर कहा—भीर किउना पारिषा यही बहुत है।

धभी उस प्यार करते थे, यह पक्के ही कहा था चुका है। उसे काम मिल गया। इसके बाद कानिब आते समय प्रायः ही मैं देखता था कि सिरपर छतरी लगाए कुछ मन्बूरोंसे सबकधी मरम्मतके छोटे-मोटे काम बल्लू कर रहा है। हम लोगोंको देखकर हँसकर रिजगी करता था—आधो आधो रौंको—जहाँ तो धभी रजिस्टरमें गैरहाजिरी पड़ आसयी।

हम लोग जब भीर आते थे, सब बर्नासुकर स्कूलमें पढ़ते थे, तब वह हम सबका मिस्त्री था। उसके किताबोंके बेधेमें हमेशा एक इयायबस्तेकी मुंगरी नालूनगिरी, एक टूटी धुनी छंद करनेके लिए एक नुकीली कील और एक धोड़ेका नाक—ये सब औजार पड़ रहते थे। क्या जाने कहाँसे वह सब सामान उसने जमा किया था, लेकिन ऐसा कोई काम नहीं था जिसे वह इन औजारोंसे कर न सकता हो। स्कूल-भरके बच्चोंके दूटे छातोंकी मरम्मत करना, स्टेडका प्रेम बढ़ना संझमें पड़े हुए कपड़ेकी सिध्दाई कर देना इत्यादि न जाने क्या-क्या और किउने काम वह कर देता था। वह कभी किसी कायदे लिए ना' नहीं करता था। और काम भी बड़ी सफ़ाई और सूरसूरतीके साथ करता था। एक

वसपनकी कहानियाँ १२१

साथपर साथ भीतने लगे । हम सब स्थान हुए । विमानास्त्रिककी कसरतमें कोई कन्स्ट्रुई बराबर नहीं था । उसकी देखने एक जैसे अनाचार्य या वैद्य ही उसमें साहसकी भी सोच नहीं थी । जर किसी करते हैं, यह छायाद यह अन्तर्ही न था । समीची सहायताके लिए वह तैयार रहता था समीची किराणियों वह सबके आगे साथ देनेके लिए उपस्थित होता था ।  
उसमें केवल एक बहुत बड़ा दोष था । वह किसी प्रकार के अन्तर्ही न था ।

उतमें केवल एक बहुत सड़ा दोष था। किसीको उरानेका मौका मिलते ही वह किसी तरह अपनेको संभाल नहीं पाता था। इस मामलेमें बड़े-बड़े गुरुजन-बड़-बूढ़े उसके लिए बराबर थे। हम कोइ सोच नहीं पाते थे कि उराने ऐसे अद्भुत उपाय पक मरमें ही उसे कैसे दृष्ट व्यक्त थे। शी-एक ऐसी पटनाएँ मुनिए।

मोहस्वमें मन्नाहर पटनीके धर्म में

बहिरानका

मोरेस्मो मनाहर चटर्जीके घरमें यदाकायीकी पूजा थी। आभी रातको बटिवानका समय जब आया तो देखा गया कि बटि देनेवाला छद्म गैरहाजिर है। लोग उसे अपनेके स्थिर चौड़े लेकिन आकर देखा वह पेटकी पीड़ासे बेहोश था लड़क रहा है।

मोर्गोने डॉक्टर को जब यह खबर दी तो वह तुरंत आया।

गोर्गेने झोटकर जब यह लखर सी तो सब भोग तिरफर हाथ रखकर बैठ गये। अब क्या हो ! क्या किया अब ! इतनी रातको घातक (यदि बनेवाला) कहाँ मिलेगा ! वह तो कहा अनर्थ हुआ ! देवीकी पूजा अर्घ, खण्डित हुई जा रही है। इतनमें एक आदमी कह उठा—~~क्या~~ बहरेकी यदि दे सकता है— उसकी शापन इतनी ताकत है कि एक ही शायमें बहरेका सिर काट दे। अनेक बहरे इस तरह वह आठ हुआ है।

अब भोग कल्पके पास बोले गये। कल्पने

कहा आर मुनकर भोग

अपने बगैरे कल्पित हुआ है।  
 अपने बगैरे कल्पित हुआ है।  
 अपने बगैरे कल्पित हुआ है।

कम्बुने कहा—सर्वेदास हो तो हो। मुट्पनम यह काम मैंने किया था लेकिन अब नहीं करूँगा।

जो बुझाने आये थे, वे फिर पीटने लगे। बस और १०-१५ मिनट तक मुहूर्त है। मुहूर्त निकल जानेपर सब भरजस्य हो आबगा पूरा पूरी न हो सकेगी। सब म्हाकाधीके कोपसे कोई न बचेगा।

कम्बुके बापले बापले जानेकी आवाज थी। बोले—य लोका काच्यार हाकर ही आये हैं ॥ जना कन्याय दामा। तुम जाओ।

इस आवाजको न मानता कम्बुके बूतेकी बात नहीं थी।

कम्बुका देखकर पठकी म्हाकाधीकी चिन्ता दूर हुई। समय यदिक नहीं था। चरमद बकरेकी देखीके नामपर उत्सर्ग करके उसके माथेमें सेतुर लगाया गया। गलेमें बाण फुटोकी आवाज आती गई। इसके बाद मिराकर उसका गला बलिदानके काठके मीठर रखा गया। घर मरके सब लोग ओरसे 'मैं' 'मैं' कहकर चिल्लाने और अपनी मूर्खता प्रचण्ड प्रदर्शन करने लगे। उस क्रोध हल्ले उस सेवारे विषय जीवन मिमिमाना—कबल अन्तिम आर्षनाद न जान कहीं हुए गया। कम्बुके हाथका लौड़ा पक-मरम ही ऊपर उठ और पूरी टाकटल नीचे गिरा। छात्र ही यहाँके बकरेके कटे हुए कम्बुसे रक्तका प्रसार हुए और उसने बहोकी बरतीकी आकृति कर दिया। कम्बु जबमर अपनी आँखें नहीं दे पा।

धीरे धीरे हाक-हाक और हाँक-यदिपाठका मित्रा हुआ धन्य बीम पड़ा। वृत्त जो बकरा पास ही लड़ा करि रहा था उसके माथेपर सेतुरका टीका लगाया गया। गलेमें बाण फुटोकी आवाज पहिनाह गई। फिर उसी बाँके काठल उसकी गदन रखी गई। उसका भी पैदा ही चीन हाँसे देखाते हुए, माथोंकी भील मेंगते हुए मिमिमान और चिल्लानेका कण्ठ शब्द मुन पड़ा। बहुतसे कम्बुकी 'मैं' 'मैं' कहकर आवाजें गीति मूर्ख प्रकट करनेकी भारी प्रहार गूँज उठी। फिर कम्बुके हाथका वह रक्तसे रंगा लौड़ा पकक धारते ही उठा और नीचे गिरा। फलतः दगिर वो दुकद होकर पृथ्वीपर कुछ देर छर पड़ा। हाथ-पैर पटककर क्या कामें किससे आकिते बार परिवार करके सेपाय स्थिर हो गया। उसके कटे हुए गलेसे निकली हुई रक्तकी चारुने उस जगहकी



मरतीकी आँर मैं बाल कर बिना ।

राधा बजनेवाले पागलकी तरह जोरसे दोल धँट रहे थे । भौमानमें भीड़  
फिरे हुए बहुतसे लोग बहुत तरहसे कोआहवाँ कर रहे थे । सामनेके बरामदेमें  
ऊनी आसनपर बैठे हुए मनोहर पटवर्षी जोखें मूँदकर इशारेका नाम आ रहे  
थे । एकएक कम्बू एक मयंकुंर हुंकार कर उठ । सब धीरे-गुनगुन मम गया ।  
सब लोग विस्मयसे लय हो गये । यह क्या ! कम्बूकी असम्मम रूपसे पैड़ी हुए  
बौल्लेकी शनौ पुतलियों इधर उधर घूम रही थीं । उसने निस्प्रणकर जोरसे  
कहा—बौर पोंडा (बकरा) कहाँ है ?

परके किसी आदमीने इरते इरते जवाब दिया—बौर पोंडा तो नहीं है ।  
हमारे यहाँ सिर्फ दो बकरी ही जाती हैं ?

कम्बू अपने हाथके मूनसे सने हुए नौकी सिरके ऊपर रो-लीन दफ़ घुमा  
कर परब उठा—पोंडा नहीं है ! यह न होमा । मरे ऊपर लून सवार है ।  
पोंडा बामो, नहीं तो आल मैं जिसे खडंगा उलीका एकदकर मनुष्य की  
बकि दूया ।

इसके बाद “आ धौ, जय महाकासी” कहकर वह छत्रोंय आरकर, उछल-  
कर, बकिछापके इत छास उठ धोरपर पहुँच गया । उसके हाथका खौड़ा उठ  
कमल रुन्नादेके साथ तिरके ऊपर घूम रहा था ।

उठ कमल आ कुछ हुआ उसका वर्णन नहीं किया जा सकता । सभी एक  
धाय दबादेकी आँर मांग, कही कम्बू बकिछानकी लिए पकड़ न ले । मायने की  
कापिधमें वह बज्र-मुड़ी आँर रेक-पक हुए कि वही हस्य उर्गस्फुट हो गया जो  
धिनके मर्चोंके हाथों रखका बक मरमक करनेपर कमी हुआ होता । कोइ मिर  
कर दूर फुड़क गया कोइ पुटनीके बक रेंगकर किसीके पैरोंके मीतर सिर छिन्नने-  
की कोपिध करन लगा, किसीका गया किसीकी कालमें ऐसा बदा कि उठका  
हम पुटने लगा । एक आदमी इन्नेको पंदरकर आमानेकी कोपिध करत समय  
दूरने कल आने मिर पड़ा उसके बाट टूट गये । लेकिन यह हाक फिन्ट रो  
मिन्ट ही रहा । उसके बाद सारा बगियन खाली हो गया ।

कम्बू मरब उठा—मनाहर पटवर्षी कहाँ हैं ? पुरोहित कहाँ गया ?

पुरोहित महाधन रोगी आदमी थे, इत मङ्गलमें भीका पकर पड़े ही बेबी-

की प्रतिमाकी आड़में जाकर छिप गये थे। गुरुदेव कुशासनपर बैठ हुआपाठ कर रहे थे। चरफट ठठकर ठाकुरद्वारेकी राखनकी एक मोटे लकड़ीकी आड़में व्यंकर छिप रहे। डेकिन मनोहर बाबू बहुत मोटे थे इसलिये उनके लिये इधर-उधर मगना बड़ा कठिन था। कम्बलने आगे बढ़कर बोले हाथसे उनके एक हाथ फसकर पकड़ लिया बार कहा—बबो, बचिवाइपर अपना गला रलो।

एक तो कम्बलकी बल्लकी तरह कसी मुड़ी उसपर बाहिन हाथमें उसके लोंका। डरके मारे चटखीके प्राण सूख गये। खोसि गलेसे वह बिनती करने लगा—कम्बल ! बेय ! क्या घान्त होकर रोखो मैं पोंछ नहीं हूँ, आवसी हूँ। मैं नातेमे तुम्हाय बाचा होता हूँ मैसा। तुम्हार बाप मेरे छोटे भाईकी तरह है।

कम्बलने कहा—मैं वह कुछ नहीं जानता। मुझपर लूत सवार है। बबो, मैं तुम्हायी बलि दूँगा माताका आवेध है।

चटखी म्हासय बीरसे रो उठे—ना बेय माताका आवेध नहीं है, कर्म नहीं है। माता तो कम्बल-कमनी—सबकी माता हैं।

कम्बलने कहा—कम्बलकी माता है ! यह श्रान तुमको है ! और पाठ बलि दांग ! फिर मुझे पाठ काटनेके लिये तुमकोतो ! बबो !

चटखीन रोठ-रोठ कहा—कमी नहीं मैसा अब कमी बलि नहीं दूँगा। मैं माताके अग्रे तीन बार कहकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि आकसे मेरे घरमें बचिवाइन बन्द हो गया।

कम्बलने कहा—ठीक करते हो न !

चटखी बोले—ठीक करता हूँ मैसा, निश्चुख ठीक—अब कभी नहीं। मरा हाथ छाड़ दो बेय मैं छींचकी जाऊँगा।

कम्बलने हाथ छोड़कर कहा—बाबो, तुमको छोड़ देता हूँ। डेकिन पुणेविव किपर गया ! और गुरुदेव ! वह कहाँ है !

यह कहकर वह फिर एक बार हुंकार करके सड्योस भरकर ठाकुरद्वारेकी राखनकी ओर जैसे आगे बढ़ा वैस ही प्रदिमाके पीछेसे और लकड़ीकी आड़से दो बुरे-बुरे कम्बोकी मयल धात रोनेकी आवाज सुनाई पड़ी। महीन और माटे गलेके ये दोनों शब्द ऐसे अत्युत्त और हिलानवाले थे कि कम्बल अपनेको समझ न सका—हा हा हा करके बीरसे बैठते हुए उसने अपने हाथका लोंका फेंक

रिवा और एक रौब लगाकर धरके बाहर निकल गया।

उन पिछीको वह समझानेको बाको नहीं रहा कि वह स्पून सवार होने की शत विद्युत्तुल्य श्रुती थी—सब उसकी पाकाकी थी। बसूरीतानी करके सबतक लको रखा था। फौज मिनटके भीतर ही सब भागे हुए बोग फिर आकर बस्य हो गये।

देवीकी पूजा सब मी नाकी थी। उसमें बसेठ बिस पड़ गया था। उस मरी घोर-गुलके मीतर चटर्नी महालय सबके सामने बार-बार प्रतिष्ठा करने बये—इत बदेवत छोडकेका कल सबरे ही अगर उसके बाफते कहकर पचास को न बस्यार्क तो मेरा नाम मनोहर चटर्नी नहीं।

बेफेन बसूरीको बूते नहीं खाने बड़। सबरे उठकर ही वह परसे देवा चस्य हुआ कि सात-आठ दिवसनक उसका कुल पला ही नहीं बसा। सात आठ दिनके बाद एक दिन बेफेरेमें छिपकर मनोहर चटर्नीके परमें सुतकर बसूरीने उनके पैर छूकर बस्य मीम की बिल्लि इत दफर वह पिछके कोपसं सुतकर पा गया।

सैर, वह जाहे जो हो, देवताके सामने चटर्नीने जो बलिदान न करनेकी कसम खाई थी उसे उन्होंने नहीं तोड़ा। उनके परसे काबी-पूजाका बलिदान उठ गया।

## ४—पचास साल पहले

वह कुयेका किस्सा है। इन लोगोकी बातें सुनी तो बहुतेने हैं और मुस जैसे जो बूते हैं, उनमेंसे बहुतेने देसी मी हैं। पचास-साठ साल अखेटक पश्चिम बंगालमें—अफस हुगली बर्दवान आदि जिल्लोंमें—इन लोगोका उपरब बहुत अधिक था।

उसके मी पाये, अर्थात् राबी-नानीके मुँहसे सुना है कि लोगोके पकन-फिरनेकी कोई मी राह ना सबक ऐसी न थी, बिलपर घामके बाद पकना सजेते खादी हो। वे हुए मुठरे जैसे जोमी वे जैसे ही निर्दबी विपुल मी। एक बँककर सबके बिनारे पेड़ोंके छंछमें, साह-साल-कमें, छिने रहते थे। इनके एक हाथमें बड़ी-सी खादी और दूसरे हाथमें, कप्ये बँसके मारी और छीककर मुकौले बसावे गये छोटे-छोटे टुकड़ रहते थे। इन टुकड़ोंको 'पावड़ा' कहते थे।

नगररस्ती पर खेप खाया।

मेरे रोने बोलनेसे मेरी बारी तो कुछ नरम पड़ी, मगर नयन मुझ साथ थे बनेके छिए फिरी तरह तैयार नहीं हुआ। बोझ—मोँची बने-बानेमें बगमग आठ बोलकी ही हो रहा है, पौवनी रात होनेके कारण भयेमें छे ब्य सकता था। लेकिन रास्ता ठीक नहीं है—नसरत है। अगर मैं समयसे न छोड़ सका तो बाप ही क्या रहे, अकेले गडको सँभालूँगा या बड़केकी सँभालूँगा या अपने को सँभालूँगा ?

रास्तेका मय क्या है, वह इस तरफके सभी खेप जानते हैं। बारीजी एकदम 'नो' कर बैठी। मुझसे बोली—तू कभी नहीं जा सकता। अगर पोरीसे माग जावया तो तेरे भालरको चिड़ी छिन्नकर क्या दूँगी। वह कमठे कम पचास बेंत मारेंगे।

ब्यापार होकर दूसरी तरकीब निकाली। नवनके चले बानेपर मैं पोसरमें नहाने बानेका बहाना करके छरीरमें तक मस्रवा हुआ बेंगोलन कंधेपर आकर परचे निकल पड़ा। नदीके किनारे-किनारे बन-आक और आब-बडहके बागी के मीतर होकर दो-दोई मीटरक बीजवा हुआ चका गया। बिस्त आकर हमारे यौबका कच्चा रास्ता प्राइट्रक रोडकी पक्की सड़कसे आकर मिला था, उसी आइ आकर मैं खड़ा हुआ और बगमग इस भिनरके बाद ही मुझ नयन आठा दिखाई दिया।

मुझ देखकर पड़े तो वह बहुत बका-बका उसके बाद मैं फिर तरह बहाना करके आया हूँ—वह झुनकर हँस पड़ा। उसने कहा—अच्छन बको देवता जो भाम्भमें है, बही होया। इतनी दूर आकर बस तो छोड़ नहीं सकता।

नयनने ससर्गावकी एक वृक्षानसे सीया और क्ताओ लरीरकर मेरी पोतीके लैजमें शौच दिने मेरे सानके छिए। पक्को-चक्को बगमग रोसरको हम दोनों बटतपुरमें नयनकी बुझाई पर पहुँचे। नयनकी हुआ गरीब नहीं थी साने पइननेका कोई कष्ट नहीं था।

परके नीचे ही झुन्टी नामकी मरी थी, नदी छोरी थी, पर पानी इतना था कि ठठमें प्जार-भाटा आवा करता था। मैं नदीमें जाकर नहा आया। बुझाकी बनी बहू केकके पत्तेमें पिउई गुड़, पूर और बेजे, फव्वारका साखन परोस गई।

मोहनके सार नयनकी बुझाने कहा—बच्चा पार-पोंच कोस पैरल चढ़कर भागा है। खमी फिर खोदकर खाना होगा। अब कुछ देर खेदकर आराम करनी मैरा, भूप कम होनेपर तीसरे पहर ज्यना।

बुभाका छोटा बड़का मेरी चमाइरा पूरी करने—मरे किए बोंसकी कम-बिनाई करनेके लिए गया।

नयन और मैं दोनों ही पैरल चढ़कर इतने थक गये थे कि ला गये। हमारी आँख सब कुछी अब पार बज गय थे। दिनकी और देखकर नयन कुछ चिन्तित-सा देख पड़ा, लेकिन मुँहसे उसने कुछ नहीं कहा। इस-पन्नाह मिनटमें ही हम दोनों बोंस चक दिये। चकले समय नयन पैर दूकर बुभाका पोंच अपने देने लगा लेकिन उन्होंने बिने नहीं खींच दिये। बोलीं—अपने बच्चोंको इन स्मॉली मिखाई छे देना।

मेरे कपेर बोंसकी कमबिनाईका गढ़ा था। नयनके बोंपे हाथमें गजकी रखी और दाहिने हाथमें खमी बोंसकी छठी थी। लेकिन गजको लेकर तेब कम नहीं था सकता। वो कोस भी न चक पाय व कि घाय हो गई और बाकाघमें पन्नाह दिखाई दिया। रास्तेके दोनों तरफ बड़-बड़े पीकल बगल और पकड़के पेड़ थे, जो ऊपर आकर आपसमें ऐसे मिल गये थे कि एहमें पना अँधेरा छग गया था। तिक जगह जगह पत्तोंकी पोंकीते बनकर जगह हुई खीरनीकर हकका प्रकाश लड़कके ऊपर आकर पड़ रहा था।

नयनने कहा—मैरा तुम मेरी राह तरफ आकर अपने बोंपे हाथमें गजकी रखी पकड़ को। मैं तुम्हारे दाहिने खूँया।

मैंने कहा—क्यों नयन दादा!

नयनने कहा—कुछ नहीं, यों ही। बाबा, पकड़ें।

मैं लकड़ होनेपर भी समझ गया कि नयनकी आवाजमें पन्नाहट मरी है।

धीरे-धीरे पनकी छड़क छोड़कर हम कच्ची राहमें पहुँच गये। आसपासका जंगल, झाड़-झंसाड़ और भी पना हो आया। बहुतसे घुघने और बड़े-बड़े पकड़के पेड़ोंकी पोंतेने ऊपर छिसे-छिर मिड़ाकर, पने पत्तोंका पर्दा बाककर, भीतर छिपक भी पोंक मही रखी थी, जिससे होकर बड़माका प्रकाश लकड़क पहुँच पाया। संध्याके समय किछबोंके जगदी हली

फगुओंको पर होंक से गये थे। फगुओंके छुरोंसे उड़ी हुई धूँध अब भी नाक और मुँहमें मरी जा रही थी।

इसी समय सामने कमरा ५०-५१ हाथके घससेपर किचीकी गन्ना धड़कर निकली हुई चीख सुनाई पड़ी—बाप रे! मार खाऊ रे! भरे कोरू बचाओ! बचाओ! साथ ही साथ बगिचों बरसनेका शब्द हुआ। उसके बाद ही साराई का गया।

नवन साराईमें आकर कहा हो गया। रोष—लठम हो गया!

मैंने पूछा—क्या लठम हो गया नवन बाबा?

एक आदमी।—कहकर कुछ देर खड़े खड़े उठने कुछ सोचा उसके बाद कहा—क्यों मैसा हम लोग जा होधियार होकर चले।

गल्ल बाह तरफ, नवन बाबिनी तरफ और मैं दोनोंके बीचमें, इस तरह हम लोग आगे चले।

वचनले सुनता था खा [१], बीच-बीचमें छुट्टेयोंके धिक्कार हुए ओम्होंकी व्यर्थ भी देखी है, इसलिए बाळक होनेपर भी सब समझ गया। “भरे कोरू बचाओ! बचाओ [१] की चीन पुकार उस समय भी मेरे दोनों कानोंमें गूँब रही थी।

मैंने बड़ो-बड़ो कहा—नवन बाबा ने सब तो सामने ही खड़े हैं, हम लोग आगे कैसे? अगर मारे-

नवनने कहा—नहीं मैसा मेरे छूटे नहीं मरेंगे। वे छुट्टे हैं न बराबुर नहीं हो सकते। देखते ही मार लड़ होंगे। बड़ बरपोक होते हैं।

यह, मैं और नवन, तीनों चीरे-चीरे आगे बढ़ने लगे। मयके मारे पैर चौप छे पे, सोंस नहीं से पा खा था ऐसी हाकट थी। छुट्टोंकी छमा और धूँधके मारे अमीतक कुछ भी नहीं देख पड़ा था। फगुह चीख हाथ आगे बढ़ते ही देख पड़ा, हम लोगोंकी आहट पाकर अथवा शायद देखकर पच-छः आदमी रोड़कर एक पाकरके पेड़की आड़में छिप गये।

नवनने एकएक लड़े होकर कहीं मयानक मारी आवाजत बिस्वकर कहा—सबराबार! तुम लोगोंको क्यासे देता हूँ—सौमनका बड़का मी खाय है। अगर पचड़ा मार तो तुममेंसे एकको मी बीता न छोड़ूंगा।

किन्तीने इतका जवाब नहीं दिया। हम लोगोंने और भी कुछ आगे बढ़कर

देखा, राहमें एक आदमी मुँहके बक मिट्टीमें पड़ा है। उसके ऊपर कुछ घोड़ा या बन्दरगाह प्रकाश पड़ रहा था। नवनने छुककर देखा और हाय-हाय कर उठा। उस आदमीकी नाकसे, कानोंसे मुँहसे लून बह रहा था। केवल उसके पैर उस समय भी थर-थर काँप रहे थे। उसके कपड़ेकी मिट्टाकी सोयी वैसी हो चकेस थी, लेकिन उसका बस मिट्टीमें हथर उधर फैल गया था। उसके हाथका एकदारा काठियोंकी चोटसे चूर-चूर होकर अक्षय पड़ा था।

नवन सीधा उठकर कड़ा हो गया। शब्द—अरे पाप्मो, अरे नरफड़े कीहो ! तुम्हें बेकार ही एक भित्तारीके, एक बैलबक, प्राण से जिये ? यह तुम्हें क्या किना ?

नवनका जल्लेख वह ममानक मन्त्र जैसे सहस्र बदनामे मर गया। लेकिन उपरसे कोई बचाव नहीं आया। नवनके इस दुःख और बेदनाका प्रधान कारण वह था कि वह लुर भी एक कहर बेम्बर था। गुरुसे कंटो छे चुका था। उसके यकमें मंटे मोटे दानोंकी तुलसीकी माथ थी नाकसे माथेक कम्पा ठिठक था सारे सरीमें तरा-तराकी छापे कमी थी। उसके परमें एक छेद-छा ठाकुरकाय भी था, जिसमें नैक्य महाप्रमुख पट (चित्र) स्थिति था। हजार बार "ह मंत्र (इतिनाम) जो किना वह पानी नहीं पीता था। कचनमें उसने कठकायमें पड़ी थी। अब अपनी कोमिसे उसने इतनी विश्वास हासिल कर ली है कि आपकी कोपी यकमें बँच केता है। रियेकी रोचनीमें ठाकुरजीकी राजनमें बैठकर वह लख संस्कारके विधायमायद, नृत्तिकार आदि बेम्बर प्रथ नित्य बहुत रात मथेक सुरसे पढ़ता है। सोच वह काता नहीं और उसका इरादा है कि भावे लककर किसी दिन मछली खाना भी छोड़ देगा।

नवनके बैलब होनेका भी एक छोटा-सा इतिहास है। उसकी अवस्था चाहीतके बयाम है, लेकिन जब पनीस-सीस थी तब खड़ीकी एक माम्तेमें पैसरक वह एक बार साकमर हथकाय और केकमें रह आया था। मेरी सारीके एक कुन्ने भाई जिसेके बड़े और नामो लकीक थे। सारीकीने उनके गरिने पैरी करकर और बहुत-सा नन लक करके नवनको पुझा था।

कैसे पुझाया पावे ही वह सीसा नवाहीप (नरिवा) लका मना और

किसी गोसाह म्मारजधे भंग छेकर, सिर मुड़ाकर, गुल्लीकी माथ पानकर गोंवको छोटा । उस दिनसे यह पक्ष और कहर वैष्णव है । नवन कन-उव भाकर मेरी दादीको बखीपर सिर रखकर प्रणाम कर व्यता था । यह ब्राह्मणकी विष्वा थी नवनको झूनेका अभिकार न था। इसलिये वह किसी भी पक्षका पत्ता छेकर दादीके पैरोंके पास रख देता था। दादी उसे अपने पैरोंके झोंगूनेसे छू देती थीं नवन उस पक्षको उठाकर माथेसे, गलेसे बराबर लगाकर कहता था—मौजी असीस दीजिये कि अबकी मैं मरकर अपनी आत्माके पर जन्म हूँ जिससे तुम्हारे पैरोंकी धूल अपने हाथसे छेकर माथेमें लगा सकूँ । दादी भी स्नेहपूर्वक हँसकर कहती थी—नवन अबकी तू मेरे आशीर्वादसे ब्राह्मणका जन्म पावेगा ।

नवनकी झँझोमें आँख मर आते । वह कहता—इतनी बड़ी आघात तो नहीं करता मौजी । मेरे पापोंकी कोई हद नहीं है म्मापापी हूँ और यह बात और कोई न जन्म तुम तो अपनी तरह जानती हो ! तुमसे तो मैंने कुछ भी नहीं छिपाया मौजी ।

दादी कहती—तेरे सब पाप मिट गये हैं नवन । तेरे जैसे मरु और मगानात्मक विष्वाठ रखनेवाले आदमी इस संसारमें फिटने हैं । इस राहको तू कभी न छोड़ना तू, तेरी करनी तेरा परबोक बना देगी । उसके लिये कुछ चिन्ता न कर ।

नवन झँझो पीछता-पीछता पक देता । दादी जाते बत कहती थीं—कल आकर यही प्रसाद पाना । देख भूकना नहीं ।

यह सब मैंने कई बार अपनी आलसे देखा है । इसीलिये, जिन वैष्णवोंकी वह भी-जानसे सेवा करता है, उनहीमेंसे एककी इस प्रकार बेहरमीके साथ हत्या हुई देखकर वह अगर इस तरह शोकके मारे आपेसे बाहर और विचलित हो उठे तो इसमें विरम्यकी कोई बात नहीं थी ।

नवनने कहा—बेबाग गरीब वैष्णव मील मौककर भामको पर छोटा कर खाया । उसके पास क्या पानेकी आघातसे पाप्मो, तुमने उसकी हत्या कर दादी ! दो-चार आन पैसे ही तो हाथ लगे होंगे । जी चाहता है, तुम झोंगोंकी भी इसी तरह मार सकें ।



बकरी पेड़की आइसे जवाब आया—दो बार आने दो तो दोन सुयीसे देता है रे ! अपने पुरखाके मायते बकरी तू बच गया ! अपनी वह परम-करमकी वरते खने दे—माग जा माग जा ।

जबकी रात बूरी होनके पछे ही नयन जैह बोरकी तरह मरज ठठा ।  
हंस—इसमन्त्रो ! कापरो ! मार्गूगा में ! तुम्हारे बरते !

इतना कहकर बैठके मेरी राहीसे बिने हुए लीचों अपने निकालकर, उन्हें कनखदाते हुए कहा—देखो, मेरी पाठ इतने सभे हैं । इन्हें न छोड़ना । प्रियत हो तो सब मित्रकर आओ के आओ । लेकिन फिर तुम्हें सावधान किन देता हूँ, मेरे साथ जो वह जायनका बड़का है, इसके संगमें बचन करा भी पाठ पाई तो तुम सबको सदाके लिए हली राहपर मुझ रूंगा तब पर आऊंगा । ऐसका गवकस मैं नयन छाती हूँ, और कोह नहीं । वृत्त हूँ, तुम्हने मेरा बचन मुझ है कभी, या मी ही काटी हाथमें सेकर भित्तारियोंको मारते भूमते हो ! इसमन्त्रो, तुम लिपारों और कुत्तोंसे भी गये बीते हो ।

कैसे पछे जवाब आया था उस पेड़के नीचे लपटाटा उन गया, किसीने चू नहीं की । दो-तीन मित्र हुए रहकर नयनने और भी अधिक बड़ी आर बकरी गज्जी हैकर पुकारा—क्यों रे, आआओ, या वे अपने सेकर ही में पर आऊँ !

फिर कोह जवाब नहीं आया । राहमें दो-तीन पावड़े पड़ हुए थे । नयनने एक-एक करके वे सब उठा बिने । फिर कहा—जबो मैदा, अब पर पछे । उस हो रही है, तुम्हारी राही सायब बिना कर रही होगी । ये सब लिपार-कुत्तोंकी बीजब ही तो हैं, मनुष्यके पास केने पटक सकते हैं । तुम पर एक धीरकी हो कयकी हाथमें सेकर इन्हें मारने आओ, तो मी ये सब लिपार सेर स्तकर भाग जायने मैदा ।

इस बीचमें मरज बर वूर हो गया था और साहस बढ़ गया था । मित्र  
कहा—आऊँ नयन दाया ।

नयन हँस पड़ा । बोला—खने ही मार्ग, और बकरा नहीं । लिपार-कुत्ते भारभीका सामना तो नहीं करते, लेकिन योका पाकर खानेते तो साब नहीं करते । कही हाथ इनका मी है !

हम दोनों भागे बने। नयन बिलकुल चुप था। मैंने बार-बार कह प्रेम किने, पर उसने एकका भी जवाब नहीं दिया। सिर्फ़ हँ या ना कह देता था। कुछ वृत्त आये आकर एक बड़ेसे पेड़की छायामें, खूब घने अन्धकारके बीच वह ठिठककर रुका हो गया। बोध्य—ना मैसा औलोंसे वैष्णवकी हत्था देलकर हत्थारोंको उसकी सभ्य दिने बिना मुससे जाया न आयगा। भ्रातृपण-वैष्णवके प्राण लेनेका कहना मैं इन पाप्मियोंसे करूँगा।

मैंने पूछा—कैसे बरका ओगे नयन दादा ?

वह बोध्य—क्या मैं एक साँकेको भी न फकड़ पाउँगा ! तब हम दोनों मिलकर इसी तरह क्यठीसे पीट-पीटकर उठे भी मार बाँके।

पीटकर मारनेके आनन्दसे मैं बेहद प्रसन्न और उत्साहित हो उठा। जैसे वह भी कोई नई तरहका खेल था मेरी समझमें। इन छुटेयोंके बारेमें मैंने न जाने कितनी तरहकी बातें सुनी थीं। लेकिन अब समझ पड़ा कि सब झूठ है। नयन दादाने आने नहीं दिया। नहीं तो मैं ही पीछा करके एकको फकड़ करता। मैंने कहा—नयन दादा तुम अन्धभी तरह एकको फकड़े खना मैं कहेते ही पीटकर मार बाँकेगा। लेकिन कहीं मेरी छीप दूट गई तो ?

नयनने फिर हँसकर कहा—छीपकी मारसे नहीं मरेगा मैसा यह खोंद खो।

कहकर नयनने एक अन्धका हाथपकड़ा उन बठोरकर अपने हुए पाँवोंमेंसे निकलकर और वह मेरे हाथमें समाकर उसने कहा—गल्लको फकड़कर इसी काद लड़ खो मैसा मैं अभी हो-एकको फकड़े काठा हूँ। लेकिन देखो रोने चिल्लानेकी आवाज सुनकर डरना नहीं।

मैंने कहा—ना डर क्या है। यह खोंद खो मेरे हाथ में है।

तब नयनने बाकी दोनों फकड़े कगलमें बसाये, कड़ी क्यठी चाहन हाथमें की और फिर एका छेड़कर सामियोंके किनारे-किनारे मुट्योंके तक दोनों हाथोंसे सहारे डसी तरह झेंड बना।

छुटेयोंने समझ था कि हम लोग चले गये। इससे निश्चिन्त होकर झेंड भाये थे और ये हुए मितालीकी हँट उठोकर और सोधी काड़कर देख खे थे कि उसकी फल क्या है। एकाएक उनमेंसे एकने देखा कि फल ही एक पेड़की आड़में नयन लहा है। वह डरकर चिल्ला उठा—वहाँ कीन लहा है ?

नयन बोला—मैं नयन छाती हूँ। ऐसे ही लड़ा रह। मागा नहीं कि मर।  
 लेकिन नयनकी बात पूरी होनेके साथ ही मैंने बहुत-से पैरोंकी मागनेकी  
 आहट सुनी और ब्याम्मा उछीके साथ ही बसन्त आर्त खरसे कोई रो उठा और  
 जैसे हुबहुदाकर एक छाड़ीके तमर गिर पड़ा।

नयन विस्मयकर बोला—मैया, एक छाड़ेको पकड़ लिया है, और सब  
 मर गये।

यह सुन खबर पकर मैं वहीं लड़ा होकर उछकने लगा। मैंने खेरसे  
 चिन्ताकर कहा—उसे यहाँ पकड़ आभी नयन बाबा, मैं पीठकर मारूँगा। तुम  
 न मर डालना।

नयनने कहा—नहीं मैया तुम्हीं मारना।

और एक कम्बल छन्द सुन पड़ा जान पड़ता है नयनने उसके अट्टीका  
 हूब माघ इसीसे वह आदमी फिर चिन्ता उठा। वी-एक मिनटके बाद मैंने  
 देखा एक आदमी बैंगड़ाटा, ककड़ाटा हुआ आ रहा है और उसके पीछे  
 नयनबन्ध है।

घर आते ही वह आदमी खेरसे रोता हुआ मेरे पैरोंसे स्पर्श गया। नयनने  
 अट्टीका हूब मारकर उसे उठाकर लड़ा किया। अब उस आदमीको देखकर  
 मैं क्रोध उठा। मुँहमें उसने काष्ठिल पेट रसी थी और उसमें बीच-बीचमें  
 चुनेकी ठिपकी जमी हुई थी। वह जैसा दुबला और कमबोर था, वैसा ही कम्या।  
 तैकड़ों अगदरे पद एक बीमड़ा कपटे था। वह बरगबर रो रहा था।

उसके गालमें एक प्रचंड घण्टा मारकर नयनने कहा—जुप कर हरमज्जदे !  
 ओ मैं पूछूँ उसका लक्ष-लक्ष क्याय दे। तुम के आदमी थे ! उनके नाम और  
 परम पत्र क्या।

पहले तो उस आदमीने कुछ बताना नहीं आया, पर पीठपर और एक  
 अट्टीका हूब पकड़े ही उसने अपने सब ताकियोंके नाम और पत्रे क्या दिये।

नयनने कहा—याद रखना भूलूँगा नहीं। अब क्या, बेचन मिछारीके  
 गिर पड़नेपर तुने अट्टीके फिटने हाथ मारे थे !

उसने कहा—यही पौन बात।

नयनने बौत पीलकर कहा—आजका तैकड़का पत्र ही मरने।

उसी तरह छेद, जिस तरह मैंने उस वैष्णव भिक्षारीको पक़ देखा था ।

धिर मुझसे कहा—मैया इमर बड़ आभा । देखो इस छोटके पाँच-छत हाथोंमें ही इसे ख़तम कर देना चाहिए । देखेंगा तुम्हारे हाथोंमें कितनी ताक़त है ।—और तू साछे देर क्यों कर रहा है ? छेद

इतना कहकर नयनने कान पकड़कर उसे राहमें बिठा दिया और उसके आपसे छेदनेके पहले ही उसकी पीठमें कसकर दो-तीन झटें ऐसी ज़माई कि वह झोंपे मुँह खोद गया ।

तब नयनने मुझसे कहा—हाँ मैया अब मारो तो छाक़र । दो-तीन हाथमें ही काम तमाम हो आसगा तुम्हें अधिक कष्ट नहीं करना पड़ेगा ।

नयन बाबाका स्वर बदल गया, उसका चेहरा ही जैसे बदल गया । वह पहर बेचाकर मेरे रोंगटे लड़ हो गये, मेरे हाथ-पैर झँपने लगे । मैंने स्थाँपे होकर कहा—मुझसे वह काम न हो सकेगा नयन बाबा ।

नयनने कहा—तुमसे न हो सकेगा ? अच्छा तो मैं ही इसे ख़तम करता हूँ । मैंने बिनतीके स्वरमें कहा—ना नयन बाबा, मारो नहीं ।

लेकिन वह आदमी व्य़ात लाकर जो चरती पर खोद गया तो अब तक उसने न हाथ-पैर दिखाये और न मुँहसे ही प्राण बचानेके लिए कुछ कहा ।

मैंने कहा—जबो, इसे बाँधकर बाने पहुँचा दी ।

यह सुनकर नयन जैसे चौंक उठा । बोझ—बानेमें ? पुच्छिके हाथमें ?

मैंने कहा—हाँ । इसने जैसे एक आदमीको मारा है, वैसे ही वे भी इसे प्यसी पर बदावेंगे । जैसी करनी वैसी मानी ।

नयन क्या देर चुप रहा । इसके बाद उस छुट्टेके एक और अट्रीका हुआ मारकर बोझ—अब उठ ।

लेकिन वह दिवा-बुझ भी नहीं । नयनने कहा—साब मर गया क्या ? वह तो बस हड्डियोंका ढोंपा है, साबब दो-तीन दिनसे पैरोंमें अन्नका खाना भी नहीं मया । उसपर क्या या औरोंकी हत्या करने और ख़ूने ।—आ साछे पूर हो । उठकर पर आ ।

मगर वह आदमी उसी तरह पड़ा रहा । तब नयनने झुककर, उसकी नाक पर हाथ रखकर कहा—नहीं, मरा नहीं । पेहोच हो गया है । होच बानेपर

आप ठठकर पर चढ़ा जायगा। चढो नना हम भी पर चढें। बहुत देर हो गई सोचो फिन्ता कर रही होगी।

राहुने पकटे-बकटे नीने कहा—जबे छोड़ क्यों दिना नयन राहा ? पुष्टिसके और देव तो अष्टा हाता ।

नयनने कहा—क्यों नया ?

नीने कहा—क्योंसी हाती। नून करनठ पंछा होती है, यह हमारी पड़नकी दुस्तकमें लिखा है।

नयनने कहा—लिखा है नया ?

नीने कहा—लिखा तो है ही। क्या परमें मे गुमका किताब खानकर दिखा दूँगा।

नयनने किस्मकस मान करके कहा—कहते क्या हो मैया, एक आदमीकी हत्याक बरजेमें एक आद आदमीको मारा जाया है।

नीने कहा—हाँ यही तो। पारी तो उसकी अन्तिम सखा है। हम बरजेमें लूटने पड़ा है।

नयनने बरा ईसकर कहा—अन्तिम सखा अन्तिम रातें तो संसारमें होती नहीं हैं नया।

नीने कहा—क्यों नहीं होती हैं नयन राहा ?

नयनने एकएक कुछ ब्याव नहीं दिया। बरा दर सोचकर कहा—मान पड़ता है, सजी ब्रजा अनपथियोंका पकड़ा नहीं दे सकते, इसीलिए।

क्यों नहीं पकड़ा सकते क्यों मनुष्य यह अन्याय करता है यह सब उस दिन भी मे नहीं मान पाया और आज भी नहीं मान सका। केवल यही बात साबित-सोचते कुछ दूर राह पकड़ने बाद नीने पूछा—अष्टा नयन राहा, वे औरकर फिर भी मनुष्यकी हत्या करेंगे ?

नयनने कहा—नहीं मैया, अब न करेंगे। जबतक मैं जिया हूँ, तबतक वे यह काम फिर नहीं करेंगे।

इस बयावत में अधिक प्रसन्न नहीं हो सका। उन्हें प्योसी होना ही नेते कसमें डोक पा—नुस पसन्द था। नीने कहा—अन्तिम वे लोग हत्या करके बच तो गये—उन्हें सखा तो नहीं दिखी ?

नयन धनमना होकर कुछ सोच रहा था। बोध्य—क्या धर्म, शायद एक दिन सदा मिलेगी। पर बेसे ही छनेत होकर बोध्य—मैं तो इतना धनमना नहीं भैया, तुम्हारी दादीकी धनमनी हैं। तुम जब और बड़े होना तब किसी दिन उनसे पूछना।

लेकिन और बड़े होनेतक मैं सब नहीं कर सका। घरमें पैर रखते ही सब म्मेरेबार हाथ—कैकड अपने हाथ-पैर कोपनेकी छिन्नक धरें बाद लेकर—मैंने अपनी दादीके आगे, आँसू-गुहाय आदि मंथ-प्रमथके मथोक्ति लंकावनके साथ विस्तारसे कह दिया। आदिते अन्ततक हम लोगोंकी लुटेरा-विचित्रकी कथा सुनकर दादीने कैकड एक लोख छोड़ी और मुझे छतरीके पास खींचकर कुछ-सी बैठी थीं।

नयन अन्ततक चुपचाप सुन रहा था। मेरी बात समाप्त होत ही पोंचों स्वयं दादीके पैरोंके पास रखकर उसने कहा—भौंभी, यक तो यों ही मिक मर, तुम्हारे रुपये तुम्हारे ही पास और आये। न किने चुभाने और न किने तुम्हारी मैलमी बहुके माइनोंके बचने चाहें।

दादीने क्या हँसकर कहा—मैंड होनपर मैंलकी बहुते कर हूँगी। लेकिन ये रुपये मैं भी नहीं बैसी नयन। अब इन्ह अपने ठाकुरकीके मोयमें ख्याना। लेकिन एक बात आज मैं तुम्हसे कहती हूँ नयन अभी तू पका बैकब नहीं हो सका।

नयनने कहा—क्यों मोंभी ?

दादीने कहा—पसके बैकब क्या रुपये बचकर लोगोंको अपनाचके किए तकछाते हैं। मान लो, अगर तुम्हारे लोगका न सँभाल पाकर बाबा बोल देते तो क्या होता ?

नयनने कहा—होता और क्या, पोंच-का और भी मरत। उससे नयनके पापका बोला और फितना भारी होता मोंभी ?

दादी चुप हो रही। नयनके इशारेका अब वह जानती थी और जानता था बुर नयन। लेकिन उसने फिर कुछ नहीं कहा। छतरी पर खिर रखकर वृत्ते दादीको प्रणाम करके, पोंचों रुपये मथेस लगाकर वह चुपचाप चला गया।

५—निर्मेय लख

हम लोगोंके घरमें उन दिनों जाड़ा पड़ने लगा था, इसी बीच एकाएक रैब फूट पड़ा। उस जमानेमें रैबके नामसे ही लोग परदा उठते थे। अगर किसी मोहल्लेमें किसीको काका अर्थात् रैब हो जाता था तो यह खबर सुनकर लोग दौलते मारने लगते थे। अगर कोई काकामें भर जाता तो उसे मसानतक पहुँचानेके लिए आदमियोंका मिश्रण मोहल्ले होता था।

चेकिन उस दुर्दिनमें भी हमारी कस्तीमें एक आदमी ऐसे थे, जिनको ऐसे झरोकेमें लासता करनेमें कोई आपत्ति नहीं थी। उन्होंने किसीका मुर्दा उठानेमें कभी आनाकानी नहीं की। उनका नाम था गोपाळ बाबा। उनके बीचतक यह ही मुर्दा मसान पहुँचाना था। मोहल्लेके दोठेमें किसीको कोई कठिन असाध्य बीमारी होती तो वह रोब डाक्टरके घर आकर उसको खर छेदे रहते थे। जब मुन पड़े थे कि जब उसके बचनेकी कोई आशा नहीं है, डाक्टर-बैठने लगा है दे दिया है, तो वह जमा-बो जमा पड़े ही नये पैर, मँयोला कपड़े बाँधे उसके दरवाजेपर पहुँच जाते थे। हम कई जगहों और नवयुवक उनके चेहरे थे। मुँह मारी करके गोपाळ बाबा हम लोगोंसे कह जाते थे—भरे मुनते हो, बाबा पतला कर सज्जम रहना मुझने भाई तो भरपर ही मिटना। 'पञ्चारे अमाने' यह शास्त्रका वाक्य याद है न।

हम लोग कहते—हाँ बाबा याद क्यों नहीं है। आपकी एक आनाज मुनते ही हम लोग बीमोछा केकर हाथिर हो जायेंगे।

बाबा कहते—ठीक-ठीक, वही तो चाहिए माई। इससे बढ़कर पुष्पका काम संसारमें दूसरा नहीं है।

हमारे बच्चे कम्बू भी था। कम्बूको तुम लोग जानने ही हो। ठेकेदारीके किसी कामसे अगर वह बाहर न गया होता था तो वह कभी ऐसे कामोंके लिए ना नहीं करता था।

उस दिन संध्याके समय उधास मुँहसे बाबा ने आकर कहा—विष्णू पण्डित की स्त्री जान पड़ता है, आज नहीं कपेगी।

सुनकर हम लोग चौंक उठे। विष्णू पण्डित बेहद गरीब थे।

स्कूलमें हम बोगीने वं विष्णुपद मर्त्याचार्यसे पढ़ा था। वह सुरु जन्मके रोगी थे और हमेशासे फनीका ही उन्हें छारा और मरोसा था। संसारमें उनका अपना कहनेको और कोई नहीं था। मीने बुनियामें उनके बराबर सीध और अलखान निस्त्रय आवसी और कोई नहीं देखा।

एकदम अन्धकार था ठ पने होये। बापकी चारपाईपर बिछेने लमेठ पण्डितजी फनीको हम लोग घरके मोतरसे निकालकर बाँगनमें छे आये। पण्डितजी महाशय आँखें पड़े रेतुफसे उपर टाक रहे थे। संसारमें और किसी बीजके साथ उस अलखान कसब छिड़ी तुझना नहीं हो सकती। उसे एक बार देखकर फिर जीवनमर भूष नहीं आ सकता।

आप ठठठते समय पण्डित महाशयन पीरिसे कहा—मैं साथ न आऊँगा तो नितानें आप कैन देगा ?

किसीके कुछ कहनेके पछे ही अस्सु कर ठठा—यह काम मैं कर्ना पण्डितजी। आप हम लोगोंके पितातुस्य गुन हैं और इस नातेसे यह मेरी बात है।

हम सब लोग जानत थे कि मशानतक पण्डितजीके छिप पैर वस्त्र अलम्ब है। हमारा स्कूल उनके घरसे पाँच मिनटका रास्ता है। हाँफते हाँफते उनकी दूरतक आनेमें भी उनको आप पछेसे अधिक समय लगाता था।

पण्डितजी का बेरतक चुप रहकर बोले—छे आते समय उनके आधेन करा-या सेंदुर नहीं लगा देगा कसु ?

“असर लगाऊँगा पण्डितजी, असर लगाऊँगा”, कहकर अस्सु एक कबाँगमें फरके भीतर बाकर सेंदुरकी डिब्बी हँक लाया और उसमें कितना सेंदुर था सब पण्डिताइनकी मगमें भर दिया।

‘रामनाम छन है’ कहते हुए हम लोग घरसे पण्डिताइनकी अलख लवाके छिप बाहर छे आये। पण्डितजी खुले दरवाजेके चौखटेपर हाथ रल चुपचाप लद रहे।

गंगाके किनारेका मशान वहाँसे बहुत दूरपर था—आमना तीन कोस होग। वहाँ पहुँचकर हमने अब आशको नीचे रखा सब एतके हो बने होये। अस्सु चारपाईपर गहाण बिने दोनों पैर फैलाकर पैठ गया। कोई-कोई पक्षानसे चूर होनेके कारण इधर-उधर पित होकर छेद रहे। शत्रुपक्षकी आदमीके पत्रमाफी



खिड़ी हुई चोंदनीमें मसानकी बाहू बहुत बूखक पैसी हुई चमक रही थी।  
 वहाँ फिक्कुक सुनसान या आहमीका नाम-निशान भी न था।

गंगाके उस पारसे ठंडी उत्तरकी हवाके धोड़ोंसे जलमें बहरें उठ रही थीं।  
 कोह-कोई कहर कपटके पैरोंसे आकर उड़राती थी।

छहरसे बैक्याड़ीपर पिराके स्थिर ककड़ी आयी है, वह क्या जाने कितनी  
 देरमें कब वहाँ आकर पहुँचेगी। मीकभरके फासकेपर डोमोंके फर हैं। आते  
 समय हम जेय उम्हें पुकार आये हैं। उनके भी जानेमें जाने कितनी  
 देर होगी।

छाया गंगाके उस पारके धित्तिजमें एक यह्य काज बादक उठ्य और  
 ओरदार उत्तरी हवाके संयोगसे वह ठेन्थके साथ पैक्या हुआ आये इस  
 पारकी ओर, बढ़ने लगा। गोबळ पाचाने डरकर कहा—कसब अग्ये नहीं  
 देल पकटे रे! पानी बरसता आन पड़ता है। इस आदेमें अमर पानीमें मीगना  
 पका तो प्राणोंपर बन आवेगी।

पस कहीं बचावकी आह न थी। कोह बढ़ा घना वृक्षक नहीं। कुछ  
 दूरपर ठाकुरबाड़ीके आसके बागमें माकड़ी होपसी ककर है जेफन पानी  
 बरसतेमें उदनी बुर भागकर जाना—चौकना तो रहन नहीं है।

देखते ही देखते आकाशमें घोर मय छा गई। अंधकारमें चोंदनी डूब  
 गई। उस पारसे पानी बरसनेका शब्द कानोंमें पहुँचा—धीरे-धीरे वह निकटसे  
 निकटतर हो उठ्य। पानीकी दस-बीन अगली दूई तीरकी तरफ आकर हम  
 जेनीके ऊपर पड़ी। क्या करें कहाँ जायें, यह सोचते ही सोचते मूठकदार  
 पानी बरसने लगा। मुर्छा आँकल उठी पड़ा रहा। प्राण बचानेके लिए पिससे  
 बिसर बन पड़ा उभर वह पामकनी तरफ भाग कड़ा हुआ। जैन फिर गया  
 कुछ कहा नहीं जा सकता।

पयेपर बाह जब पानी बरसकर यमा बादक निकल गये, तब एक-एक  
 करके सब जेय वहाँ जेड आये। बादक छाफ हो जानेसे दिनके प्रकाशकी  
 तरफ चोंदनी चारों-ओर फैल गई।

हरी बीचमें ककड़ी छेकर बैक्याड़ी भी था गह यो। गाढ़ीमान ककड़ी  
 राहकर्मकी ओर और सब सामग्री उतारकर जेड जानेका उद्योग कर

लेकिन डोमोंका कहीं पता न था। पिता कौन लगाये ?

गोपाल पाचाने कहा—ये साछे ऐसे ही पानी हैं। ज़ादेकी रातोंमें परते निकलते ही नहीं।

इतनेमें मन्नीने कहा—अच्छा, कम्बू कहों गया ? सब ज़ेद भाये, बही नहीं देल पक्या। उसने तो मुकद्दिन होनेको कहा था। डरके भारे कहीं पर तो नहीं भाग गया ?

पाचाने कम्बूसर खप होकर कहा—यह ऐसा ही है। अमर इतना बरता था तो अचसे कमकर बैठा ही क्यों था ? मैं होता तो बाहे तिरके पास गाब तिर पकरी तो भी मुँरेको छोड़कर कहीं नहीं जाता।

मन्नीन पूछा—मुँरेको छोड़कर अन्तसे क्या होता है पाचा ?

पाचाने कहा—क्या होता है, क्या बताऊँ ? न अने क्या-क्या होता है। यह मसान है न। यहाँ भूत-प्रेत हो तो रहते हैं।

मन्नीने कहा—मसानमें अकेले बैठे रहनेमें आपको क्या डर नहीं लगता पाचाजी ?

पाचा बोले—डर ? मुझे ? अन्तसा है, मैंने कयस कम एक हथर मुँरे तो मसान अने और लगये होंगे।

इसपर मन्नी और क्या कहता, चुप हो रहा। सबमुच इस अन्तसे किए पाचाका गर्ब करना ठीक हो था।

मसानमें हो कुद्याकें पड़ी हुई थीं। पाचाने एक कुद्याक अपने हाथमें लेकर कहा—डोमोंकी यह रकनसे नहीं चलेगा। मैं यहा खोदता हूँ, हम लोग हाथेहाथ कम्बुदियों नीचे फिनारेपर से आओ।

पाचा पिताके किए गया खाने अने और हम लोग कम्बुदियों लेकर नीचे जाने लगे।

नेत्रने कहा—अच्छा मार्ग देसा, मुसा पूछकर जेते बूना हो गया है—है न ?

पाचाने किसी तरह देसे बिना ही जवाब दिया—पूछेगा नहीं ? ऊपरका सिराक, नीचेकी कपरी सब तो भीग गये हैं।

नेत्रने कहा—लेकिन कई ता पानीसे भीगनेपर सिमटकर पिचक पकरी है

चाचा फूँसेमी तो नहीं।

चाचा किड़ उठ। बोले—तू क्या बुझिमान है न। जा ओ कर रहा है, वह कर।

छकड़ियों किनारेपर जानकी सोड़ी ही रह गई थी।

नलिनकी नजर कपडेर मुँहकी छात्रपर ही थी। एकएक वह पल्लव-पल्लव ठिठककर बोले—चाचा मुझ अभी कैसे हिल उठा।

चाचा अपने हाथका काम समाप्त कर चुके थे, हाथकी कुचक फँककर बोले—तरे जैसा बरफक आदमी मने कमी नहीं होता नरन। तू इन सब कामोंमें थोड़ा हान आता ही क्यों है? जा चाची छकड़िया स भा, मे पिता कमा है। नया कहोका।

और दो-तीन मिनट बीत। अबकी नलिन पीछे उठकर पंच-साव कम पीछे हटकर लड़ा हाकर उठा हुआ बोले—जा चाचा, कम्पन भण्ड नहीं हल पड़त। वचनुच मुझ हिलपुछ रहा है।

चाचा अबकी हा हा करके ज्वरत हिलत हुए बोले—तुम काम मुझ थपना चाहत हा—बिसन कमसे कम हथार मुझे इन्ही हाथोंसे फँक दिय है, उठ। नलिन कहा—वह दलिय, फिर हिल रहा है।

चाचा न कहा—हाँ हिल रहा है जानता है किसलिए। मूठ हकर मुझ का बचपन दुर्लभ—

उनके मुँहका बात दूरी में न होने पर कि अकस्मात् बिहाक कर कम्पन किया हुआ मुझ मुझ गारके ऊपर उठ बैठा और भयंकर नकली दुर और नकल वगैरों का बचपन निपट उठा—नौ नौ—नौनेको नहीं—कै नौनेकी नौनेकी—

कर बापर 'हम सन्ने एकदम गिरफ पैर रककर भाग रहा हूँ। गाता बचपन के गान्ने छकड़ियोंका देर था, वह उठे बौपते-पुँहल कम्पी प्रणी।' कम्पने मूठ ऊपरकी ओर नहीं भाग सकते थे। मगर बदन टा बचानी। स, सैन कम्पन के नलिन पनीमें पुछ पड़े। उस पौर सन्ने गलेप फर्ने म हाकर वह बिसहाने भगे—बापरे—मैं नर—तू नर एम-एम-एम—

इस वर मृत भी मुँहपरसे बिहाफ हटाकर चिखाने लगा—ओ रे निर्मल ओ रे नैन, ओ रे हीरा मगो नहीं—मैं बख्त हूँ—झूट आओ—झूट आओ।

कस्तूरी बाबाब हमारे कानोंमें पहुँची। अपनी मूलतापर अत्यन्त अभित होकर हम सभी झूट आये। गोपाक पापा बाइसे कौपसे-कौपसे अपमतेसे होकर पानीसे बाहर निकले। कस्तूरीने उनके पैर छूकर कुछ छम्पके साथ कहा—सभी लोग पानीके बरसे मारा गये, लेकिन मैं बाइको छोड़कर नहीं जा सका, इसीसे बिहाफके भीतर फुस गया था।

पापाने कहा—तुम किया भैया अच्छी अहमशी की। अब बाबो अच्छी तरह देखमें गयाकी बाबू भक्तकर स्नान करो। ऐसा रीतान कदम मैं बिन्दगीमें नहीं देखा।

लेकिन पापाने मज-ही-मज कस्तूरीको धमा कर दिया। समझे कि इतना निबर होना उनके लिए भी असम्भव है। ऐसी ममानक रातमें अकेले मदानमें काकराका मुदा और ठसका गन्ध बिछोना, किसीसे कस्तूरी नहीं डर—किसी चीकसे ठसका दि० नहीं रहता। वह क्या कम साहसकी बात थी।

जब लोगोंने चितामें आग देनेके लिए कस्तूरीका नाम किया तब गोपाक पापाने घोर आपाच करके कहा—ना यह न होगा। कस्तूरी मैं यह सुन पकेगी वो वह फिर मेरा मुँह नहीं देखेगी।

कमस कम सी गई। हम लोग राँयामें स्नान करके पर झोटे, उस समय सुबोदय हो रहा था।

## ६—देवघरकी यादगार

आकरके कहनेसे हवा बदलनेके लिए मैं देवघर आया था। आते समय रमिशाबूझी वह कविता बार-बार याद आई थी, जिसका मतलब यह है कि “रघु और आकर, दोनोंन मिलकर जब हड्डियाँ ही हड्डियाँ घरीरमें रखने लीं, और वे भी बजर हो गई, तब आकरने हुकम दिया कि हवा बदलने किसी अच्छी जगह जाओ। तब हुमा यह कि व्यापित बदकर आधि हो गई।”

हवा बदलनेसे साधारणतः कितना काम होता है इसे लोग जानते हैं फिर भी हवा बदलने आते ही हैं। मैं भी आया। पहाड़ीपारीसे घिरे हुए

बागके मीठर बने हुए बड़ेसे परमे खड़ा हूँ। रात तीन बजेसे पाठ ही करी एक आदमी पूरे शस्त्र जैसे बेसुरे गंभीरे मञ्जन गाना शुरू कर देता है। मेरी नींद कुछ जाती है। खाम्मा जोछकर बरामदेमें आकर बैठ जाता हूँ। धीरे धीरे रात समाप्त होने लगती है—चिड़ियोंका आना-जाना और चहचहाना शुरू हो जाता है।

मैं देखता था, उन चिड़ियोंमें सबसे पहले बहुत बड़की रोयल उठती है। भैंसेय मायब होने की नहीं पाता छत्रपुटेमें ही उन चिड़ियोंका गाना शुरू हो जाता है। इसके बाद एक-एक करके कुटकुट, स्पामा, चाबिल और टुनटुनी नामकी चिड़िया आती हैं। पासके परमे जो आमका पेड़ था उसमें, मेरे घरके कुटुब कुंजम सड़क-किनारेके पीपलकी खोटीर, वे सब चिड़िया जमा होती थीं। सबको मैं आँखोंसे देख नहीं पाता था लेकिन हर रोज़ बोली सुनते-सुनते ऐसा जमगाव हो गया जैसे उनमेंसे हर एक चिड़िया मेरी पक्ष्यानी हुई है।

धीरे रयकी बन-बहू नामकी चिड़ियाका एक छोड़ा बग़ रेर करके आता था। तीबारेके किनारे मूट्टिप्यठ नामके पिछायकी बूझकी सबसे ऊँची टाकपर बैठकर वह छोड़ा नित्य गाँवता और अपनी हाकिरी दे खँटा था। एकाएक ऐसा हुआ कि न जाने क्यों वह छोड़ा दो दिनतक नहीं आया। यह देखकर मैं व्यस्त हो उठा। मनमें सोचने लगा—किसीन उन्हें पकड़ लो नहीं किया। इस तरह बोरैकियोंकी—चिड़ीमारोंकी कमी नहीं है। चिड़ियोंको पकड़कर बाहर भेजना ही इन चिड़ीमारोंकी खीबिका है। लेकिन तीन दिनके बाद चौबे दिन फिर वह छोड़ा आया। उसे देखकर ज्ञान पड़ा, जैसे सबकुछ एक भारी चिन्ता दूर हो गई।

इसी तरह सन्नेका समय करता है। तीसरे पहर प्यारके बाहर सड़कके किनारे आकर बैठता हूँ। बूझने-खोजनेकी शक्ति अपनेमें न थी किन्तु धीरे धीरे उसकी धार एकटक ताका करता हूँ। देखता था, मय्यपिच या मय्यकनाके ग्रास्योंके घरके जो रोमी यहाँ थे, उनमें चिड़ियोंकी ही संख्या अधिक है।

परछे ही कुछ कमसिन कड़कियाँ जाती नजर आती थीं, जिनके पैर पूंछ पूंछे थे। मैं समझ गया, इन्हें बेचे-बेरी नामका रोग है। पैरोंकी छिपानके लिए—एक कुकामताकी जगह को उड़नेके लिए बेपारी

फरती थी। वे मोठा पहन्नेके दिन नहीं थे, गर्मी पड़ने लगी थी ठह भी मैं देखता था कोइ-कोई लूब कसे मोठे पहने रहती थी। किसीका देखता था, उसकी खाड़ी इतनी नीची है कि जमीनमें छोट रही है। यद्यपि इससे पहनेमें थापा पड़ती थी, तो मो वे अपने पैरोंके ऐबको कीचड़की जोगीकी नजरोंसे छिपा रहता चाहती है।

और सबसे बढ़कर मुझ मुख होता था एक गरीब घरकी औरतको देखकर। वह अकेली ही जाती थी। उसके साथ न कोई आत्मीय-स्वजन होता था न कोई सखी-सहेली। सिर्फ तीन छोटे-छोटे बच्ची-बच्ची रहते थे। अवस्था उसकी व्यन पड़ता है यही चोरीच-पचाव बपकी होयी किन्तु उसकी वेष्ट जैसे पुककी और टूटी हुई थी जैसे ही मुँह पीछा-पीछा था उसमें जैसे एक सूँद भी रह न था। अपने घरीरका बोझ समाककर पहनेकी छाति उसमें नहीं थी ता भी सबसे छोटे बच्चेको वह गोदमें बिने रहती थी। वह बच्चा अपने पैरोंसे पक नहीं सकता था लेकिन उसे वह घरमें भी लाकर खेड़ नहीं आ सकती थी। उस औरतकी दृष्टि न जाने कैसी चीन और पकी हुई थी। व्यन पड़ता था मुझे देखकर उसे जैसे जमा आठी है। किसी तरह उस स्थानको चढ़कर खँबकर वह वस्ती आना चाहती थी। पड़े-मैठे कुठें और पाँतीसे तीनों बच्चोंको किसी तरह ढाँक-ढूँककर नित्य वह इसी राहसे जाती थी। शायद उसने साचा होगा कि किसी उपायसे—इला-वाकसे जो नहीं हुआ वह इस संयाक परगनेके स्वात्म ठीक करनेवाले जल-बाधुमें, इस अत्यन्त कष्टायक टाकनेसे ही प्राप्त कर लगी—उसकी तन्हुच्छी फिर ठीक हो जायगी वह आराय हो जायगी। रोगसे घुटघरा पाकर उसकी लाकठ फिर खीठ जायगी— फिर वह अपने बच्चोंकी, पतिकी सेवा करके संसारमें अपने नारी-जीवनको सफ़ल-सार्थक बना सकेगी।

मैं बैठा-बीठा अपने मनमें लानता था कि इसकी पिता उसकी और क्या कामना हो सकती है। वह भारतकी नारी है उसे इससे अधिक पानेकी बात कब किसीने सिखाई है। मैं मन-ही-मन उसे आशीर्वाद देता था कि वह आरोग्य हाकर अपने घर लौट जा सके—जिन तीनों बच्चोंने उसकी सारी जीवनी-शक्ति भूत थी है उन्हींको पाकपोसकर मनुष्य बनानेका अवसर

पाये। यह किसकी छड़की है, किसकी की है, उसका पर क्या है, यह कुछ मैं नहीं जानता। सारे मास्तकी असंख्य गारियोंकी प्रतीक होकर यह जैसे मेरे मनके भीतर एक अमित गहरी छड़ीर-सी डर गई, जो सचमें मिटनेवाली नहीं।

मेरे साथ यहाँ एक नज्जवान मित्र आया था। उसकी सेवा निःस्वार्थ थी। कंकड़सेमें जब मैं बहुत बीमार था, उस उसने जैसे मन लगाकर मेरी सेवा की थी बैठे ही वहाँ भी मैंने उसे अपनी सेवा करते पाया। बीच-बीचमें वह कहता था—बर्दिए बाबा, आब क्या टहल आवैं। मैं कहता था—तुम आओ माह, मैं यहाँ बैठकर वह काम पूरा कर दूँगा। उस वह अचानक होकर कहा था कि आपसे भी अधिक बूढ़े कितने ही लोग यहाँ टहलते-धूमते हैं। अगर बुढ़िये फिरियेय नहीं तो मूल कैसे खोली? इसपर मैं कहा था कि मूल क्या ब्यानेसर भी काम कर आया। लेकिन बेकार राह-राह, मारे-मारे फिरना मुझसे न हो सकेगा।

वह जरा होकर अकेले ही घूमने पसंद जाता था। लेकिन आते समय मुझे सावधान कर देता था कि देखिये, धीरेमें पर न खींचियेगा। नौकर को पुकार कर बसने जानेके लिए कह दीजियेगा। इसपर करते खौफ कुछ अधिक होते हैं। यों वे किसीसे नहीं बोझते लेकिन अपने अमर किसीका पैर पड़ना ब फलन नहीं करते।

उस दिन मेरे मित्र घूमने गये थे। संध्या होनेमें अभी देर थी। मैंने देखा, वह बूढ़े आदमी मूल पैरा करनेके कर्तव्यको पूरा करके शक्तिमत् सेब पालतें अपने डेरोंको नीट रहे थे। सम्भवतः वे बात-व्यापिके रोगी थे, इसी कारण संध्यासे पहले ही इनको परके भीतर पहुँच जानकी जरूरत है।

उनका बचना देखकर मुझे मरोसा हुआ कि मैं भी कुछ दूर टहल सकता हूँ। मैंने सोचा नहीं, मैं भी क्या मोड़ी दूर घूम आऊँ। उस दिन एहमें बहुत वृत्तक घूम। अंधकार हो आया। सोचा मैं अकेला हूँ; मगर एकएक पी

१ करत बिचपर काय बाग होता है। उसका काय हुआ  
बचता।—अमुकबक

मूसकर देखा एक कुत्ता मेरे पीछे आ रहा था ।

मैंने उससे कहा—क्यों रे, मेरे साथ चलेगा ? लौंघेरी राहमें भटक पहुँचा देगा !

वह दूरपर खड़ा होकर मुझ दिक्काने लगा ।

मैं समझ गया कि वह राखी है । मैंने कहा—तो फिर मेरे साथ आ ।

उधरकई दिनारे एक ब्यास्टेनकी रोडनीमें मैंने देखा, कुत्ता स्याना था । रोगके कारण पीठपरके रोएँ सड़ गये थे । जरा झेंगाड़ाकर लड़ता था ।

एकदिन जब बरान होया तब उसमें काफ़ी साफ़त होगी यह स्पष्ट जान पड़ा । उससे तरह-तरहके अनेक उपास करते-करते मैं अपने डरेके सामने आ पहुँचा । घाटक लोखकर मैंने उसे भीतर बुझाया । मैंने कहा—आ मीठर आ । आज तू मेरा बलिधि है ।

कुत्ता बाहर ही लड़े-लड़े पूँछ दिक्कता खा, किसी तरह भीतर कुत्तनकी हिम्मत न कर सका ।

इतनेमें बास्टेन लेकर नीकर आया । उसने घाटक बन्द करना चाहा । मैंने कहा—बन्द न करो कुत्ता ही खाने दो । अगर वह कुत्ता मीठर आवे तो इत खानेको दे देना ।

अगला एक पक्षके बाद मैंने खबर लेकर जाना कि वह नहीं आया, कहीं मर गया ।

दूसरे दिन उसके बाहर आते ही मैंने देखा, मेरा कळकळ बलिधि घाटकके बाहर लड़ा है । मैंने कहा—कळ मने तुझे खानेका न्योता दिया था तू आया क्यों नहीं !

इसके अन्धकमें मेरा मुँह ठाकठा हुआ वह उसी तरह पूँछ दिक्कने लगा । मैंने कहा—आज तू खाकर जाना बिना खाने न जाना । समझ !

इसके उत्तरमें उसने ओर ओरत पूँछ दिक्कई । घायल उसका मतलब यह था कि सच कह रहा हूँ न ?

रातको नीकरने आकर बतलाया कि वही कुत्ता आकर आज बाहरके बरामदेके नीच धौंसनग बीठा है । रठाइया ब्राह्मणको बुलाकर मैंने कह दिया कि यह कुत्ता मेरा बलिधि है। उसे पेटभर खानेको देना ।



दूसरे दिन खबर पढ़ कि मेरा अतिथि फिर नहीं गया। मेहमानदारीकी मर्यादाके लिबाफ यह आरामसे निरपेक्ष होकर बरक हुआ है। मैंने कहा—  
कैर, होगा तुम उसे खानेके लिए रैना।

मैं अनजान था कि रोब बहुत-सी खानेकी सामग्री फेंक दी जाती है, इसलिये कुत्तेको खिलानेमें किसीको आपत्ति न होगी। लेकिन आपत्ति थी और बहुत बड़ी आपत्ति थी। हमारी रतोरोंकी बचतका अधिकतर हिस्सा इस बागके माछरकी छींक केमें जाता था परन्तु मुझे यह माछम न था। माछिन कमरिन की हेराने-मुन्नेमें भी अच्छी थी। साथ ही खानेमें उसे कोई विशेष विचार न था। नौकरोंको उसीके साथ पूरी सहायभूति थी। इसलिये मेरे अतिथिको रोब उपवास करना पड़ता था।

तीसरे पहर मैं खड़कके किनारे जाकर बैठा। रैना मेरा अतिथि पहलेसे ही आकर वहाँ कमीनपर बैठा है। यही नियम निश्चय हो गया। जब मैं उठने जाता हूँ वह मेरे साथ-साथ जाता था। मैं पूछता—तुं रे अतिथि, आज मीठ कैसा पका था ? हम चवानेमें कैसा स्वाद आया ?

वह पूछ हिम्मतकर अनाथ होता। मैं समझता कि मांस उसे बहुत अच्छा लया। मैं यह नहीं जानता था कि माछिनन मारकर उसका बाहर निकल दिया है। वह बागके भीतर घुसने ही नहीं देती। इसीसे वह कुत्ता घरके सामने खड़क-पर बैठा रहता है। मेरे नौकरोंकी भी इसमें खासिय थी।

एकएक मेरी दलीलत खराब हो गई, वो दिनतक मैं खरस नीचे उतरकर नहीं आ सका। दोपहरके समय उसके कमरमें बिछोनेपर पड़-पड़े अस्वभाव पड़कर समस्त किया था और खुकी हुई खिड़कीसे बाहरके यूँसे लगे हुए नीले आकाशकी ओर अनमना होकर मनमें यह सोच रहा था कि कपड़ेके वो पड़े या महन्त हैं उनको मन्गी होनेकी कैसी उत्कट आकांक्षा है, कैसी पद-बोद्धता है, अथवा निःसुहृदके आचरणमें उसे खिलानेके लिए चिठने कोशकसे काम लेते हैं। किन्हींने कानून बना दिया एक नहीं सुनी, उन्हींके साथ कानूनकी व्याख्या को ठेकर कैसी लपट, कैसी बग़ाई ठाने हुए हैं। यह बात निःसन्देह प्रमाणित कर देना चाहते हैं ये कप्रेसी कि कानूनके पिछवाभोंका इरादा अच्छा नहीं है। निहम्ना और किसे कहते हैं !

सरसा खुले हुए दरवाजेसे कमरेके फर्शपर कुत्तेकी परछाहीं देख पड़ी। मुँह बड़ाकर रसा भविषि सामने खड़ा पूछ हिंसा रहा है। खोपड़ेके सम्म सन नैकर छो रहे हैं, उनकी कोठरियाँ बन्द हैं। इसी सुबोममें छिपकर वह एकदम में कमरेके सामने धाकर हाजिर है। मैंने सोचा, वो दिनसे मुझे नहीं देखा, इसीस घाबरा मुझे देखनेके छिप आया है।

मैंने पुकारा—आओ भविषि, भीतर आना।

वह नहीं आया, वही खड़ा-खड़ा पूछ हिंसा ने क्या।

मैंने पूछा—सा सुझा रे! आज क्या खाया।

एकएक ध्यान पड़ा कि उसकी दोनों आँखें जैसे गीली हा रही हैं, वह जैसे एकस्तरमें मेरे आगे कुछ नाशिर करना चाहता है। नौकरोंको मैंने पुकारा। उनके दरवाजा खोलनेका शब्द होते ही भविषि वहाँसे भाग खड़ा हुआ।

मैंने नौकरसे पूछा—हाँ रे, आज कुत्तेको खानेके छिप कुछ दिया है।

उसने कहा—जी नहीं। माझिने उसे मारकर मया दिया था।

मैंने कहा—आज तो बहुत-सा खानेका सामान क्या था। वह सन क्या हुआ।

नौकरने कहा—माझिन सन उठ्य बं गई।

इंगामा सुनकर मेरे मित्रकी नींद टूट गई। वह आँखें रामते-रामते कमरेके भीतर आये और जरा मुस्कराकर बोले—बाबाकी बातें निरासी होती हैं। आदमियोंका तो खानेको नहीं मिथ्या और आप एहके कुत्तेको कुझकर लिखते हैं। खूब।

मेरे मित्र जानते हैं कि इससे बढ़कर अकारण मुक्ति और नहीं हो सकती। मनुष्यको न देकर कुत्तेको देना—अन्धेर ही तो है।

सुनकर मैं चुप हो रहा। संसारमें किसका बाबा किसके खर आकर पहुँचता है वह मैं इन लोगोंका कैसे समझता।

ऐर, वह बाहे जो हो फिर भविषिका बुझकर बाबा गया, फिर उसन परामदेके नीचे आँगनकी धूम्रमें परम निश्चित मनसे अपने छिप जगह कर की। अब उसका माझिनसे दर बज गया है। दिन बह गया तीसरे पहर मैं

उमरके बराम्भेसे देखा अतिथि इसी तरफ देखता हुआ पकनेके लिए तैयार खड़ा है। मेरे टूटने जानेका समय हो गया था न।

मेरा शरीर सम्भ्रम नहीं हुआ। आराम्य न होनेपर भी बेवफासे बिना होनेका दिन आ गया। तो मी तरह-तरहके बहाने करके दो दिन और बका रहा।

आज ज़ेरेसे सामान बेचना शुरू हो गया—बोखरकी गाड़ीसे जाना है। पटरके बाहर गाड़ियों आकर खड़ी हुई, उनपर सामान बरदा जाने लगा।

अतिथि बहुत व्यस्त था—कुर्कियोंके साथ बराबर बीककर, भीतर-बाहर आ-आकर चौकसी करने लगा, जैसे वह देख-भाल रहा हो कि कहीं कुछ लो न आव, छूट न आव। सबसे अधिक उल्लाह उरीमें नजर आ रहा था।

एक-एक करके गाड़ियों स्टेशनको चक रहीं मेरी गाड़ी भी चकने लगी। स्टेशन बहुत दूर न था। वहाँ पहुँचकर उतरने लगा तो देखा, मेरा अतिथि सामने खड़ा है।

मैंने कहा—क्यों है, तू यहाँ भी आ गया ?

उसने पूँछ दिखाकर इस प्रश्नका उत्तर दिया—क्या जानें, उसके क्या मान थे।

टिकट खरीदे गये। माऊ-अम्मावकी ठीक हो गई।

मिचने आकर सबर ही कि ट्रेनके छूटनेमें बस दो ही एक मिनटकी देर है।

साथमें वो काँय सभार करने आये थे, उन सबको मैंने बखशीश-इत्यादि दिया। कुछ पाया नहीं तो केवल मेरे अतिथिने।

गर्म हवामें धूँक उड़कर सामने फेंकी छह छा गई। जानेके पहले उसी पहरके भीतरसे मैंने आस्था देखा—स्टेशनके पटरके बाहर मेरा अतिथि खड़ा एकटक मेरी ओर ताक रहा है। जेन सीटी देकर चक सी।

पर बीटनेका आवाह या उल्लाह मुझे अपने मनके भीतर कहीं दूँ नही मिश्र। केवल यही खयाल माने लगा कि मेरा अतिथि आज स्टेशन देखे कि परब्र छोड़का पटरक बन्द है—उसके भीतर जानेका कोई

शायद रास्तेमें खड़े होकर बीस-तीन दिन मेरी राह देखेगा—शायद लघाटेकी रोपड़ीमें किसी समय फाटक खुल पाकर चुपचाप छिपकर ऊपर बढ़ जाएगा और मेरे रहनेके कमरेको लोभेगा । मुझे न पकर फिर पहका कुत्ता राहमें ही आभय ग्रहण करेगा ।

शायद उससे अधिक दुःख थीव उस शहरमें बसना नहीं है तो भी यह देवपरमें रहनेकी बाह्यार उस कुत्तेको बाह करके ही भाव में छिपकर छोड़े जाता हूँ ।

---

